॥ श्रीः ॥

सर्वतोभद्रचक्रम् ।

त्रैलोक्यदीपकं भाषाविवृतिव्याख्यासहितम् ।

प्राचीन ज्योतिःशास्त्रश्रमी, दैवज्ञभूषण ज्योती-
रत्न पं. **मीठालालजी व्यास** कृतम् ।

**हरिप्रसाद भागीरथ लिमिटेड
बम्बईने**
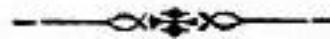
खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"**श्रीवेङ्कटेश्वर**" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई द्वारा

छपवाकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९९६, शके १८६१, सन्. १९४०

प्रकाशक-

हरिप्रसाद भागीरथ लिमिटेड,

बम्बई.

मुद्रक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस

बम्बई.

ॐ

भूमिका ।

सर्व विद्वान् व अविद्वान् इसबातको निस्संदेह स्वीकार करते हैं कि विद्याके जैसे और अंश हैं वैसा ज्योतिःशास्त्र भी एक अंश है । इस विषयमें कई एक विज्ञानवान् जो ज्योतिषके गणित अंशमें रमे हैं वह गणितको प्रधान मानते हैं, अन्य फलादेशको अप्रधान व असत्य मानते हैं; परन्तु जो दैवज्ञ फलादेशमें रमे हैं वह फलादेशको प्रधान और गणित को उसका उपयोगी साधन व अप्रधान मानते हैं, क्योंकि गणित के द्वारा तो प्रत्यक्षके पदार्थोंका ही ज्ञान होता है, किन्तु फलितके द्वारा परोक्षके पदार्थोंका भी ज्ञान हो जाता है । पर इस समय गणितके माननेवाले जैसे गणितके अंशको निर्विवाद सिद्ध कर दिखाते हैं,ऐसे फलित अंशको सांगोपांग दिखलानेवाले बहुत थोडे विद्वान् मिलते हैं,

जिसका कारण यह है कि इस देशके अभाग्यसे आधुनिक विद्वानोंने ज्योतिषका मुख्य तत्त्व जो गुरु-परम्परासे प्राप्त होने योग्य था सो अपने पुत्र तकको नहीं बतलाया, तथा इस विद्याके विद्वानोंको राजा महाराजाओंसे आश्रय नहीं मिलनेसे उन्होंने भी उस तत्त्वको ग्रहण करनेमें श्रद्धासे परिश्रम करना छोड़ दिया इसीसे इस समयके ज्योतिषियोंकी कही हुई फलादेश की विधि यथावत् नहीं मिलती है; इससे उसमें सर्वदा लोग मूर्च्छित रहते हैं और कह देते हैं कि—यह अंश झूँठा है। विचारका स्थल है कि—जिस तत्त्वको बड़े बड़े ऋषि महर्षियोंने कहा है तथा जिसके द्वारा पूर्वाचार्य सम्पूर्ण जगत्का भावीफल (अर्थात् शुभ-अशुभ लाभ-हानि, सुख-दुःख, जीवन-मरण, यश-अपयश; राजाओंके परस्पर शांति-युद्ध, संधि-विग्रह, जय-पराजय, वृष्टि-अनावृष्टि, सुभिक्ष-दुर्भिक्ष, समर्घ (मन्दी), महर्घ (तेजी) कौनसे देशमें, कौनसे प्रान्तमें, कौनसे नगरमें तथा कौनसे वर्षमें, कौनसे मासमें,

कौनसे दिनमें, किस वस्तुकी अर्थात् धातुमें सुवर्ण, रूपा, तांबा आदि । जीवमें—हाथी, घोडा, गाय, बैल, घृत, कस्तूरी आदि । मूलमें—अफीम, कपास, रूई, धान्य, तेल, गुडादिकी कितनी २ मन्दी और कितनी २ तेजी किस प्रकारसे होवेगी इत्यादि अनेक विषयोंका निर्णय करके पहिलेसे कह देते थे; इसीसे वे लोग दैवकी गतिको जाननेवाले दैवज्ञ कहलाते थे । और, इस समय भी इसकी सत्यताके अनेक उदाहरण मिलते हैं, जैसे सं० १९५६ के वर्षमें ७ ग्रहोंके योगका फल पहिलेसे विद्वानोंने प्रकाशित किया था वैसा ही सबको अनुभव हो गया तथा प्रत्यक्षमें भी देखनेमें आता है कि जो लोग इसको नहीं मानते उनको भी समय पडने पर इसका आश्रय लेना ही पडता है । फिर सहसा (हठसे) उसको झूठ बतलाना कैसी भूल है ? अतः जो लोग ज्योतिषशास्त्रके फलितके लिये खिन्न व संशययुक्त हैं उन भाइयोंके लिये आज हम ज्योतिषके फलितकी सत्यता दिखलानेको छोटासा चुटकला जो

आश्चर्यरूप ज्योतिषशास्त्रके गौरवको प्रकट करता है उस सर्वतोभद्रचक्रको जो त्रैलोक्यदीपक नामसे प्रसिद्ध है और यथार्थमें अपने नामके अनुकूल तीनों लोकोंके गूढ विषयोंको जतलानेके लिये दीपक ही प्रकट करते हैं उस सर्वतोभद्रचक्रको श्रीशिवजीने ब्रह्मयामलग्रन्थमें वर्णन किया है, उसके सारांशको पं० नरपतिने अपने बनाये हुए ' नरपति-जयचर्या' नामक ग्रन्थमें कहा है उसमेंके तो सम्पूर्ण श्लोक तथा उसके अर्थको स्पष्ट करनेवाले अन्य ग्रन्थोंके श्लोक मैंने जो गुरुमुखसे श्रवण कर उनमेंसे पाठकोंके लाभदायक हों उतने सारभूत उपयोगी श्लोक सरल आर्यभाषामें विवरण करके दिखाये हैं, जिससे ज्योतिषके चमत्कारका नमूना मालूम होगा और अनुभव करनेसे प्रतीत होगा कि–ज्योतिषशास्त्र उन पदार्थोंको हस्तामलकवत् प्रकाशित करता है जो परोक्षमें हुए हों । इस सर्वतोभद्रचक्रके तत्त्वको पूरा लिखना महाकठिन है, तो भी जितना कलममें प्रकाश किया जा सकता है उतना मैंने बुद्धि

के अनुसार प्रकाश किया है। आशा है कि इतनेको भी श्रद्धावान् विचारेंगे तो बहुत तत्त्व पावेंगे।

आप लोगोंको यह भी ज्ञात हो कि हमारे पूर्वजोंकी तथा हमारी ... जीविका ज्योतिष आदिसे नहीं है; किन्तु व्यापार आदिसे है। तथापि हमारे घरमें परमार्थसे ज्योतिष और वैद्यक विद्याका अभ्यास पहिलेसे चला आता है तदनुसार हमारे लघुभ्राता पूर्णचंद्र ने तो आयुर्वेदमें अधिक श्रम करके उसमें अपनी योग्यता प्राप्त की और मेरा पूर्ण प्रेम ज्योतिष विद्या पर होनेसे ज्योतिषके प्राचीन शास्त्रोंका सारभूत एक ग्रन्थ मैंने संग्रह किया है जिसका नाम बृहदर्घमार्तंड रक्खा है। उसमें अनुमानतः १० सहस्रसे अधिक श्लोक होंगे जिसके नमूनेमें यह सर्वतोभद्रचक्र एक अंक आप लोगोंके दृष्टिगोचर करनेमें आता है। सो ईशकृपासे लोकप्रिय हो जाय और आप लोगोंकी इच्छा उस महान् ग्रन्थको देखनेकी हो तो उसके दूसरे

भी अंक यथावकाश क्रम-क्रमसे प्रकाश करनेकी आर्यलोकोंकी सेवा करनेमें मैं तत्पर हूँ।

इस ग्रन्थकी भाषा आदिके शोधनेमें हमारे परम-प्रिय श्रीमान् मेहेता चिमनसिंहजी आदि जिन महाशयोंने सहायता दी है उन सबको मैं धन्यवाद देता हूँ।

प्राचीन ज्योतिःशास्त्रश्रमी

सं० १९६० मार्गशीर्ष वदि १ } **पंडित मीठालाल व्यास**
पाली-मारवाड़

(ज्योतिषकी शतरंज का खेल)

अर्थात्

सर्वतोभद्रचक्र में वेध देखने की सरल युक्ति ।

जैसे युद्धादिका कल्पित हाल जाननेके लिये विद्वानोंने खेलकी शतरंज रची है वैसेही सम्पूर्ण जगतका सच्चा हाल जाननेके लिये त्रिकालदर्शी महर्षियोंने आकाशस्थ तारामण्डलके अनुसार ८१ कोठोंकी ज्योतिषकी शतरंज रची है। खेलकी शतरंजमें तो बादशाह को वजीर, हाथी, घोड़ा, ऊंट और प्यादोंकी गति (चाल) के अनुसार वेध (किस्त) आनेसे हार जीत होती है, परन्तु इस ज्योतिषकी शतरंजमें ३३ अक्षर, १६ स्वर १५ तिथि, ७ वार, २८ नक्षत्र और १२ राशियोंको सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और राहु तथा केतुकी गति (चाल) वशसे दृष्टिके अनुसार वेध (किस्त) आनेसे उन अक्षरादिके नामवालोंकी हानि वृद्धि होती है।

इस शतरंजरूपी चक्रमें सूर्यादि ग्रहोंका वेध तथा फल जाननेके लिये सम्पूर्ण विधि इस पुस्तकमें बहुत विस्तारसे लिखी है, तथापि सर्वसाधारणको भी विना गुरुके वेधज्ञानका स्पष्ट बोध होजानेके लिये वेध देखनेकी सरल युक्ति उदाहरण रूप यहां पर लिख देता हूँ।

(१) पुस्तकमें लिखे अनुसार चक्रको कागज आदिके मोटे तख्ते पर लिख लें।

(२) चक्रमें अक्षर, स्वर, तिथि, नक्षत्र और राशियाँ—पांच हैं। अतः इनकी ५ काल्पित मूर्तियाँ काष्ठादिकी शतरंजके प्यादे जैसी बना लें।

(३) सूर्यादि नव ग्रहोंकी भी ९ मूर्तियाँ काष्ठादिकी शतरंजके वजीर जैसी बना लें और पहिचाननेके लिये उनको जुदे-जुदे रंगोंसे रंगलें, अर्थात् सूर्यको लाल, चन्द्रको श्वेत और शिर पर कुछ कृष्ण, मंगलको गहरा लाल व गुलाबी, बुधको हरा, बृहस्पतिको पीला, शुक्रको श्वेत शनिको कृष्ण, राहुको आसमानी और केतुको बैंगनी, रंग लें।

(४) मनुष्य, पशु, पक्षी, देश, ग्राम आदिमेंसे जिस किसीका शुभाशुभ देखना हो अथवा खरीदने बेचनेकी सम्पूर्ण वस्तुओंमेंसे जिस किसी वस्तुकी हानि-वृद्धि (तेजी मन्दी) देखनी हो उसका जन्मनाम विदित हो तब तो जन्म नामका नहीं तो प्रसिद्ध नामका प्रथम अक्षर, उस अक्षरका जो नक्षत्र हो वह नक्षत्र, तथा जो राशि हो वह राशि और पुस्तकमें लिखे हुए स्वरवर्णचक्रमें अकारादि पाँच स्वरोंमें से उस अक्षरका जो स्वर हो वह स्वर तथा वर्ण, तिथि चक्रमें नन्दादि पाँच तिथियोंमेंसे उस अक्षरकी जो तिथि हो वह तिथि——ये पाँचों सर्वतोभद्रचक्रमें जिन कोठोंमें लिखे हों उन पाँच कोठोंमें अक्षरादिकी ५ कल्पित मूर्तियाँ रख दें। ऐसी मूर्तियाँ रखनेसे फिर इन्हीं पाँच कोठोंपर किसी ग्रहका वेध है व नहीं सो यह स्पष्ट देखनेमें आजावेगा।

(५) वेध देखनेके समय सूर्यादि ग्रहपञ्चाङ्गमें जिस जिस नक्षत्र पर हों इस चक्रमें भी उसी-उसी नक्षत्र पर ग्रहोंकी कल्पित मूर्तियाँ रखदें। ऐसी मूर्तियाँ रखने

से उस नक्षत्र स्थानसे किस ग्रहका किस ओरके अक्ष-रादिको वेध है और किस ओरके अक्षरादिको वेध नहीं है सो बहुत स्पष्ट जाना जासकेगा ।

(६) जिस नक्षत्र पर ग्रह रक्खा हो उस नक्षत्र स्थानसे तीन ओरको वेध होता है, परन्तु मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र शनि—ये पाँच ग्रह कभी वक्री कभी शीघ्रगामी और कभी मध्यचारी होते हैं । अतः वेध देखनेके समय इन ५ मेंसे जो ग्रह वक्री होगा उसका तो वेध दाहिनी ओरको, जो ग्रह शीघ्रगामी होगा उसका वेध बाईं ओरको और जो ग्रह मध्यगामी होगा उसका वेध सामनेको होगा ।

(७) राहु तथा केतु सदाही वक्री और सूर्य तथा चन्द्र सदाही शीघ्रगामी होनेसे इन ४ ग्रहोंका वेध सदा तीनोंही ओरको एकसा होता है ।

(८) दाहिनी ओरके वेधसे तथा बाईं ओरके वेध से तो जो अक्षरादि वेधकी सीधमें (लाइन में) आवेंगे उन सभीको वेध हो जाता है, परंतु सामनेके वेधसे

केवल सामनेके एक नक्षत्रको ही वेध होता है अर्थात बीचमेंके किसी अक्षरादिको वेध नहीं होता ।

(९) मनुष्यादिमेंसे जिसके अक्षरादिको शुभ ग्रहका वेध होगा उसको शुभ फल और जिसके अक्षरादिको अशुभ ग्रहका वेध होगा उसको अशुभ फल होगा । ऐसेही खरीदने बेचनेकी वस्तुओंमेंसे जिसके अक्षरादिको शुभ ग्रहका वेध होगा उसकी वृद्धि तथा भावभी मन्दा और जिसके अक्षरादिको अशुभ ग्रहका वेध होगा उसकी हानि तथा भावभी तेज हो जावेगा ।

(१०) चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये ४ ग्रह शुभ और सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु—ये ५ ग्रह अशुभ हैं परंतु चन्द्रमा तो क्षीण हो जानेसे और बुध अशुभ ग्रहके साथ होनेसे—यह दो शुभ ग्रहभी अशुभ हो जाते हैं ॥

हमारे यहाँसे ग्रन्थ प्रकाशित करनेका कारण ।

इस साम्प्रतकालमें विना द्रव्यके मनुष्योंका जीना ही वृथासा हो गया है । और द्रव्य-प्राप्तिका मुख्य साधन एक व्यापार ही होनेसे भूमण्डल भरके सभी

लोग व्यापारमें लगकर एक दूसरेसे चढ़ाबढ़ी कर रहे हैं। परन्तु व्यापार बिना भविष्य अर्घ्यज्ञानके पूर्ण लाभ-दायक नहीं हो सकता; क्योंकि केवल मनुष्योंकी तर्क बुद्धिके आधार पर किया हुआ विचार तभी तक ठीक निकलता है कि कोई दैवी कारणोंकी बाधा बीचमें न आपड़े।

यद्यपि महर्षियोंने भविष्य अर्घ्यज्ञानके कई उपाय बतलाये थे, परन्तु पहिले समयमें व्यापारकी इतनी वृद्धि नहीं हुई थी इसलिये व्यापारियोंके उपयोगी सम्पूर्ण वस्तुओंकी तेजी मन्दी बतलानेके लिये कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं रचा गया था परन्तु इस समयमें ऐसे ग्रन्थकी अत्यन्त आवश्यकता देखकर मैंने कई वर्षोंके अत्यंत परिश्रम द्वारा अनेक प्राचीन ग्रन्थोंका साररूप "बृहद्-दर्घ्यमार्तण्ड" नामक एक महान् ग्रन्थका संग्रह कर्के सर्वसाधारणको लाभ पहुँचानेके लिये सरल हिन्दी भाषाटीका सहित उस ग्रन्थको अंक अंकरूपसे प्रकाशित करना प्रारंभ कर दिया है। उनमें यह 'सर्वतोभद्रचक्र' पहिला अंक है। इसी प्रकार वृष्टि प्रबोध, भारतका

वायुशास्त्र, संक्रातिप्रकाश, ग्रहणफलदर्पण आदि अंक प्रकाशित हो चुके और संवत्सरसुबोध आदि प्रेसमें छप रहे हैं। और, शेष अंक भी यथावकाश शीघ्र प्रकाशित किये जावेंगे । आशा है कि जिस समय यह सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित होकर पाठकोंकी सेवामें पहुँच जावेगा तब फिर भविष्य अर्घ्यज्ञानके लिये अन्य किसी भी पुस्तकके देखनेकी कुछ भी आवश्यकता न रहेगी; क्योंकि अर्घ्यज्ञानके उपयोगी प्रायः सम्पूर्ण अलभ्य विषय भी इस ग्रन्थमें एकत्र कर दिये गये है।

पाठकोंको विदित हो कि हमारे यहां की प्रकाशित की हुई बहुधा पुस्तकोंको पुनः प्रकाशित करनेका स्वत्व (हक) हमारे परम प्रिय श्रीमान् पं० ब्रजवल्लभ हरिप्रसादजीको अर्पण कर दिया है। इससे अब यह पुस्तकें बारम्बार प्रकाशित होकर शीघ्र २ ग्राहकोंकी इच्छा पूर्ण कर सकेंगी।

अनुक्रमणिका ।

सर्वतोभद्रचक्रम् ।

भाषाविवृतिव्याख्यासहितम् ।
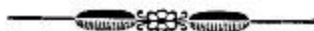
ब्रह्मेशविष्णूंश्च महर्षिसंघान्
संदर्शिनोऽगम्यनिमित्तशास्त्रान् ।
श्रीमन्महारामसुनामधेया-
नन्यान्समग्रांश्च गुरून्नमामि ॥ १ ॥
चालचक्रं ग्रहाणां यत् कथितं कालनिर्णये ॥
यस्य विज्ञानमात्रेण स्फुटं भवति सर्वशः ॥ २ ॥
तदिदं सर्वतोभद्रचक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ॥
भाषया विशदीकुर्वे हिताय जगतोऽधुना ॥ ३ ॥
सरलां वृत्तिमास्थाय समाधाय च मानसम् ॥
मीठालालः सुधीर्व्यासो ज्योतिश्शास्त्रकृतोद्यमः ॥ ४ ॥

चक्रनिर्माणप्रकरणम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ।
विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥

पंचस्वराध्यायमें हंसचार कहनेके उपरान्त तीनों लोकों (स्वर्ग, मृत्यु और पाताल) को दीपकके समान प्रकाश करनेवाला और तत्काल विश्वास करानेवाला जो सर्वतोभद्रनामसे प्रसिद्ध चक्र है, उसे मैं विस्तारसे कहूंगा ॥ १ ॥

त्रिविधं सर्वतोभद्रं खण्डाखण्डोभयात्मकम् ।
चतुःषष्टिपदं खण्डमेकाशीतिमखण्डकम् ॥ २ ॥
शंकुवर्गपदं चक्रं खण्डाखण्डोभयात्मकम् ।
तन्मध्येऽखण्डचक्रस्य विधानं क्रियतेऽधुना ॥३॥

खंड, अखंड और उभयात्मक नामसे सर्वतोभद्र चक्र तीन प्रकारका है । उनमें ६४ कोठोंका चक्र खंड, ८१ कोठोंका चक्र अखंड और १४४ कोठोंका चक्र खंड तथा अखंड दोनों प्रकारका माना है । उनमें प्रथम ८१ कोठोंके अखंड चक्रका विधान इस ग्रन्थमें करते हैं ॥ २ ॥ ३ ॥

ऊर्ध्वगा दश विन्यस्य तिर्यग्रेखास्तथा दश ।
एकाशीतिपदं चक्रं जायते नात्र संशयः ॥ ४ ॥

१० रेखा खड़ी और १० रेखा आड़ी खींचनेसे ८१ कोठोंका चक्र सिद्ध होता है ॥ ४ ॥

अकारादिस्वराः कोष्ठेष्वीशादौ विदिशि क्रमात् ।
सृष्टिमार्गेण दातव्याः षोडशैवं चतुर्भ्रमम् ॥ ५ ॥

ईशानादि चारों कोणदिशाओंके (१६) कोठोंमें अकारादि १६ स्वर सीधे क्रमसे एक एक करके चार फेरेमें लिखे । ऐसे लिखनेसे अ, उ, लृ, ओ ये ४ ईशानमें; आ, ऊ, लॄ, औ ये ४ अग्निमें; इ, ऋ, ए, अं ये ४ नैर्ऋत्यमें और ई, ॠ, ऐ, अः ये ४ वायव्यमें लिखे जायँगे ॥ ५ ॥

कृत्तिकादीनि धिष्ण्यानि पूर्वाशादि लिखेत्क्रमात् ।
सप्त सप्त क्रमादेतान्यष्टाविंशतिसंख्यया ॥ ६ ॥

कृत्तिकादि अभिजित्सहित २८ नक्षत्र हैं । उनमेंसे कृत्तिकादि ७ पूर्वमें, मघादि ७ दक्षिणमें, अनुराधादि ७ पश्चिममें और धनिष्ठादि ७ उत्तरमें लिखे ॥ ६ ॥

अवकहडा दिशि प्राच्यां मटपरताश्च दक्षिणे ।
नयभजखाश्च वारुण्यां गसदचलास्तथोत्तरे ॥ ७ ॥

अ, व, क, ह, ड ये ५ पूर्वमें; म, ट, प, र, त

ये ५ दक्षिणमें; न, य, भ, ज, ख ये ५ पश्चिममें और ग, स, द, च, ल ये ५ उत्तरमें लिखे ॥ ७ ॥

त्रयस्त्रयो वृषाद्याश्च पूर्वाशादि बुधैः क्रमात् ।
राशयो द्वादशैवं तु मेषान्ताः सृष्टिमागतः ॥८॥

वृषादि मेषान्त १२ राशियोंमेंसे वृष, मिथुन, कर्क ये ३ पूर्वमें; सिंह, कन्या, तुला ये ३ दक्षिणमें; वृश्चिक, धन, मकर ये ३ पश्चिममें और कुंभ, मीन, मेष ये ३ उत्तरमें लिखे ॥ ८ ॥

शेषेषु कोष्ठकेष्वेवं नन्दादितिथिपञ्चकम् ।
वाराणां सप्तकं लेख्यं भौमादित्यक्रमेण च ॥९॥

बाकी रहे(५)कोठोंमें नन्दादि पांचप्रकारकी तिथियोंको लिखे; अर्थात् नन्दाको पूर्वमें, भद्राको दक्षिणमें, जयाको पश्चिममें, रिक्ताको उत्तरमें और पूर्णाको मध्यमें लिखे और इन तिथियोंके साथमें आगे कहे भौम तथा आदित्यके क्रमसे सात वारोंको भी लिखे ॥ ९ ॥

भौमादित्यौ च नन्दायां भद्रायां बुधशीतगू ।
जयायां च गुरुः प्रोक्तो रिक्तायां भार्गवस्तथा १०
पूर्णायां शनिवारश्च लेख्यं चक्रेऽत्र निश्चितम् ।

भौम तथा आदित्यको नन्दाके, बुध तथा सोमको

भद्राके, गुरुको जयाके, शुक्रको रिक्ताके और शनि-वारको पूर्णाके कोठेमें लिखे ॥ १० ॥

इत्येष सर्वतोभद्रविस्तारः कीर्तितो मया ॥ ११॥
पूर्वशास्त्रानुसारेण यथोक्तं ब्रह्मयामले ।

यह सर्वतोभद्रचक्र बनानेका विस्तार पूर्वशास्त्रके अनु-सार जैसा ब्रह्मयामलग्रन्थमें कहा है वैसा मैने कहा ११

सर्वतोभद्रचक्रम् ।

कोण   पूर्व दिशा   अग्नि

ईशान कोण   उत्तर दिशा   दक्षिण दिशा

अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	आ
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	ऌ	वृष	मिथुन	कर्क	ॡ	म	पू
रे	च	मेष	ओ	नंदा १।६।११ सू मं	औ	सिंह	ट	उ
उ	द	मीन	रिक्ता ४।९।१४ शु	पूर्णा ५।१०।१५ शनि	भद्रा २।७।१२ बु. चं.	कन्या	प	ह
पू	स	कुंभ	अः	जया ३।८।१३ गु	अं	तुला	र	चि
श	ग	ऐ	मकर	धन	वृश्चिक	ए	त	स्वा
ध	ऋ	ख	ज	भ	य	न	ऋ	वि
ई	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	इ

कोण   वायव्य   पश्चिम दिशा   नैर्ऋत्य कोण

वेधज्ञानप्रकरणम् ।

सूर्यादिकान् ग्रहान्सर्वान्विन्यसेत्स्वस्वऋक्षके १२

वेध देखनेके समय सूर्यादि सर्व ग्रहोंको अपने अपने नक्षत्र पर अर्थात् जो ग्रह जिस नक्षत्रपर हो उसको इस चक्रमें भी उसी नक्षत्रपर लिखे ॥ १२ ॥

यस्मिन्नृक्षे स्थितः खेटस्ततो वेधत्रयं भवेत् ।
ग्रहदृष्टिवशेनात्र वामसंमुखदक्षिणे ॥ १३ ॥

इस सर्वतोभद्रचक्रमें जिस नक्षत्रपर ग्रह स्थित हो उस नक्षत्रस्थानसे तीन ओरको वेध होते हैं, वे वेध ग्रहकी वाम, संमुख तथा दक्षिण दृष्टिके अनुसार जानना, अर्थात् ग्रहकी जिस ओरको दृष्टि हो उसी ओरको वेध होता है, जिस ओरको दृष्टि न हो उस ओरको वेध भी नहीं होता ॥ १३ ॥

वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामा दृष्टिश्च शीघ्रगे ।
मध्याचारे तथा मध्या ज्ञेया भौमादिपञ्चके ॥१४॥

भौमादि पांचों (मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि) ग्रहोंमेंसे जो ग्रह वक्री हो उसकी दृष्टि दाहिनी

ओरको, जो ग्रह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो उसकी दृष्टि बाईं ओरको और जो ग्रह मध्यचारी हो उसकी दृष्टि सामनेको होती है, क्योंकि ये ग्रह कभी वक्र, कभी शीघ्र और कभी मध्य गतिमें रहते हैं; अतः गतिके बदलनेसे इनकी दृष्टि भी बदल जाती है ॥ १४ ॥

राहुकेतू सदा वक्रौ शीघ्रगौ चन्द्रभास्करौ ।
गतेरेकस्वभावत्वादेषां दृष्टित्रयं सदा ॥ १५ ॥

राहु तथा केतुकी सदा वक्रगति और चन्द्र तथा सूर्यकी सदा शीघ्र गति है, अतः गतिके एक ही स्वभावसे इन चारों ग्रहोंकी सदा तीनों ओरको दृष्टि होती है, क्योंकि गतिके न बदलने से दृष्टि भी नहीं बदलती ॥ १५ ॥

वामेतराऽग्रदृष्ट्या च वेधास्त्रिधा प्रकीर्तिताः ।
ऋक्षाऽक्षरस्वरतिथिराशिवेधश्च पञ्चधा॥ १६ ॥

वाम, दक्षिण तथा संमुख दृष्टिसे वेध तीन ओरको कहे हैं। उन वेधोंसे नक्षत्र, अक्षर, स्वर, तिथि और राशि ये पांच वेध जाते हैं ॥ १६ ॥

ग्रहः सव्यापसव्येन चक्षुषा वेधयेत्पुनः ।
ऋक्षाक्षरस्वरादींस्तु संमुखेनान्त्यभं तथा ॥१७॥

यदि वेधकर्त्ता ग्रहकी वामदृष्टि हो तो बाईं ओरके, तथा दक्षिणदृष्टि हो तो दाहिनी ओरके नक्षत्र, अक्षर, स्वर, तिथि और राशि इन पांचोंमेंसे जो वेधकी सीधमें हैं उन सभीको वेध होता है और संमुखदृष्टिमें केवल सामनेके एक नक्षत्रको ही वेध होता है ऐसा जानना॥१७॥

प्रत्येकनक्षत्रस्थानाद्वेधज्ञानम् ।

तत्तद्वेधनिर्णयार्थं मूलशास्त्रानुसारतः ।
चक्रोद्धारक्रमेणैव वेधलक्षणमुच्यते ॥ १८ ॥

तिस तिस वेधके निर्णयार्थ (अर्थात् किस नक्षत्रस्थानसे और किस दृष्टिसे किस नक्षत्रादिको वेध होगा सो) मूलशास्त्रके अनुसार चक्रोद्धारक्रमसे (अर्थात् कृत्तिकादि प्रत्येक नक्षत्रस्थानसे) वेधके लक्षण कहता हूं ॥ १८ ॥

वह्निस्थखेचरो याम्यमकारं वृषराशिकम् ।
नन्दाभद्रातिथिं तौलिं तं विशाखां श्रुतिं हरेत्॥१९॥
यदि ताराग्रहो वक्र एक एव यमं हरेत् ।

शीघ्रगश्चेदकारोक्षं नन्दा भद्रा सवारकम् ।
तुला तकारमिन्द्राग्निदैवतं च भिनत्ति च॥२०॥
मध्यगत्या समानश्च वैष्णवर्क्षं भिनत्ति च ॥

कृत्तिका नक्षत्रपर स्थित ग्रह भरणीनक्षत्र, अकार अक्षर, वृषराशि, नन्दा भद्रा तिथि, तुलाराशि, तकार अक्षर, विशाखा नक्षत्र और श्रवण नक्षत्रको वेधता है, इनमें भी भरणीको दक्षिणदृष्टिसे; अ, वृष, नन्दा, भद्रा, तुला, त, विशाखाको वामदृष्टिसे और श्रवणको संमुख दृष्टिसे वेधता है ॥ १९ ॥ २० ॥

रोहिणीसंस्थितः खेटो वं युग्ममौ स्त्रियं हरेत् ।
रं स्वातिमुस्वरं दस्रमभिजिदृक्षमाहरेत् ॥ २१ ॥

रोहिणी नक्षत्रपर स्थित ग्रह व, मिथुन, औ, कन्या, र, स्वातिको वामदृष्टिसे; उ, अश्विनीको दक्षिणदृष्टिसे और अभिजित्को संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २१ ॥

सौम्यसंस्थो हन्ति खेटः ककारं कर्कटं हरिम् ।
पं त्वाष्ट्रमस्वरं लं पौष्णर्क्षं वैश्वभं पुरः ॥ २२॥

मृगाशिर नक्षत्रपर स्थित ग्रह क, कर्क, सिंह, प, चित्रा-

को वामदृष्टिसे; अ, लृ, रेवतीको दक्षिणदृष्टिसे और उत्तराषाढाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २२ ॥

आर्द्रासंस्थः खगो हन्याद्धं लृकारं टमर्कभम् ।
वमक्षरं लृचकारमुत्तराभाद्रमंबुभम् ॥ २३ ॥

आर्द्रा पर स्थित ग्रह ह, लृ, ट, हस्तको वामदृष्टिसे; व, लृ, च, उत्तराभाद्रपदाको दक्षिणदृष्टिसे, और पूर्वाषाढाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २३ ॥

आदित्यसंस्थितः खेटो डकारमाक्षरार्यमम् ।
कं वृषाजौ दकारं च पूर्वाभाद्रं च नैर्ऋतम् ॥२४॥

पुनर्वसुपर स्थित ग्रह ड, म, उत्तराफाल्गुनीको वामदृष्टिसे; क, वृष, मेष, द, पूर्वाभाद्रपदाको दक्षिणदृष्टिसे; और मूलको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २४ ॥

पुष्यस्थः खेट ऊकारं भगर्क्षं हं युगं हरेत् ।
ओकारं मीनराशिं च सं कपं ज्येष्ठभं तथा२५॥

पुष्यपर स्थित ग्रह ऊ, पूर्वाफाल्गुनीको वामदृष्टिसे; ह, मिथुन, ओ, मीन, स, शतभिषाको दक्षिणदृष्टिसे और ज्येष्ठाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २५ ॥

आश्लेषासंस्थितः खेटो मघां ड कर्कटं क्रमात्।
नन्दां रिक्तां हरेत्कुंभ गकारं वसुमित्रभे ॥२६॥

आश्लेषापर स्थित ग्रह मघाको वामदृष्टिसे; ड, कर्क, नन्दा, रिक्ता, कुंभ, ग, धनिष्ठाको दक्षिणदृष्टिसे और अनुराधाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २६ ॥

मघाऋक्षस्थितः खेटो मकारं सिंहकं हरेत् ।
भद्रां जयां तिथिं नक्रं खं विष्णु सार्पभं यमम् २७॥

मघापर स्थित ग्रह म, सिंह, भद्रा, जया, मकर, ख, श्रवणको वामदृष्टिसे; आश्लेषाको दक्षिणदृष्टिसे और भरणीको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २७ ॥

पूर्वाफाल्गुनिगः खेटष्टं कन्यामं स्वरं धनुः ।
जकारमभिजिद्धन्यादूस्वरं पुष्यदस्रभे ॥२८॥

पूर्वाफाल्गुनीपर स्थित ग्रह, ट, कन्या,अं, धन, ज, अभिजितको वामदृष्टिसे; ऊ, पुष्यको दक्षिणदृष्टिसे और अश्विनीको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २८ ॥

उत्तरर्क्षे गतः खेटः पकारं तौलिवृश्चिकौ ।
भं वैश्वर्क्षं मं डकारमदितिं रेवतीं हरेत् ॥ २९ ॥

उत्तराफाल्गुनीपर स्थित ग्रह प, तुला, वृश्चिक, भ, उत्तराषाढाको वामदृष्टिसे; म, ड, पुनर्वसुको दक्षिण-दृष्टिसे और रेवतीको संमुख दृष्टिसे वेधता है ॥२९॥

हस्तर्क्षगः खगो रं च एस्वरं याक्षरं हरेत् ।
अंबुभं टं लृस्वरं हं शिवमुत्तरभाद्रभम् ॥ ३० ॥

हस्त पर स्थित ग्रह र, ए, य, पूर्वाषाढाको वाम-दृष्टिसे; ट, लृ, ह, आर्द्राको दक्षिण दृष्टिसे और उत्तराभाद्रपदाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ३० ॥

चित्रर्क्षगः खेचरस्तं नकारं नैर्ऋतिं हरेत् ।
पं केसरिकुलीरौ कं चन्द्रर्क्षं पूर्वभाद्रभम् ॥ ३१ ॥

चित्रापर स्थित ग्रह त, न, मूलको वामदृष्टिसे; प, सिंह, कर्क, क, मृगशिरको दक्षिण दृष्टिसे और पूर्वा-भाद्रपदाको संमुखदृष्टि से वेधता है ॥ ३१ ॥

स्वात्यर्क्षगः खगो हन्ति ऋस्वरं ज्येष्ठभं क्रमात् ।
रं कन्यामौस्वरं युग्मं वं विधिं शततारकाम् ॥३२॥

स्वातिपर स्थित ग्रह ऋ, ज्येष्ठाको वामदृष्टिसे; र, कन्या, औ, मिथुन व रोहिणीको दक्षिण दृष्टिसे और शतभिषाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ३२ ॥

विशाखास्थः खगो हन्यान्मित्रभं तं तुलां क्रमात् ।
भद्रां नन्दां वृषराशिमस्वरं वह्निभं वसुम् ॥२३॥

विशाखापर स्थित ग्रह अनुराधाको वामदृष्टिसे; त, तुला, भद्रा, नन्दा, वृष, अ, कृत्तिकाको दक्षिण दृष्टिसे; और धनिष्ठाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २३ ॥

अनुराधास्थितः खेटो विशाखां नमलिं जयाम् ।
रिक्तातिथिं क्रियं हन्याल्लकारं याम्यसार्पभे॥२४॥

अनुराधापर स्थित ग्रह विशाखाको दक्षिणदृष्टिसे; न, वृश्चिक, जया, रिक्ता, मेष, ल, भरणीको वामदृष्टि-से और आश्लेषाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २४ ॥

ज्येष्ठर्क्षगः खगो हन्ति यकारं चापमस्वरम् ।
मीनं चकारं तुरगमृस्वरं स्वातितिष्यभे ॥ २५ ॥

ज्येष्ठापर स्थित ग्रह य, धन, अः, मीन, च, अश्विनीको वामदृष्टिसे; ऋ, स्वातिको दक्षिणदृष्टिसे और पुष्यको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ २५ ॥

मूलस्थः खेचरो हन्याद्भं नक्रं कुंभराशिकम् ।
दकारं रेवतीं नं तं चित्रामादित्यमग्रगाम् ॥२६॥

मूलपर स्थित ग्रह भ, मकर, कुंभ, द, रेवतीको

वामदृष्टिसे; न, त, चित्राको दक्षिणदृष्टिसे और पुनर्वसुको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ३६ ॥

तोयर्क्षगो हन्ति खेटो जमैकारं सकारकम् ।
अहिर्बुध्न्यं यमेस्वरं रकारं हस्तमार्द्रभम् ॥ ३७ ॥

पूर्वाषाढापर स्थित ग्रह ज, ऐ, म उत्तराभाद्रपदाको वामदृष्टिसे; य, ए, र, हस्तको दक्षिणदृष्टिसे और आर्द्राको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ३७ ॥

वैश्वर्क्षगः खेचरः खं गकारं पूर्वभाद्रभम् ।
भकारमलिजूकं पमुत्तरां शशिभं हरेत् ॥ ३८ ॥

उत्तराषाढापर स्थित ग्रह ख, ग, पूर्वाभाद्रपदाको वामदृष्टिसे; भ, वृश्चिक, तुला, प, उत्तराफाल्गुनीको दक्षिणदृष्टिसे और मृगशिरको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ३८ ॥

अभिजित्स्थः खगो हन्ति ऋकारं शततारकाम् ।
जं चापमंस्वरं कन्यां टकारं भाग्यधातृभे ॥ ३९ ॥

अभिजित् पर स्थित ग्रह ऋ, शतभिषाको वामदृष्टिसे; ज, धन, अं, कन्या, ट, पूर्वाफाल्गुनीको

दक्षिणदृष्टिसे और रोहिणीको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ३९ ॥

गोविन्दगः खं मकरं जयां भद्रां तिथिं ग्रहः ।
सिंहं मकारं पैत्र्यर्क्षं धनिष्ठां हन्ति कृत्तिकाम् ॥४०॥

श्रवणपर स्थित ग्रह धनिष्ठाको वामदृष्टिसे; ख, मकर, जया, भद्रा, सिंह, म, मघाको दक्षिणदृष्टिसे और कृत्तिकाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ४० ॥

वस्वृक्षगः खगो हन्ति गकारं कुंभराशिकम् ।
रिक्तां नन्दां कुलीरं ड सार्पं विष्णुद्विदैवतम् ॥४१॥

धनिष्ठापर स्थित ग्रह ग, कुंभ, रिक्ता, नन्दा, कर्क, ड, आश्लेषाको वामदृष्टिसे; श्रवणको दक्षिणदृष्टिसे और विशाखाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ४१ ॥

शततारार्क्षगः खेटः सं मीनमोस्वरं युगम् ।
हं पुष्यं हन्ति ऋकारमभिजित्स्वातिमग्रगाम् ४२

शतभिषापर स्थित ग्रह स, मीन, ओ, मिथुन, ह, पुष्यको वामदृष्टिसे; ऋ, अभिजित्को दक्षिण-दृष्टिसे और स्वातिको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ४२ ॥

पूर्वाभाद्रस्थितः खेटो दं मेषं वृषभं हरेत् ।
कमादित्यं गकारं खमुत्तराषाढत्वाष्ट्रभे ॥ ४३ ॥

पूर्वाभाद्रपदापर स्थित ग्रह द, मेष, वृष, क, पुनर्वसुको वामदृष्टिसे; ग, ख उत्तराषाढाको दक्षिणदृष्टिसे और चित्राको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ४३ ॥

उत्तराभाद्रगः खेटश्चं लं वामार्द्रभं क्रमात् ।
सकारमैस्वरं हन्ति जं तोयर्क्ष रविं पुनः ॥ ४४ ॥

उत्तराभाद्रपदापर स्थित ग्रह च, ऌ, त्र, आर्द्राको वामदृष्टिसे; स, ऐ, ज, पूर्वाषाढाको दक्षिणदृष्टिसे और हस्तको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ४४ ॥

रेवतीसंस्थितः खेटो दं कुंभं नक्रराशिकम् ।
भं नैर्ऋतिं लकारमं चंद्रर्क्षमुत्तरां हरेत् ॥ ४५ ॥

रेवती पर स्थित ग्रह द, कुंभ, मकर, भ, मूलको दक्षिणदृष्टिसे; ल, अ, मृगशिरको वामदृष्टिसे और उत्तराफाल्गुनीको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ४५ ॥

अश्विनीसंस्थितः खेटश्चं मीनमः स्वरं धनुः ।
याक्षरं ज्येष्ठभं हन्ति उकारं विधिभं भगम् ॥ ४६ ॥

अश्विनीपर स्थित ग्रह च, मीन, अः, धन, य,

ज्येष्ठाको दक्षिणदृष्टिसे; उ, रोहिणीको वामदृष्टिसे और पूर्वाफाल्गुनीको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥४६॥

भरणीसंस्थितः खेटो लकारं मेषराशिकम् ।
रिक्तां जयामलि इन्यान्न मित्रमग्निपित्र्यभे ॥४७॥

भरणीपर स्थित ग्रह ल, मेष, रिक्ता, जया, वृश्चिक, न, अनुराधाको दक्षिणदृष्टिसे; कृत्तिकाको वामदृष्टिसे और मघाको संमुखदृष्टिसे वेधता है ॥ ४७ ॥

चक्रेऽनुक्ताक्षरवेधज्ञानम् ।

बवौ शसौ षखौ चैव ज्ञेयाविति परस्परम् ।
एकेन द्वितयं ज्ञेयं शुभाशुभखगव्यधे ॥ ४८ ॥

ब, व, श स, ष ख, इन दो दो अक्षरोंमें परस्पर संबंध है; अतः चक्रमें लिखे हुए एक अक्षरको शुभाशुभ ग्रहका वेध होनेसे चक्रमें नहीं लिखे हुये दूसरे अक्षरको भी वेध हो जाता है ॥ ४८ ॥

घङछाः षणठाश्चैव धफढास्थझञास्तथा ।
एतत्त्रिकं त्रिकं विद्धं विद्धैःकपभदैःक्रमात् ॥४९॥

क, प, भ, द इन अक्षरोंको वेध होनेसे क्रमसे घ ङ छ, ष ण ठ, ध फ ढ, थ झ ञ इन तीन तीन

अक्षरोंको वेध होता है अर्थात् 'क' से घ ङ छ को; 'प' से ष ण ठ को; 'भ' से ध फ ढ को; और 'द' से थ झ ञ को वेध जानना ॥ ४९ ॥

घङछा रौद्रगे वेधे षणठा हस्तगे ग्रहे ।
धफढाः पूर्वाषाढायां थझञा भाद्रउत्तरे ॥ ५० ॥

अथवा आर्द्रा नक्षत्रपर वेध हो तो घ, ङ, छ को; हस्तपर वेध हो तो ष, ण, ठ को; पूर्वाषाढापर वेध हो तो ध, फ, ढ को; और उत्तराभाद्रपदापर वेध हो तो थ, झ, ञ को वेध हो जाता है ॥ ५० ॥

स्वरवेधे विशेषक्रमः ।

अवर्णादिस्वरद्वन्द्वेष्वेकवेधे द्वयोर्व्यधः ।
युक्तस्वरात्मके वेधे त्वनुस्वारविसर्गयोः ॥ ५१ ॥

अवर्णादि दो दो स्वर—अर्थात् अ आ, इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ, ऌ ॡ, ए ऐ, ओ औ, अं अः—इन सवर्णी स्वरोंमेंसे किसी एकका वेध होनेसे दोनोंको ही वेध हो जाता है। और अनुस्वार तथा विसर्ग जिस स्वरके साथ हों उस स्वरको वेध होनेमें अनुस्वार और विसर्गको भी वेध हो जाता है ॥ ५१ ॥

कोणस्थधिष्ण्ययोर्मध्ये अन्त्यादिपादगे ग्रहे ।
अस्वरादिचतुष्कस्य वेधः पूर्णातिथिः क्रमात् ५२।

ईशानादि कोणोंके दो दो नक्षत्र हैं। उनमेंसे प्रथम नक्षत्रके अन्त्यके पादपर तथा दूसरे नक्षत्रके प्रथम पादपर ग्रह स्थित हो तो कोणमेंके स्वरको वेधेगा। अर्थात् ग्रह भरणीके अन्त्य वा कृत्तिकाके प्रथम पादपर हो तो ईशान कोणके 'अ' को; आश्लेषाके अन्त्य वा मघाके प्रथम पादपर हो तो अग्निकोणके 'आ' को; विशाखाके अन्त्य वा अनुराधाके प्रथम पाद पर हो तो नैर्ऋत्य कोणके 'इ' को; और श्रवणके अन्त्य वा धनिष्ठाके प्रथम पाद पर हो तो वायव्य कोणके 'ई' को वेधता है। और इसी क्रमसे अर्थात् जो ग्रह कोणोंमेंके किसी स्वरको वेधेगा वही ग्रह मध्यमें स्थित पूर्णातिथिको भी वेधेगा ॥ ५२ ॥

सूर्यादिग्रहप्रकरणम् ।

सूर्यश्चन्द्रश्च भौमश्च बुध ईज्यश्च भार्गवः ।
शनी राहुश्च केतुश्च प्रोक्ता एते नव ग्रहाः॥५३॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नव ग्रह कहे हैं ॥ ५३ ॥

शन्यर्कराहुकेत्वाराः क्रूराः शेषाः शुभा ग्रहाः ।
क्रूरयुक्तो बुधः क्रूरः क्षीणचन्द्रस्तथैव च ॥५४॥

शनि, सूर्य, राहु, केतु तथा मंगल ये क्रूर और चन्द्र, बुध, बृहस्पति तथा शुक्र ये सौम्य ग्रह कहे हैं। इनमें बुध तथा चंद्रमा यद्यपि सौम्य हैं तथापि बुध तो क्रूर ग्रहसे युक्त होनेसे और चंद्रमा क्षीण होनेसे क्रूर हो जाता है ॥ ५४ ॥

क्षीणचन्द्रज्ञानम् ।

दशम्यवधि कृष्णे तु पक्षे पूर्णो हि चन्द्रमाः ।
ततः परं क्षीणचंद्रः क्षीणः कार्यै विवर्जितः ॥५५॥

शुक्ल पक्षकी ५ से लेके कृष्णपक्षकी १० मी तक चंद्रमा पूर्ण रहता है; वह सौम्य है । और कृष्णपक्षकी ११ से लेके शुक्लपक्षकी ५ मी तक क्षीण रहता है, वह क्रूर जानना ॥ ५५ ॥

क्रूरयुक्तबुधज्ञानम् ।

क्रूरयुक्तः समांशके ॥ ५६ ॥

क्रूर ग्रह नक्षत्रके जिस पाये पर हो उसी पाये पर बुध भी हो तो अर्थात् एक नवांशपर हो तब बुध भी क्रूर हो जाता है ॥ ५६ ॥

क्रूरा वक्रा महाक्रूराः सौम्या वक्रा महाशुभाः ।
स्युःसहजस्वभावस्थाःसौम्याःक्रूराश्च शीघ्रगाः५७

क्रूर ग्रह वक्री हो तो महाक्रूर, सौम्य ग्रह वक्री हो तो महाशुभ और सौम्य अथवा क्रूर ग्रह शीघ्र गतिमें हों तो सहज स्वभाववाले होते हैं ॥ ५७ ॥

ग्रहचारज्ञानम् ।

ग्रहचारस्य विज्ञानं वेधबोधे हि कारणम् ।
सूक्ष्मं करणागमाज्ज्ञेयं साधारणं ब्रवीमि तत्५८

वेध जाननेके लिये ग्रहचारके ज्ञानकी आवश्यकता रहती है कि किस समय कौनसा ग्रह किस नक्षत्रपर तथा किस राशिपर है और किस समय कौनसा ग्रह उदय अस्त तथा वक्र मार्ग होगा ? परन्तु यह विषय गणितशास्त्रका

होनेसे इसका सूक्ष्म ज्ञान तो करणआदि ग्रहगणित सिद्धान्तके ग्रन्थोंमें किया गया है; तदनुसार तिथ्यादि पंचांग बनाये जाते हैं, जिनमें ग्रहचार स्पष्ट रूपमें लिखा रहता है उसीको काममें लाना चाहिये. किन्तु ग्रहचारका स्थूल ज्ञान करानेके लिये साधारण रीतिसे यहां लिखा जाता है ॥ ५८ ॥

ग्रहराशिचारदिनानि ।

**विधोर्भवति सांऽघ्रहो द्वयं सदैकभजमध्यभोगकम् ।
विदोऽक्षयमतुल्यवासरा सवित्युशनसोस्तथैकमाः
युगं क्षितिभुवोऽथ मासयोरुषर्बुधकुभिर्मिता गुरोः ।
अगोर्धृतिमिताश्चमासकाःखवह्निभिरशुभ्ररोचिषः ।**

मध्यगतिके स्थूलमानमें सूर्य १ महीना, चन्द्र २। दिन, मंगल १॥ डेढ़ महीना, बुध २५ दिन, बृहस्पति १३ महीना, शुक्र १ महीना, शनि ३० महीना और राहु तथा केतु १८ महीना राशि पर रहता है ॥५९॥६०॥

ग्रहनक्षत्रचारदिनानि ।

युगेन्दुसूर्यें दिनमेकचन्द्रे भौमे खनेत्रे बुधरन्ध्र-

नौवा । खरसेन्दुजीवे च शिवा च शुक्रे खखाब्धि-
मन्दे तमखाब्धिनेत्रे ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

स्थूल मान से सूर्य १४ दिन, चन्द्र १ दिन, मंगल २० दिन, बुध१८वा१९दिन,बृहस्पति १६० दिन, शुक्र ११ दिन, शनि ४०० दिन और राहु तथा केतु २४० दिन एक नक्षत्रपर रहते हैं ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

ग्रहनक्षत्रपादचारदिनानि ।

नवांशेऽर्कसितज्ञानां सत्रिभागमहस्त्रियम् ।
नाड्यः पञ्चदशैवेन्दोर्भौमे पञ्च दिनानि च॥६३॥
मासो जीवे दिनानि स्युस्त्रिभागेन चतुर्दश ॥
शनेर्मासत्रयं त्र्यंशो राहोर्मासद्वयं पुनः ॥ ६४ ॥

स्थूलमानसे सूर्य ३ दिन और २० घटि, चन्द्र १५ घटि, मंगल ५ दिन, बुध ३ दिन और २० घटि, बृहस्पति ४३ दिन और ४० घटि, शुक्र ३ दिन और २० घटि, शनि १०० दिन और राहु तथा केतु६० दिन नक्षत्रके एक पाये पर रहते हैं, इसीको नवांश भी कहते हैं ॥ ६३ । ६४ ॥

ग्रहचारस्त्रिप्रकारो वक्रः शीघ्रः समस्तथा ।
वक्रातिवक्रकौटिल्यो वक्रोऽयं कथ्यते बुधैः ॥६५॥
मन्दो मध्योऽतिचारस्थो मार्गस्थो ग्रह उच्यते ।
अतिचारगतः शीघ्रः समो मन्दगतो ग्रहः ॥ ६६ ॥

ग्रहोंका चार वक्र, शीघ्र तथा सम ऐसा तीन प्रकारका है, इनमें वक्र, अतिवक्र तथा कुटिल गतिवालेको वक्री कहा है; और मन्द, सम तथा शीघ्र गतिवालेको मार्गी कहा है; इस मार्गीके शीघ्र और समगतिसे दो भेद हैं, अर्थात् अतिचार गतिको शीघ्रगति तथा मन्द और मध्यगतिको समगति जानना ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

जानीयाद्गतयः सम्यगर्कस्थानाद्ग्रचारिणाम् ।

ग्रहोंकी गति सूर्यके स्थानसे अर्थात् ग्रहोंके और सूर्यके अन्तरसे जाननी चाहिये, जैसे—

सूर्ययुक्ता उदीयन्ते सूर्यग्रस्ताऽस्तगामिनः ॥६७॥

चन्द्रभौमादि ग्रह सूर्यके साथ अर्थात् आगे हों चाहे पीछे परन्तु अपने कालांशोंके भीतर आनेसे अस्त होते हैं, और सूर्यसे अलग अर्थात् कालांशोंसे अधिक अंतर हो जानेसे उदय होजाते हैं ।

इनमें मंगल, बृहस्पति और शनि ये ३ ग्रह सूर्यसे सदा मन्दगतिवाले होनेसे सदैव ही पश्चिममें तो अस्त और पूर्वमें उदय होते हैं, और बुध तथा शुक्र ये २ ग्रह कभी शीघ्र गतिमें तथा कभी वक्र गतिमें होते हैं, इसलिये जब शीघ्र गतिमें होते हैं तब तो पूर्वमें तो अस्त और पश्चिममें उदय, ऐसेही जब वक्री होते हैं तब पश्चिममें तो अस्त और पूर्वमें उदय होते हैं, और चन्द्रमा सदा शीघ्र गतिवाला होनेसे पूर्वमें तो अस्त और पश्चिममें उदय होता है ॥ ६७ ॥

भौमादिग्रहकालांशाः ।

कालांशाः शशितो ज्ञेयाः सूर्याः सप्तदश क्रमात् ।
विश्वे रुद्रा नवेष्विन्दुमिता भूनास्तु वक्रिणः॥६८॥

चन्द्रभौमादि ग्रह सूर्यके नजदीक आनेसे जितने अंशोंतक अस्त रहते हैं उन अंशोंको कालांश कहते हैं । इनमें स्थूल मानसे चंद्रमाके १२, भौमके १७, बुधके १३ वक्री हो तो १२, बृहस्पतिके ११, शुक्रके ९ वक्री हो तो ८ और शनिके १५ कालांश कहे हैं ॥ ६८ ॥

शीघ्रा द्वितीयगे सूर्ये स्फुरद्बिम्बाः कुजादयः ।
समास्तृतीयगे ज्ञेया मन्दा भानौ चतुर्थगे ॥६९॥
वक्राः स्युः पञ्चषष्ठेऽर्केऽतिवक्राऽष्टमसप्तमे ।
नवमे दशमे भानौ जायते कुटिला गतिः ॥७०॥
द्वादशैकादशे सूर्ये भजते शीघ्रतां पुनः ।
अदृश्यतां पुनर्लोके व्रजन्त्यर्कगता ग्रहाः ॥७१॥

स्थूलमानमें कुजादि ग्रहोंकी राशिसे (अर्थात् मंगल, बृहस्पति और शनिकी राशिसे) सूर्य दूसरी राशि पर हो तो ग्रह शीघ्रगामी होते हैं, तीसरी पर हो तो समचारी तथा चौथी पर हो तो मन्दचारी होते हैं, पांचवीं वा छठी पर हो तो वक्री, सातवीं वा आठवीं पर हो तो अतिवक्री, तथा नवमी वा दशमी पर हो तो कुटिल गतिवाले होते हैं । ग्यारहवीं वा बारहवीं पर हो तो पुनः शीघ्रगामी हो जाते हैं, और सूर्यकी राशिमें अर्थात् कालांशोंमें जानेसे ग्रह लोकमें फिर अस्त हो जाते हैं ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥

अर्काद्द्वये द्वादशे च ज्ञसितौ वक्रशीघ्रगौ ।
तृतीयैकादशे चैव शुक्रसौम्यौ समौ स्मृतौ॥७२॥

स्थूलमानसे बुध तथा शुक्र सूर्यसे दूसरी राशि पर जानेसे वक्री, बारहवीं राशि पर जानेसे शीघ्रगामी और तीसरी वा ग्यारहवीं राशि पर जानेसे समचारी होते हैं ॥ ७२ ॥

भौमादिग्रहास्तदिनानि ।

महीभुजोऽप्यंबरहेलयो नृपा
वियद्गुणा व्योमचराः षडग्नयः ॥
दिवौकसां पाशभृतोऽस्तवासरा
दिगाश्रिता ज्ञानिभिरत्र कीर्तिताः ॥ ७३ ॥

स्थूलमानसे मंगल १२० दिन, बुध मार्गी हो तब तो ३६ दिन और वक्री हो तो १६ दिन, बृहस्पति ३० दिन, शुक्र मार्गी हो तब तो १५ दिन और वक्री हो तो ९ दिन और शनि ३६ दिन तक अस्त रहते हैं ॥ ७३ ॥

भौमादिग्रहोदयदिनानि ।

क्रमेण तेऽष्टेषुरसैरगाश्विभिर्दिगाद्रिरामैर्विधुसायकाक्षिभिः । प्राच्यां दिनैरंकशुरैरथोदिताः पश्चाद्व्रजंत्यस्तमयं पुनर्ग्रहाः ॥ ७४ ॥

स्थूलमानसे मंगल ६५८ दिन, बुध ३७ दिन, वक्री हो तो ३३ दिन, बृहस्पति ३७२ दिन, शुक्र २५१ दिन, वक्री हो तो २४८ दिन, शनि ३३९ दिन तक उदय रहते हैं ॥ ७४ ॥

भौमादिग्रहवक्रदिनानि ।

रसशैलास्त्रिनेत्रौ च द्विसूर्याः शरसिन्धवः ।
सप्तविश्वे कुजादीनामिमे स्युर्वक्रवासराः ॥७५॥

स्थूलमानसे मंगल ७६ दिन, बुध २३ दिन, बृहस्पति १२२ दिन, शुक्र ४५ दिन और शनि १३७ दिन वक्रचारमें रहते हैं ॥ ७५ ॥

भौमादिग्रहमार्गदिनानि ।

शरांबरागा द्विनवाहितारकाः ।
सुरेषवो ह्यग्नियमाश्च वासराः ॥
तेषां स्वभुक्त्याननमार्गकाश्रिताः ।
स्मृता बुधैरूर्ध्वमतोऽथ वक्रगाः॥७६॥

स्थूलमानसे मंगल ७०५ दिन, बुध १२ दिन, बृहस्पति २७८ दिन, शुक्र ५३३ दिन और शनि २३८ दिन तक मार्गी रहते हैं ॥ ७६ ॥

भौमादिग्रहातिचारकारणम् ।

ग्रहोऽतिवेगेन यदा स्वमार्गमाक्रांतभे गच्छति यश्चरोक्ता । तदा गतिस्तस्य विहाय राशिं तमैष्यभे चातिचारो गतिज्ञैः ॥ ७७ ॥

भौमादि ग्रह जिस समय अपनी साधारण चाल(गति) से जितने समयमें राशिके जितने भागका भोग कर सकें उतने भागको अति शीघ्र गतिके कारण बहुत न्यून समयमें भोग करके वर्तमान राशिको भोगकर आगेकी राशिपर चला जावें उस समय उसे अतिचारी कहते हैं ।

जब मंगलकी गति ४६।११ बुधकी गति ११२। ३२, बृहस्पतिकी गति १४।४, शुक्रकी गति ७५।४२ और शनिकी गति ७।४५ की हो तब ये ग्रह परम शीघ्रगामी अर्थात् अतिचारी होते हैं ॥ ७७ ॥

भौमादिग्रहातिचारदिनानि ।

अर्धमासो दशाहानि त्रिपक्षं च दिना दश ।
मासषण्मंगलादीनामतिचारः प्रकीर्तितः ॥७८॥

स्थूल मानसे मंगल १५ दिन,बुध १० दिन,बृहस्पति

४५ दिन, शुक्र १० दिन और शनि १८० दिन अतिचारमें रहते हैं ॥ ७८ ॥

यत्र देशे यत्र काले दृश्यते गणितैक्यकम् ।
तेन मानेन ते कार्याःस्फुटास्तत्समयोद्भवाः॥७९॥

जिस देशमें और जिस कालमें जिस गणितका एकता हो (अर्थात् उदय अस्त, वक्र मार्ग, राशि तथा नक्षत्रचारादि निर्दिष्ट समय पर यथार्थ मिलते हों) उसी गणितसे उस समयके ग्रह स्पष्ट करने चाहियें ॥ ७९ ॥

जन्मनामादिप्रकरणम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेज्जन्म यो वर्णस्तत्र यः स्वरः ।
या तिथिस्तत्र योराशिर्विज्ञेयं जन्मकालतः॥८०॥

जिस नक्षत्रमें जन्म हो वह जन्म नक्षत्र, उस नक्षत्रके पादक्रमसे जो अक्षर आता हो वह अक्षर, उस अक्षरका जो स्वर हो वह स्वर,जिस तिथिमें जन्म हो वह तिथि, और नक्षत्रके पादानुसार जो राशि आती हो वह राशि,ये नक्षत्रादि पांचों ही जन्मकालसे जानने चाहियें ॥ ८० ॥

जन्मनक्षत्रपादवशादक्षरज्ञानम् ।

चूचेचोलाऽश्विनी प्रोक्ता लीलूलेलो भरण्यथ ।
आईऊए कृत्तिका स्यादोवावीवू तु रोहिणी ॥८१॥

चू चे चो ला ये ४ अक्षर अश्विनीके चार पादके हैं; ऐसेही ली लू ले लो भरणीके; आ ई ऊ ए कृत्तिकाके; और ओ वा वी वू रोहिणीके हैं ॥ ८१ ॥

वेवोकाकी मृगशिरः कूघङछ तथार्द्रका ।
केकोहाही पुनर्वसुहूहेहोडा तु पुष्यभम् ॥ ८२ ॥

वे वो का की मृगशिरके; कू घ ङ छ आर्द्राके; के को हा ही पुनर्वसुके; और हू हे हो डा पुष्यके हैं॥८२॥

डीडूडेडो तथाश्लेषा मामीमूमे मघा स्मृता ।
मोटाटीटू पूर्वफल्गु टेटोपापीत्युत्तरा तथा ॥ ८३ ॥

डी डू डे डो आश्लेषाके; मा मी मू मे मघाके मो टा टी टू पूर्वाफाल्गुनीके; और टे टो पा पी उत्तराफाल्गुनी के हैं ॥ ८३ ॥

पूषणठ हस्ततारा पेपोरारी तु चित्रका ।
रूरेरोता स्मृतास्वातीतीतूतेतो विशाखिका॥८४॥

पू ष ण ठ हस्तके; पे पो रा री चित्राके; रू रे रो ता स्वातीके; और ती तू ते तो विशाखाके हैं ॥ ८४ ॥

नानीनूनेऽनुराधर्क्षं ज्येष्ठा नोयायियू स्मृता ।
येयोभाभी मूलतारा पूर्वाषाढा भुधाफढा ॥८५॥

ना नी नू ने अनुराधाके; नो या यि यू ज्येष्ठा-के; ये यो भा भी मूलके; और भु धा फ ढा पूर्वा-षाढाके हैं ॥ ८५ ॥

भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोखाभिजिद्भवेत् ।
खीखूखेखो श्रवणभं गागीगूगे धनिष्ठिका ॥८६॥

भे भो जा जी उत्तराषाढाके; जू जे जो खा अभिजितके; खी खू खे खो श्रवणके; और गा गी गू गे धनिष्ठाके हैं ॥ ८६ ॥

गोसासीसू शतभिषक् सेसोदादी तु पूर्वभे ।
दूथझञोत्तराभाद्रा देदोचाची तु रेवती ॥ ८७ ॥

गो सा सी सू शतभिषाके; से सो दा दी पूर्वाभा-द्रपदाके; दू थ झ ञ उत्तराभाद्रपदाके; और दे दो चा ची रेवतीके हैं ॥ ८७ ॥

नामाक्षरवशात्स्वरज्ञानम् ।

मातृकायां पुरा प्रोक्ताः स्वराः षोडशसंख्यया ।
तेषां द्वावन्तिमौ त्याज्यौ चत्वारश्च नपुंसकाः॥८८॥
शेषा दश स्वरास्तेषु स्यादेकैको द्विके द्विके ।
ज्ञेया अतः स्वराद्यास्ते स्वराः पंच स्वरोदये॥८९॥

मातृका अर्थात् अकारादि हकारान्त अक्षर जो स्वर तथा व्यञ्जनके भेदसे दो प्रकार के हैं, तिनमें प्रथम १६ स्वर हैं उनमें अन्त्यके २ स्वर (अं अः) त्याज्य हैं, और ४ स्वर (ऋ ॠ ऌ ॡ) नपुंसक हैं सो भी त्याज्य हैं; बाकी रहे सवर्णी १० स्वर (अ आ, इ ई, उ ऊ, ए ऐ, ओ औ)। तिनमें अकारादि दो दो स्वरों से एक एक स्वर—अर्थात् अ, इ, उ, ए, ओ; ये पांच स्वर स्वरशास्त्रमें माने हैं ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

कादिहान्तॉल्लिखेद्वर्णान्स्वराधो ङञणोज्झितान् ।
तिर्यक्पंक्तिक्रमेणैव पंचत्रिंशत्प्रकोष्ठके ॥ ९० ॥

३५ कोठोंके चक्रमें ऊपरके ५ कोठोंमें उक्त अकारादि ५ स्वर आडी पंक्ति में लिखे, और नीचे

के कोठोंमें ककारसे लेके हकार तक ३३ वर्ण हैं तिनमें 'ङ, ञ, ण' को छोड़के शेष ३० वर्ण ककारादि क्रमसे आड़ी पंक्ति में लिखे; जैसे आगे के चक्र में लिखे हैं ॥ १० ॥

वर्णस्वरचक्रम् ।

अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह

नरनामादिमो वर्णो यस्माद्यस्मात्स्वरादधः ।
स स्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते ॥११॥

मनुष्यादिके नामके आदिका अक्षर स्वरचक्रमें जिस स्वर के नीचे हो वही स्वर उस अक्षरका स्वर कहा है; उसी स्वरको लेना ॥ ११ ॥

न प्रोक्ता ङञणा वर्णा नामादौ सन्ति ते नहि ।
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्तु यथाक्रमम् ॥१२॥

'ङ, ञ, ण,' ये तीन अक्षर नामके आदि में नहीं होते; इसीसे वर्णस्वरचक्रमें नहीं कहे। तथापि यदि ये अक्षर किसी नामके आदिमें हों तो इनके स्थानमें 'ग, ज, ड,' ये अक्षर क्रमसे जाने और इन्हींका जो स्वर हो वह स्वर लेवे ॥ १२ ॥

यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयोगाक्षरलक्षणः ।
ग्राह्यस्तस्यादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले॥१३॥

यदि नामके अक्षर में दो अक्षरयुक्त हों तो जो अक्षर प्रथम हो उसका स्वर लेना, ऐसा ब्रह्मयामल ग्रन्थ में कहा है ॥ १३ ॥

यदा स्वरादिकं नाम तदा ग्राह्यं पराक्षरम् ।
देशे ग्रामे पुरे हर्म्ये नरनामादिनिर्णये ॥ १४ ॥

देश, ग्राम, पुर, गृह और मनुष्यादिके नामका प्रथम अक्षर स्वर ही हो तो उस स्वरको छोडके उसके आगेके अक्षरका जो स्वर हो वह लेवे ॥ १४ ॥

स्वरवशात्तिथिज्ञानम् ।

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णाश्च प्रतिपन्मुखाः

प्रतिपदादि पन्द्रह तिथियोंको पांच भागोंमें तीन बार फिरावे। ऐसे १।६।११ को नन्दा, २।७।१२ को भद्रा, ३।८।१३ को जया, ४।९।१४ को रिक्ता और ५।१० ।१५ वा ३० को पूर्णा जाने।

अकारादिस्वराणां च नन्दादितिथयः क्रमात् १५

नन्दादि पांच प्रकारकी तिथियोंमेंसे अ स्वरकी नन्दा, इ स्वरकी भद्रा, उ स्वरकी जया, ए स्वरकी रिक्ता और ओ स्वरकी पूर्णा तिथि जाने। अतः जो तिथि जिस स्वरकी है वही तिथि उस स्वरके वर्णोंकी भी होती है। पर नन्दादि प्रत्येककी तीन तीन तिथियोंमेंसे एक एक तिथिके वर्ण जाननेका क्रम आगे कहते हैं ॥ १५ ॥

आद्ये तिथौ त्रयो वर्णा द्वौ द्वौ वै शेषयोर्यदि ।
एवं तिथित्रयज्ञेया वर्णसंख्या स्वरेष्वपि ॥१६॥

वर्णस्वर चक्रमें प्रत्येक कोष्ठकके ७ अक्षरोंमें ऊपरके तीन अक्षरों (एक स्वर और दो अक्षर) की प्रथम तिथि, मध्यके दो अक्षरोंकी दूसरी तिथि और नीचेके

दो अक्षरोंकी तीसरी तिथि नन्दादि तिथियोंमें जाननी । जैसे आगेके चक्रमें लिखी हैं ॥ १६ ॥

स्वरवर्णतिथि चक्रम् ।

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
अ क ड १	इ ख ज २	उ ग झ ३	ए घ ट ४	ओ च ठ ५
ड ध ६	ढ न ७	त प ८	थ फ ९	द ब १०
भ व ११	म श १२	य ष १३	र स १४	ल ह १५

नक्षत्रवशाद्राशिज्ञानम् ।

सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिः पदैः ।
अश्विनीप्रमुखानां च मेषाद्या राशयः स्मृताः१७॥

अश्विनीसे लेके रेवती तक (अभिजित्‌को त्यागनेसे) २७ नक्षत्रोंके १०८ पायोंमेंसे ९।९ पायोंकी एक एक राशिके हिसाबसे मेषादि १२ राशि

होती हैं; और अभिजित्का भोग उत्तराषाढाके अन्त्यके १ पाद तथा श्रवणके प्रथम पादके आदिकी चार घटियोंमें (अर्थात् मकर राशिके ६ अंश, ४० कलाके उपरांतसे लेके मकरके १० अंश, ५३ कला और २० विकला भोगने तक) होता है; इसीसे यहां नहीं गिना ॥ १७ ॥

अज्ञातजन्मकाले नामज्ञानम् ।

जातकस्य तिथी राशिर्विज्ञेये नामगाञ्जलैः ।
अज्ञातजातकानां तु समस्तमभिधानतः ॥ १८ ॥

जिन्होंका जन्मकाल ज्ञात न हो तो तिन्होंका तिथि, राशि, नक्षत्र, अक्षर और स्वर व्यवहारिक नामसे जाने ॥ १८ ॥

प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दतः ।
संस्कृतं प्राकृतं वापि ख्यातं नाम फलप्रदम् ॥ १९ ॥

जिस नामको पुकारनेसे सोता हुआ जाग उठे और बुलानेसे शब्द सुनके आजावे वह नाम चाहे संस्कृ-

तका, चाहे भाषाका हो; किन्तु प्रसिद्ध नाम ही फलका देनेवाला है ॥ ९९ ॥

बहूनि यस्य नामानि नरस्य च कथंचन ।
तस्य पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः॥१००॥

यदि मनुष्यादिके किसी प्रकार बहुत नाम हों तो उनमें जो नाम पीछे हुआ हो वही नाम स्वरके विद्वानोंको लेना चाहिये । अतः जिसका जो नाम हो उसके नामका प्रथम अक्षर, उस अक्षरका स्वरचक्रमें जो स्वर हो वह स्वर, उस स्वरके वशसे जो तिथि हो वह तिथि उस अक्षरका जो नक्षत्र हो वह नक्षत्र और उस नक्षत्रवशसे जो राशि हो वह राशि इन्हीं पांचोंका वेध देखना ॥ १०० ॥

शुभाशुभकार्येषु वर्ज्यनक्षत्रप्रकरणम् ।

भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं क्रूरग्रहेण भम् ।
शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ १०१॥

क्रूर ग्रहसे भुक्त (पहिले भोगा हुआ), भोग्य (आगे भोगनेवाला) तथा आक्रान्त (जिसको भोग रहा

हो) और बंधा हुआ—ये नक्षत्र शुभाशुभ कार्योंमें यत्नसे त्याग देने चाहिये ॥ १०१ ॥

ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च ।
भुक्त्वा चंद्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते१०२

क्रूर ग्रहसे विद्ध तथा क्रूर ग्रहसे भुक्त, भोग्य और आक्रांत नक्षत्रोंमेंसे जिस नक्षत्रको चन्द्रमा भोग करके छोड दे वह नक्षत्र फिर शुभकार्यमें वर्जित नहीं है१०२

दग्धं क्रूरविमुक्तर्क्षं ज्वलितं क्रूरसंयुतम् ।
पुरतो धूमितं प्राहुः फलं तत्र विचिन्तयेत्॥१०३॥

क्रूर ग्रहसे भुक्त नक्षत्रको दग्ध, आक्रान्त नक्षत्रको ज्वलित और आगे भोगनेवाले नक्षत्रको धूमित कहा है। इन नक्षत्रोंके फलको तहां विचार करे। जैसे—॥१०३॥

ज्वलिते वर्तमानं च धूमे ह्युद्योगमेव च ।
गतकाले फलं दग्धे क्रूरे हानिः शुभे शुभम्॥१०४॥

दग्धका फल पहिले हुआ, ज्वलितका फल वर्तमानमें होता है और धूमितका फल आगे होगा; ये फल क्रूर ग्रहोंसे अशुभ और शुभ ग्रहोंसे शुभ जानना ॥ १०४ ॥

मन्दभौमार्कवक्राणां भुक्ताभुक्तिविवर्जितम् ।
ज्वलितं धूमितं दग्धं त्रिविधं वेधलक्षणम्॥१०५॥

शनि, मंगल, सूर्य, राहु तथा केतुके भुक्त और भोग्य नक्षत्रों को छोड़कर आक्रान्त नक्षत्र स्थानसे जिसको वेध रहा है वह ज्वलित, जिसको आगे वेधेगा वह धूमित और जिसको पहले वेधा था वह दग्ध; ऐसे तीन प्रकारके वेध जानने ॥ १०५ ॥

ज्वलिते देहपीडा स्याद्धूमितेऽरिष्टता भवेत् ।
दग्धे तु मृत्युमाप्नोति शुभे शुभकरं भवेत्॥१०६॥

ज्वलित वेधसे देहमें पीड़ा, धूमितसे अरिष्ट (दुःख क्लेश, रोगादि) तथा दग्धसे मृत्यु होती है, और शुभ ग्रहके वेधसे इसी प्रकार शुभ फल होता है ॥१०६ ॥

नक्षत्रादिवेधफलप्रकरणम् ।

एकादिक्रूरवेधेन फलं पुंसां प्रजायते ।
उद्वेगश्च भयं हानी रोगो मृत्युःक्रमेण च ॥१०७॥

मनुष्योंके नक्षत्रादि पंचकको एकादि क्रूर ग्रहके वेध से क्रमसे फल होता है । जैसे पांच क्रूर ग्रहोंमेंसे एक वेधे

तो उद्वेग, दो वेधे तो भय, तीन वेधे तो हानि, चार वेधे तो रोग और जो पांचोंही वेधे तो मृत्यु होती है॥ १०७॥

मरणं पंचभिर्विद्धैश्चतुर्भिः पीडनं भवेत् ।
अर्थनाशः परिक्लेशो नानारूपास्त्रिवेधतः॥
बन्धुनाशो मनःपीडा द्वाभ्यामेकेन संभ्रमः १०८॥

अथवा पांचों क्रूर ग्रह वेधे तो मृत्यु, चार वेधे तो पीडा, तीन वेधे तो अर्थ का नाश तथा अनेक प्रकारके क्लेश, दो वेधे तो बन्धुका नाश तथा मनको कष्ट, और एक क्रूर ग्रह वेधे तो भ्रम होता है ॥ १०८ ॥

ऋक्षे भ्रमोऽक्षरे हानिः स्वरे व्याधिर्भयं तिथौ ।
राशौ विद्धे महाविघ्नः पंचविद्धो न जीवति॥१०९॥

क्रूर ग्रहसे नक्षत्र विधे तो भ्रम,अक्षर विधे तो हानि, स्वर विधे तो व्याधि, तिथि विधे तो भय, राशि विधे तो महाविघ्न और जो नक्षत्रादि पांचों ही विधे तो मृत्यु को प्राप्त होवे ॥ १०९ ॥

ऋक्षवेधे वधो बन्धोदेहशोषादिपीडनम् ।
अक्षरे राजपीडा स्याद्रोगो मृत्युर्भवेत्तथा॥११०॥
राशौ विघ्नश्च दुःखं च धातूनां क्षोभकृत्तथा ।
तिथिवेधे मतेर्भङ्गः स्वरे मृत्युभयं तथा ॥१११॥

नक्षत्र विंधे तो बन्धुका वध तथा शोषरोगादिसे देहमें पीड़ा, अक्षर विंधे तो राजासे पीड़ा तथा रोग वा मृत्यु, राशि विंधे तो विघ्न, दुःख तथा धातुका कोप, तिथि विंधे तो मतिका भ्रष्ट होना और स्वर विंधे तो मृत्युका भय होता है ॥ ११० ॥ १११ ॥

तिथिवेधेऽर्थनाशश्च राशिना दुःखजं भयम् ।
अक्षरे शोकसन्ताप ऋक्षे तु व्याधिसंक्रमः॥११२॥
स्वरवेधे भवेन्मृत्युः पंचविद्धो न जीवति ।

अथवा तिथि विंधे तो अर्थकी हानि, राशि विंधे तो दुःखका भय, अक्षर विंधे तो शोक तथा संताप, नक्षत्र विंधे तो रोगका आना, स्वर विंधे तो मृत्युका भय और ये पांचोंही विंधे तो निश्चय मृत्यु होती है ॥ ११२ ॥

ऋक्षवेधेन देवेशि ! वधबन्धादिकं फलम्॥११३॥
अशुभं सर्वभावेषु देहशोषस्तु जायते ।

हे पार्वति ! नक्षत्रका वेध हो तो वधबन्धनादि तथा समस्त कामोंमें अनिष्ट फल होता है और क्षयरोगसे देह भी सूख जाती है ॥ ११३ ॥

नामाक्षरेण विद्धेन स्त्रीभृत्यकलहो भवेत् ॥११४॥
गोमहिष्यो विनश्यन्ति रसाश्च विविधास्तथा ।
आमज्वरो भवेद्व्याधिरतिसारो न संशयः ११५॥

नामके अक्षरका वेध हो तो स्त्रीसे तथा नौकरोंसे कलह, गायों, भैंसों तथा अनेक प्रकारके रसोंका नाश और आमज्वर वा अतिसार रोग निश्चय होता है ॥ ११४ ॥ ११५ ॥

स्वरवेधे तु संप्राप्ते जायन्ते दारुणा रुजः ।
हेमरत्नादिनाशश्च विग्रहो बान्धवैः सह ॥११६॥

स्वरका वेध हो तो भयंकर रोग, सुवर्ण रत्न आदि पदार्थोंका नाश और बांधवोंके साथ विग्रह (कलह) होता है ॥ ११६ ॥

तिथिवेधेन ये विद्धा विपरीतं धनादिषु ।
भ्रमस्तु जायते घोरो बुद्धिभ्रंशश्च जायते॥११७॥
नभसः पतनं ज्ञेयं सर्वार्थस्तु विनश्यति ।

तिथिका वेध हो तो धनादि पदार्थ विपरीत हो जाते हैं (अर्थात् धनादिका नाश होता है), तथा घोर भ्रम,

बुद्धिका नाश, ऊँचेसे गिरना और सम्पूर्ण अर्थोंका नाश होता है ॥ ११७ ॥

राशिवेधे तु दुःखानि क्लेशाश्च विविधास्तथा ११८
धातुक्षोभो महाक्षोभो जायते नात्र संशयः ।

राशिका वेध हो तो अनेक प्रकारके दुःख तथा क्लेश, धातुका कोप और महान् क्षोभ निश्चय होता है ॥ ११८ ॥

एकेन संभ्रमो ज्ञेयो मनस्तापो द्वितीयके॥११९॥
तृतीयेनार्थनाशः स्याच्चतुर्थे च महद्भयम् ।
पंचमे विद्धमात्रे तु शीघ्रं गच्छेद्यमालयम्॥१२०॥

नक्षत्रादि पंचकमें जो प्रथम विंध तो भ्रम, दूसरा विंधे तो मनको ताप, तीसरा विंधे तो अर्थका, नाश, चौथा विंधे तो मोटा भय और पांचवां विंधे तो तत्काल यमराजकी पुरीको गमन होता है ॥ ११९ ॥ १२० ॥

एकवेधे भयं युद्धे युग्मवेधे धनक्षयः ।
त्रिवेधेन भवेद्भंगो मृत्युर्वेधचतुष्टये ॥ १२१ ॥

एक वेधसे युद्धमें भय, दो वेधसे धनका क्षय, तीन वेधसे युद्धादिमें भंग और चार वेधसे मृत्यु होती है ॥ १२१ ॥

क्रूराणां फलमादिष्टं सौम्यानां तु फलं शृणु ।

पूर्वोक्त क्रूर ग्रहोंके वेधका फल कहा, अब सौम्य ग्रहोंके वेधका फल कहता हूं सो श्रवण करो ।

सौभाग्यं लाभदं चैव विजयं धनसौख्यदम् १२२

सौम्य ग्रहोंके एक वेधसे सौभाग्यकी वृद्धि, दो वेधसे लाभ, तीन वेधसे जय और चार वेधसे धनका सुख होता है ॥ १२२ ॥

सौम्यग्रहैस्तिथिर्विद्धा द्रव्यलाभं विनिर्दिशेत् ।
ऋक्षे विद्धे देहवृद्धिरभयं सिद्धिरुत्तमा ॥ १२३ ॥
विद्धे राशौ सुखं याति नाम्नो निर्भयतां व्रजेत् ।
स्वरवेधे तु सौभाग्यं पञ्चपञ्चांगलाभदाः॥१२४॥

सौम्य ग्रहोंसे तिथि विंधे तो द्रव्यका लाभ, नक्षत्र विंधे तो देहकी पुष्टि तथा भयरहित उत्तम सिद्धि,राशि विंधे तो सुख, नामका अक्षर विंधे तो निर्भयता, स्वर विंधे तो सौभाग्यकी वृद्धि, और पांचों विंधे तो पांचों हीके फलका लाभ होता है ॥ १२३॥१२४ ॥

यथा दुष्टफलाः क्रूरास्तथा सौम्याः शुभप्रदाः ।
क्रूरयुक्ताः पुनः सौम्या ज्ञेयाः क्रूरफलप्रदाः १२५

जैसे क्रूर ग्रह अशुभ फलको देते हैं वैसे सौम्य ग्रह शुभ फलको देते हैं; परन्तु क्रूर ग्रहके साथ अर्थात् नक्षत्रके एक पाये पर (एक नवांशमें) हों तो सौम्य ग्रह भी अशुभ फल देते हैं । किंतु इसमें इतना भेद है कि—अन्य सौम्य ग्रहोंका बल क्रूरयुक्त हो तो भी निज सौम्य स्वभावानुसारही रहता है पर बुधका तो बल भी क्रूर स्वभावानुसार हो जाता है; इसीसे क्रूर युक्त बुधको क्रूर कहा है ॥ १२५ ॥

सूर्यादिग्रहवेधफलप्रकरणम् ।

अर्कवेधे मनस्तापो द्रव्यहानिश्च भूसुते ।
रोगपीडाकरः सौरी राहुकेतू च विघ्नदौ॥१२६॥

सूर्यके वेधसे मनको ताप, मंगलके वेधसे द्रव्यकी हानि शनिके वेधसे रोग तथा पीडा, और राहु अथवा केतुके वेधसे विघ्न होता है ॥ १२६ ॥

अर्कवेधे मनस्तापो राजमंत्रिविरोधतः ।
शीतज्वरः शिरःशूलः प्रवासः सर्वनाशनम् १२७

बहुदुःखमवाप्नोति भीतिः कष्टं चतुष्पदात् ।
पितृमातृविरोधादि धनहानिः पशुक्षयः ॥१२८॥

सूर्यके वेधसे राजा तथा राजमंत्रीके विरोधमें मनको ताप, शीतज्वर, शिरमें शूल, प्रवास (परदेश जाना), सर्व प्रकारसे नाश, बहुत दुःखकी प्राप्ति, चौपाये(पशु)में भय तथा कष्ट, पिता माता में विरोध आदि, धनकी हानि और पशुओंका नाश होता है ॥ १२७ ॥१२८ ॥

भौमवेधेऽर्थहानिश्च बुद्धिनाशः कुलक्षयः ।
धान्यादिभूमिनाशश्च धातुक्षोभादिरोगकृत्१२९॥
कार्यहानिर्मनस्तापो भौमवेधेन सिद्ध्यति ।
भार्यापुत्रादिविपदो द्रव्यहानिस्तु भूसुते ॥१३०॥
भूमिक्षेत्रे च संवादे समरे कलहप्रदः ।
जातिभ्रंशो वियोगश्च कुक्षिरोगप्रदो भवेत्॥१३१॥
विदेशगमनं चैव रक्तमोक्षस्य संभवः ।

मंगलके वेधमें अर्थकी हानि, बुद्धिका नाश, कुलका क्षय, धान्य आदि, भूमिका नाश, धातुविकार आदि रोग, कार्यकी हानि, मनको ताप, स्त्री पुत्र आदि भी दुःखदायक, द्रव्यकी हानि, भूमिक्षेत्रमें संवादमें तथा युद्ध

में क्लेश, जातिसे अलग होना, स्वजनोंसे वियोग, उदरमें रोग, विदेशमें गमन और रुधिरपातका संभव होता है ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥

शनौ व्याधिर्भयं शोकोबंधुभृत्यसुहृत्क्षयः ।
चातुर्थिकज्वरादिश्च प्रवासो बंधनं तथा ॥१३२॥
स्थानहानिर्महाव्याधिर्नीचस्त्रीवशविग्रहः ।
अभिघातायुग्रकर्म मरणं पश्यति ध्रुवम् ॥१३३॥
तत्कालयुद्धयात्रायां शनिवेधे न सिद्ध्यति ।
रोगपीडाकरः सौरिः शरीरे क्षयकृद्भवेत् ॥१३४॥

शनिके वेधसे व्याधि, भय, शोक, स्वजन, नौकर तथा मित्रोंका क्षय, चातुर्थिक ज्वरादि रोग, परदेशमें जाना, बंधन, स्थानकी हानि, महाव्याधि, नीच स्त्रीके वशसे विग्रह, अभिघात आदि उग्र कर्मसे मृत्यु, युद्धकी यात्रामें पराजय, रोगसे पीड़ा और शरीरका क्षय होता है ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

राहुर्हृद्रोगतन्मूर्च्छाघातादिभ्यो भयं भवेत् ।
सर्वकार्येषु सर्वत्र राहुर्विघ्नप्रदायकः ॥
शूद्रस्त्रीविधवाप्राप्तिर्ब्रह्मद्वेषश्च जायते ॥१३५॥

राहुके वेधसे हृदयरोग, मूर्च्छारोग, घात आदिका भय, सब कामोंमें सर्वत्र विघ्न, शूद्रकी स्त्रीकी वा विधवा स्त्रीकी प्राप्ति और ब्राह्मणोंसे वैर होता है ॥ १३५ ॥

केतुर्धान्यहरः स्त्रीषु हानी राजादिकं भयम् ।
प्राप्याप्राप्तिर्देहपीडा यद्वा तद्वा परम्परा॥१३६॥

केतुके वेधमें धान्यका हरण, स्त्रीकी हानि, राजा आदिसे भय, मिलने योग्य वस्तुकी अप्राप्ति, देहमें पीड़ा, और ऐसेही अन्य अशुभ फल परम्परासे जानना । क्योंकि ॥ १३६ ॥

शनिवत्कुजवच्चैव राहुकेत्वोः समं फलम् ॥१३७॥

शनि और मंगलके समान राहु तथा केतुका फल होता है ॥ १३७ ॥

रविभौमार्कवेधेन युक्तो वा हिमगुर्यदा ।
त्रिजन्मसु शिरोरोगो ज्वरोदरभगंदराः ॥
भवन्तिरक्तपित्तादिडाकिनीशाकिनीभयम्१३८॥

सूर्य, मंगल और शनिके वेधमें जो चंद्रमा भी युक्त हो तो तीन जन्मोंमें शिरमें रोग, ज्वर, उदर,

भगंदर तथा रक्तपित्त आदि रोग और डाकिनी डाकिनीसे भय होता है ॥ १३८ ॥

यस्मिन्नृक्षे संस्थितो वेधकर्ता
पापः खेटः सोऽन्यभं याति यस्मिन् ॥
काले तस्मिन् मंगलं पीडितानां
प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात् कदाचित् १३९

पाप ग्रह जिस नक्षत्र परसे वेध करता हो उस नक्षत्रको छोडकर जिस समय दूसरे नक्षत्र पर चला जावे अर्थात् उसका वेध निकल जावे उस समय वही ग्रह अपने वेधके अशुभ फलको मिटाकर निश्चय शुभफल दायक हो जाता है ॥ १३९ ॥

चन्द्रे मिश्रफलं पुंसां रतिलाभश्च भार्गवे ।
बुधवेधे भवेत्प्रज्ञा जीवः सर्वफलप्रदः ॥ १४० ॥

चन्द्रमाके वेधसे मिश्रफल (अर्थात् पूर्ण चन्द्रमासे शुभ और क्षीण चन्द्रमासे अशुभ), शुक्रके वेधसे रति-लाभ (स्त्रीसंभोगादि सुखकी प्राप्ति), बुधके वेधसे उत्तम बुद्धि और बृहस्पतिके वेधसे समस्त कामोंके फलकी प्राप्ति होती है ॥ १४० ॥

चन्द्रे मिश्रफलं पुंसां युद्धे जयःशुभो भवेत् ॥ १४१ ॥
भूषणं वस्त्रमांदोलं यानशय्याशनादिकम् ।
सर्वव्याधिविनाशश्च पूर्णचन्द्रस्य वेधतः॥ १४२ ॥

चन्द्रमाके वेधसे मिश्रफल होता है अर्थात पूर्णचद्रमा-के वेधसे युद्धमें जय तथा शुभ,आभूषण, वस्त्र, पालकी, वाहन, शय्या, भोजनादिकी प्राप्ति और सब प्रकारके रोगोंका नाश होता है ॥ १४१ ॥ १४२ ॥

कार्यहानिर्मनस्तापो देहक्षोभादिरोगकृत् ।
प्रवासो बंधनं चैव क्षीणचन्द्रस्य वेधतः ॥ १४३ ॥

क्षीण चंद्रमाके वेधसे कार्यकी हानि, मनको ताप, देहमें संताप आदि रोग, प्रवास और बंधन होता है ॥ १४३ ॥

बुधे स्त्रीपुत्रविद्यार्थिराजानुग्रहशान्तिकम् ।
विवाहोराजसन्मानंकृषिवाणिज्यसेवकाः॥ १४४ ॥
बंधमोक्षो व्याधिनाशो बुधवेधेन सिद्ध्यति ।
बुधवेधे भवेत्प्रज्ञा राज्यलाभो यशस्तथा॥ १४५ ॥

बुधके वेधसे स्त्री, पुत्र तथा शिष्यसे सुख प्राप्ति,राजा-की कृपा,शान्ति,विवाह,राजासे मान, खेती,व्यापार तथा

नौकरसे फलप्राप्ति, कैदसे छूटना, रोगका नाश, उत्तम बुद्धि, राज्यका लाभ और यश मिलता है॥ १४४।१४५॥

अस्तगे क्रूरसंयुक्ते शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा ।
नीचक्षेत्रगते वापि विपरीतफलं त्विदम् ॥१४६॥

यदि वेध करता बुध अस्त हो, वा क्रूर ग्रहसे युक्त हो, वा शत्रुकी राशिमें हो, वा नीच राशिमें हो तो पूर्वोक्त सर्व शुभ फलका उलटा (अशुभ) फल होता है ॥१४६॥

गुरौ सर्वार्थसिद्धिश्च राजानुग्रहशान्तयः ।
मंत्राभिषेकनिरतो देवपूजारतो भवेत ॥
शरीरे सुखसौभाग्यं जीवः शुभफलप्रदः॥१४७॥

बृहस्पतिके वेधसे सर्व प्रकारके अर्थकी सिद्धि, राजा-की कृपा, शान्ति, मंत्राभिषेकमें तथा देवपूजामें तत्पर, शरीरमें सुख-सौभाग्य और सब प्रकारसे शुभ फल होता है ॥ १४७ ॥

क्रूरग्रहयुते चैव मरणं व्याधिपीडनम् ॥ १४८ ॥
राजक्षोभः कार्यनाशस्तथा चैवापवादकः ।
मनःक्लेशः प्रवासादि स्त्रीपुत्ररोगबंधनम् ॥१४९॥

यदि वेध करता बृहस्पति क्रूर ग्रहसे युक्त हो तो मृत्यु, व्याधिसे पीड़ा, राजाका कोप, कार्यका नाश, अपकीर्ति, मनमें क्लेश, प्रवास आदि, स्त्री तथा पुत्रको रोग और बंधन होता है ॥ १४८ ॥ १४९ ॥

भृगुपुत्रेण योग्या स्त्री राजानुग्रहशान्तयः ।
स्त्रीसंयोगफलप्राप्तिर्विवाहे सौख्यमेव च ॥१५०॥
जलधान्यादिवस्तूनां शुक्रस्यापि च वर्द्धनम् ।
पुत्रपौत्रकलत्रं च धनधान्यसुखानि च ॥१५१॥

शुक्रके वेधसे योग्य स्त्रीकी प्राप्ति, राजाकी कृपा, शान्ति, स्त्रीके संयोगसे फलप्राप्ति, विवाहमें सुख, जल धान्य आदि वस्तुओंकी तथा वीर्यकी वृद्धि, पुत्र, पौत्र, स्त्री, धन, धान्य और सुखकी प्राप्ति होती है ॥ १५० ॥ १५१ ॥

भार्गवे क्रूरयुक्ते च धनहानिः पशुक्षयः ।
कलहः स्त्रीभिरेवं स्यात् सर्वहानिर्न संशयः१५२

यदि वेध करता शुक्र क्रूर ग्रहसे युक्त हो तो धनकी हानि, पशुओंका क्षय, स्त्रियोंसे कलह, ऐसी सर्व प्रकारसे निश्चय हानि होती है ॥ १५२ ॥

पक्षादितात्कालिकग्रहप्रकरणम् ।

मेषादिमासपक्षाहःक्षणतात्कालिकग्रहान् ।
उपग्रहांश्च लत्ताश्च क्रमादेताँल्लिखेत्तथा ॥१५३॥

मेषादि राशियोंके, मासके, पक्षके, दिनके और क्षण-के तात्कालिक ग्रह; उपग्रह और ग्रहलत्ताको लिखे। इनमें गणितसे प्राप्त ग्रहोंको मासमंज्ञक जाने। और पक्षादि तात्कालिक ग्रह अब कहते हैं। तथा उपग्रह और लत्ता-को आगे कहेंगे ॥ १५३ ॥

पक्षग्रहाः ।

सूर्यस्थितर्क्षमारभ्य द्वादशे केतुरुच्यते ।
केतोः सप्तदशे सौम्यःसौम्याच्चतुर्थभे भृगुः १५४॥
भृगोर्मनौ तमः प्रोक्तो राहोरष्टादशे कुजः ।
कुजात्त्रयोदशे जीवो जीवाद्दिग्भेऽर्कनन्दनः
शनेः पञ्चदशे चन्द्र एते पक्षग्रहाः स्मृताः १५५॥

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र स्थानसे १२ वें नक्षत्र पर केतु, केतुसे १७ वें बुध,बुधसे ४थे शुक्र, शुक्रसे १४वें राहु, राहुसे १८वें मंगल, मंगलसे १३वें बृहस्पति,

बृहस्पतिसे १० वें शनि, और शनिसे १५ वें नक्षत्र पर चंद्रमा; इस क्रमसे ये पक्षके ग्रह जानने ॥ १५४ ॥ १५५ ॥

दिनग्रहाः ।

चन्द्रस्थितर्क्षमारभ्य भूसुतः सप्तमे स्थितः १५६॥
कुजाच्चतुर्थे सौम्यस्तु सौम्यात्पञ्चमगो गुरुः ।
गुरोः षष्ठे भृगुश्चैव भृगोः सप्तमभे शनिः॥१५७॥
शनेर्नवमभे भानुर्भानोर्नवमभे तमः ।
राहोर्नवमभे केतुश्चैते दिनखगा स्मृताः ॥१५८॥

जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा हो उस नक्षत्र स्थानसे ७वें नक्षत्र पर मंगल, मंगलसे ४ थे बुध, बुधसे ५ वें बृहस्पति, बृहस्पतिसे ६ठे शुक्र, शुक्रसे ७वें शनि, शनिसे९ वें सूर्य, सूर्यसे ९ वें राहु और राहुसे ९ वें नक्षत्र पर केतु-- इस क्रमसे ये दिनके ग्रह जानने ॥ १५६–१५८ ॥

क्षणग्रहाः ।

रामबाणपुरोरंध्रवसुरत्नगजापुरः ।
आदित्यादिग्रहाः सर्वै क्षणसंज्ञाश्च खेचराः १५९

जिस नक्षत्र पर सूर्य स्थित हो उस नक्षत्र स्थानसे ३ रे नक्षत्र पर चन्द्र, चन्द्रसे ५ वे मंगल, मंगलसे ७वें बुध, बुधसे ८ वें बृहस्पति, बृहस्पतिसे ८ वें शुक्र, शुक्रसे १४ वें शनि, शनिसे ८वें राहु और राहुसे ७ वें नक्षत्र पर केतु—इस क्रमसे ये क्षणके ग्रह जानने ॥ १५९ ॥

पक्षवर्तिपक्षबलं नित्यवेधे समादिशेत् ।
आश्चर्यं हि नित्यफलं यदुक्तं वेधमागतः॥१६०॥

पक्षके ग्रहोंसे पक्षमें, दिनके ग्रहोंसे दिनमें और क्षणके ग्रहोंसे क्षणमें तात्कालिक आश्चर्यरूप वेधफल पूर्वोक्त वेधकी रीतिके अनुसारसे ही जाने ॥ १६० ॥

ग्रहबलप्रकरणम् ।

स्वक्षेत्रस्थे बलं पूर्णं पादोन मित्रभे ग्रहे ।
अर्धं समगृहे ज्ञेयं पादं शत्रुगृहे स्थिते॥ १६१ ॥

सौम्य तथा क्रूर ग्रहोंका स्थान बल अपनी राशि पर ग्रह हो तो पूर्ण—चार पाद, मित्रकी राशि पर हो तो तीन पाद, समकी राशि पर हो तो दो पाद और शत्रुकी राशि पर हो तो एक पाद बल होता है ॥ १६१ ॥

इदं च सौम्यक्रूराणां बलं स्थानवशात्समम् ।
एतदेव फलं बोध्यं सौम्ये क्रूरे विपर्ययात्॥ १६२॥

सौम्य तथा क्रूर ग्रहोंका स्थान बल तो समान है; परन्तु फलमें विपरीतता है। अर्थात् सौम्योंका तो जितना स्थान बल हो उतना ही फल है;क्रूरोंका तो उस स्थानबलसे उलटा फल जानना । जैसा आगेके दो श्लोकोंमें कहा है ॥ १६२ ॥

स्वक्षेत्रस्थे फलं पूर्णं पादोनं मित्रभे शुभे ।
अर्धं समगृहे ज्ञेयं पादं शत्रुगृहे स्थिते ॥१६३॥

सौम्यग्रहोंका स्थानफल अपनी राशिपर हो तो पूर्ण (२०), मित्रकी राशिपर हो तो पौन (१५), समकी राशिपर हो तो आधा (१०), और शत्रुकी राशिपर हो तो चौथाई (५) होता है॥ १६३ ॥

शत्रुगृहे स्थिते पूर्णं पादोनं समवेश्मनि ।
अर्धं मित्रगृहे ज्ञेयं पादं पापे स्ववेश्मनि॥१६४॥

क्रूर गहोंका स्थानफल शत्रुकी राशिपर हो तो पूर्ण (२०), समकी राशिपर हो तो पौन (१५),

मित्रकी राशि पर हो तो आधा (१०) और अपनी राशिपर हो तो चौथाई (५) होता है ॥ १६४ ॥

स्थानवेधसमायोगे यत्संख्यं जायते बलम् ।
तत्संख्यं वेध्यवस्तूनां फलं ज्ञेयं विचक्षणैः॥१६५॥

वेध करनेवाले ग्रहका जितना स्थानबल प्राप्त हो उतनाही विधी हुई वस्तुका वेधफल विचक्षणोंको जानना चाहिये ॥ १६५ ॥

वक्रग्रहे फलं द्विघ्नं त्रिगुणं स्वोच्चसंस्थिते ।
स्वभावजं फलं शीघ्रे नीचस्थोऽर्धफलो ग्रहः १६६

स्थानफल देनेवाला ग्रह जो वक्री हो तो पूर्वोक्त प्राप्त फलका दूना, शीघ्र गतिमें हो तो स्वभावानुकूल (अर्थात जितना फल आया उतना ही), उच्च राशि पर हो तो तिगुना, और नीच राशिपर हो तो आधा फल होता है ॥ १६६ ॥

ग्रहाः क्रूरास्तथा सौम्या वक्रमार्गोच्चनीचगाः ।
स्थानं च बोध्यमित्यवं फलं ज्ञात्वाफलं वदेत् १६७

क्रूर तथा सौम्य ग्रहोंको, वक्री तथा मार्गी गतिको, उच्च तथा नीच राशिको, और स्वमित्र, सम तथा

शत्रुस्थानको जाने, फिर तदनुसार पूर्वोक्त रीतिसे बलको जानके फल कहे ॥ १६७ ॥

मित्रसमशत्रुज्ञानम् ।

सुहृदश्चन्द्रभौमेज्या ज्ञःसमोऽन्येऽरयो रवेः ।
तीक्ष्णांशुःशशिजोमित्रेसमाःशेषानिशापतेः १६८
ज्ञोऽरिर्भौमस्य शुक्रार्की समावन्ये सुहृत्खगाः ।
मित्रेऽर्कशुक्रौ ज्ञस्येन्दुः शत्रुर्मध्याः परेग्रहाः १६९
सूरेः सौम्यसितौ शत्रू मध्यो मन्दः परेऽन्यथा ।
ज्ञार्की मित्रे कवेर्मध्यो कुजेज्यावन्यथाऽपरे १७०
शुक्रज्ञौ सुहृदौ चार्केः समो जीवोऽन्यः परे १७१

सूर्यके—चन्द्र, मंगल, बृहस्पति मित्र; बुध, सम; और शुक्र, शनि शत्रु हैं। चन्द्रमाके—सूर्य, बुध मित्र; और मंगल, गुरु, शुक्र, शनि सम हैं। मंगलके-सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति मित्र; शुक्र, शनि सम; और बुध शत्रु हैं। बुधके—सूर्य, शुक्र, मित्र; मंगल, बृहस्पति, शनि सम; और चन्द्रमा शत्रु हैं। बृहस्पतिके—सूर्य, चन्द्र, मंगल मित्र; शनि सम; और बुध, शुक्र शत्रु हैं। शुक्रके—बुध, शनि मित्र; मंगल, बृहस्पति सम; और सूर्य,

चन्द्रमा शत्रु हैं । शनिके—बुध, शुक्र मित्र; बृहस्पति सम; और सूर्य, चन्द्र, मंगल शत्रु हैं । इसका चक्र आगे लिखा है ॥ १६८ । १६९ । १७० । १७१ ॥

मैत्रीचक्रम् ।

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
मित्र	चं, मं, बृ	सू, बु	सू, चं, बृ	सू, शु	सू, चं, मं	बु, श	बु, शु
सम	बु	मं, बृ, शु, श	शु, श	मं, बृ, श	श	मं, बृ	बृ
शत्रु	शु, श	०	बु	चं	बु, शु	सू, चं	सू, चं, मं

ग्रहक्षेत्रज्ञानम्

मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके ।
तुलाऽथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुंभमीनकौ १७२॥

१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धन, १० मकर, ११ कुंभ और १२ मीन-ये मेषादि द्वादश राशि कहाती हैं ॥ १७२ ॥

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाभृतोः ।

बुधः कन्यामिथुनयोःकर्कस्वामी च चद्रमाः१७२
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः शनिर्मकरकुंभयोः ।
जीवो धनुर्मीनयोश्च कथितो गणकोत्तमैः॥१७४

पूर्वोक्त राशियोंमेंसे १।८ का स्वामी मंगल, २।७ का शुक्र, ३।६ का बुध, ४ का चन्द्रमा, ५ का सूर्य, १०।११ का शनि और ९।१२ का स्वामी गुरु उत्तम ज्योतिर्विदोंने कहा है; अर्थात् इन राशियोंको ग्रहोंका स्थान वा क्षेत्र माना है जिसका चक्र आगे लिखा है ॥ १७३ ॥ १७४ ॥

स्वक्षेत्रादिचक्रम् ।

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
स्वक्षेत्र	५	४	१।८	३।६	९।१२	२।७	१०।११
मित्र क्षेत्र	४ १।८ ९।१२	५ ३।६	५ ४ ९।१२	५ २।७	५ ४ १।८	३।६ १०।११	३।६ २।७
सम क्षेत्र	३।६	१।८ २।७ ९।१२ १०।११	२।७ १०।११	१।८ ९।१२ १०।११	१० ११	१।८ ९।१२	९ १२
शत्रु क्षेत्र	२।७ १०।११	०	३।६	४	३।६ २।७	५ ४	५ ४ १।८

उच्चनीचसमस्थानज्ञानम् ।

मेषो वृषो मृगः कन्या कर्कमीनतुलाधराः ।
आदित्यादिग्रहोच्चाः स्युर्नीचंयत्तस्यसप्तमम् १७५

सूर्य मेषका, चन्द्रमा वृषका, मंगल मकरका, बुध कन्याका, बृहस्पति कर्कका, शुक्र मीनका और शनि तुलाका उच्च होता है । और इन उच्च राशियोंसे सातवीं राशियोंपर सूर्यादि ग्रह नीच होते हैं; **अर्थात्** सूर्य तुलाका, चन्द्रमा वृश्चिकका, मंगल कर्कका, बुध मीनका, बृहस्पति मकरका, शुक्र कन्याका और शनि मेषका नीच जानना ॥ १७५ ॥

परमोच्चा दिशो रामा अष्टाविंशत्तिथीन्द्रियाः ।
सप्तविंशास्तथा विंशाः सूर्यादीनां तथांशकाः १७६

सूर्य मेषके १० अंशपर, चन्द्रमा वृषके ३ अंश-पर, मंगल मकरके २८ अंशपर, बुध कन्याके १५ अंशपर, बृहस्पति कर्कके ५ अंशपर, शुक्र मीनके २७ अंशपर और शनि तुलाके २० अंशपर परम उच्च होता है ॥ १७६ ॥

परमोच्चात्परं नीचमर्धचक्रान्तसंख्यया ।

ग्रहोंके परम उच्च (राशि अंश) में छः (६) राशि मिलानेसे परम नीच (राशि अंश) होते हैं ।

उच्चान्नीचाच्च यत्तुर्यं समस्थानं तदुच्यते ॥१७७॥

ग्रहोंकी उच्च राशिसे और नीच राशिसे चौथी राशिको समस्थान अर्थात् उच्च और नीचका मध्य-स्थान कहा है ॥ १७७ ॥

राहुकेतुस्वक्षेत्रादिज्ञानम् ।

कन्या राहुगृहं प्रोक्तं मिथुनं स्वोच्चसंज्ञितम् ।
नीचं धनुः समाख्यातं फलं वर्णश्च मन्दवत् १७८

राहुका कन्या राशि स्वक्षेत्र, मिथुन राशि उच्च, धन राशि नीच और फल तथा वर्ण आदि शनिके तुल्य हैं ॥ १७८ ॥

केतोर्मीनः स्वगृहं स्याद्धनुरुच्चमिति स्मृतम् ।
नीचस्थानं नृयुग्मं स्याद्राहुकेत्वोःसमंफलम् १७९

केतुका मीन राशि स्वक्षेत्र, धन राशि उच्च, मिथुन राशि नीच और फल राहु तथा केतुका समान है॥ १७९॥

राहुकेत्वोः पुनर्मैत्री शत्रुताऽन्यान् ग्रहान् प्रति ।

राहु तथा केतुकी आपसमें मित्रता है, और दूसरे ग्रहोंसे शत्रुता है ।

मुहूर्तप्रकरणम् ।

तिथिराश्यंशनक्षत्रं विद्धं क्रूरग्रहेण यत् ।
सर्वेषु शुभकार्येषु वर्जयेत्तत्प्रयत्नतः ॥ १८० ॥

तिथि, राशि, अंश (नवांश) और नक्षत्रमेंसे जो क्रूर ग्रहसे विधा हो उसको समस्त शुभ कार्योंमें यत्नसे त्याग देना चाहिये ॥ १८० ॥

न नन्दति विवाहे च यात्रायां न निवर्तते ।
न रोगान्मुच्यते रोगी वेधवेलाकृतोद्यमः॥१८१॥

विधे हुए तिथ्यादिकोंमें विवाह करे तो आनन्द नहीं पाता; यात्रा करे तो वापस नहीं आता; और रोग-का प्रारंभ हो तो रोगी रोगसे नहीं छूटता ॥ १८१ ॥

स्थाननाशो राशिवेधे हानिर्नक्षत्रवेधतः ।
अंशवेधे भवेन्मृत्युः क्रूरग्रहफलं त्विदम् ॥१८२॥
राशिनक्षत्रांशवेधे मृत्युर्भवति नान्यथा ।

क्रूर ग्रह राशिको वेधे तो स्थानका नाश, नक्षत्रको वेधे तो हानि, अंशको वेधे तो मृत्यु और इन तीनों-

हीको वेध तो निश्चय मरण हो जाता है; इसमें संशय नहीं ॥ १८२ ॥

क्रूरदृष्टिर्गता यत्र शुभं तत्र विवर्जयेत् ॥१८३॥
रविदृष्टिर्गता यत्र मनसः खेदमाप्नुयात् ।
भौमदृष्टौ वधो युद्धं मृत्युर्भवति निश्चितम् १८४
सौरिदृष्टौ भवेद्धानिर्देहपीडा तथा भवेत् ।
राहुणा घातपातश्च केतुर्विषप्रदो भवेत् ॥१८५ ॥

राशि, नक्षत्र और अंश इनमेंसे जिस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो उसको भी शुभ कार्योंमें वर्ज देना चाहिये । क्योंकि सूर्यकी दृष्टिसे मनको खेद, मंगलकी दृष्टिसे वध, युद्ध तथा निश्चय मृत्यु; शनिकी दृष्टिसे हानि तथा देहमें पीड़ा, राहुकी दृष्टिसे घावका लगना और केतुकी दृष्टिसे विष (जहर) होता है ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥

शुभग्रहाणां दृष्टिश्चेत्सर्वसिद्धिः प्रजायते ।
बुधदृष्टौ भवेत्प्रज्ञा गुरुदृष्टिर्यदा भवेत ॥१८६॥
क्षेमं लाभो जयः सौख्यं शुक्रः शुभफलप्रदः ।

जिस पर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो, उस राश्यादिमें कार्य करनेसे सब प्रकारके कामोंकी सिद्धि होती है ।

हो तो अपस्मार (मृगी) रोगका भय, और शनि हो तो शूलरोग कहना चाहिये ॥ १८९ ॥

नक्षत्रवेधसंयुक्ते चक्षुःपीडा प्रजायते ।
मनस्तापस्तथोद्वेगो मतिभ्रंशोऽथ जायते॥१९०॥

क्रूर ग्रहका वेध नामके नक्षत्रको हो तो नेत्रपीड़ा, मनको क्लेश तथा उद्वेग और मति भ्रष्ट हो जावे॥१९०॥

क्रूरैर्नामाक्षरैर्विद्धे दाघः शोषो ज्वरो भवेत् ।
पित्तोद्रेकस्तथा छर्दिरिति ज्ञेयं विचक्षणैः॥१९१॥

क्रूर ग्रहका वेध नामके अक्षरको हो तो शरीरमें दाह, शोष वा क्षयरोग, ज्वरपीड़ा, पित्तप्रकोपसे उलटी आदिकी पीड़ा होवे ॥ १९१ ॥

स्वरवेधे मुखे पीडा कर्णव्याधिस्तथैव च ।
दन्तानां पीडनं तत्र क्रूरवेधे न संशयः ॥१९२॥

क्रूर ग्रहका वेध नामके स्वरको हो तो मुखमें रोग, दन्तपीड़ा और कानमें पीड़ा होवे ॥ १९२ ॥

तिथिवेधे त्वचां पीडा गडगुल्मादिका तथा ।
शिरोर्तिपादशोफश्च सर्वसन्धिषु पीडनम्॥१९३॥

क्रूर ग्रहका वेध नामकी तिथिको हो तो शरीरकी त्वचामें खुजली आदिका कष्ट, उदरमें गडगुल्म आदि रोग, शिरमें पीड़ा, पगोंमें सूजन और सर्व सन्धिमें अत्यन्त पीड़ा होवे ॥ १९३ ॥

राशिवेधे भवेद्रोगो मन्दाग्निघातकोपनम् ।
श्लेष्मा च जायते नूनमन्तर्नाडीव्यथाभवेत् १९४

क्रूर ग्रहका वेध नामकी राशिको हो तो अग्निमन्दका रोग, जल आदिकी घात, क्रोधका प्रकोप, कफका विकार और अन्तर्नाड़ीकी व्यथा अर्थात् कोशेकी बीमारी होवे ॥ १९४ ॥

वेधस्थाने रणे भङ्गो दुर्गे खण्डः प्रजायते ।
कविप्रवेशनं तत्र योधघातश्च तत्र वै ॥ १९५ ॥

विधे हुए स्थानमें संग्राम करे तो भंग हो (अर्थात् पूर्वादि कामसे सर्वतोभद्रचक्रमें जिस दिशाके नक्षत्रादि विधे उस दिशासे भंग होता है), ऐसे ही किला विधे तो खंडित हो, और विधे हुए स्थानमें कवि प्रवेश करे (अर्थात् बलवान् शत्रुपर मौका पाके अचानक धावा करे) तो युद्धसे घाव पावे ॥ १९५ ॥

अस्तदिशाप्रकरणम् ।

यत्र पूर्वादिकाष्ठाया वृषराश्यादिगो रविः ।
सा दिशाऽस्तमिता ज्ञेया तिस्रःशेषाःसदोदिताः ॥

इस सर्वतोभद्रचक्रमें वृष आदि तीन तीन राशि पूर्वादि दिशाओंमें लिखी हैं अर्थात् वृष, मिथुन, कर्क पूर्वमें; सिंह, कन्या, तुला दक्षिणामें; वृश्चिक, धन, मकर पश्चिममें और कुंभ, मीन, मेष उत्तरमें लिखी हैं। उनमें से जिस दिशाकी राशियोंमें सूर्य हो वह एक दिशा तीन महीनोंतक अस्त हो जाती है और शेष नव राशियोंकी तीन दिशाएँ ९ महीनों तक सदा उदय रहती हैं ॥ १९६ ॥

ईशानस्थाः स्वराः प्राच्यां ज्ञेया आग्नेयगा यमे । नैर्ऋत्यस्थास्तु वारुण्यां सौम्यायां वायुगा मताः ॥ १९७ ॥

ईशानकोणमें के स्वर पूर्वमें, अग्निकोण में के स्वर दक्षिणमें, नैर्ऋत्यकोण में के स्वर पश्चिममें और वायव्यकोणमें के स्वर उत्तरमें अर्थात् ये स्वर इन दिशाओंके साथ अस्त होते हैं ॥ १९७ ॥

नक्षत्राणि स्वरा वर्णा राशयस्तिथयो दिशः ।
ते सर्वेऽस्तंगता ज्ञेया यत्र भानुस्त्रिमासिकः॥१९८॥

जिस दिशाकी राशियोंमें सूर्य हो उस दिशाके नक्षत्र, स्वर, वर्ण, राशि, तिथि और दिशा ये सब तीन महीने तक अस्त हुए जानने । और शेष तीन दिशाओंके नक्षत्रादि ९ महीने तक उदय जानने॥१९८॥

नक्षत्रेऽस्ते रुजो वर्णे हानिः शोकः स्वरेऽस्तगे ।
राशौविघ्नस्तिथौ भीतिः पञ्चास्ते मरणं ध्रुवम्॥१९९॥

जिसका नक्षत्र अस्त हो तो रोग, वर्ण अस्त हो तो हानि, स्वर अस्त हो तो शोक, राशि अस्त हो तो विघ्न, तिथि अस्त हो तो भय और पांचोंही अस्त हों तो निश्चय उसका मरण होता है ॥ १९९ ॥

यात्रा युद्धं विवादश्च द्वारं प्रासादहर्म्ययोः ।
न कर्तव्यं शुभं चान्यदस्तवर्णादिके नरैः॥२००॥

जिनके नामादि अस्त हों उन मनुष्योंको अस्त-दिशाभिमुख यात्रा, युद्ध, विवाद, महल वा घरका दरवाजा तथा और भी शुभ कर्म ऐसे अन्य (अशुभ कर्म भी) न करने चाहियें ॥ २०० ॥

अस्ताशायां स्थितं यस्य यदा नामाद्यमक्षरम् ।
तदा तु सर्वकार्येषु ज्ञेयो दैवहतो नरः ॥ २०१ ॥

क्योंकि जिस मनुष्यके नामका आदि अक्षर जिस समय अस्तदिशामें स्थित हो, वह मनुष्य उस समय सब कामोंमें दैवहत (भाग्यहीन) हो जाता है ॥ २०१ ॥

सग्रहेऽस्तमिते विद्धे पापैश्चैव यदाक्षरे ।
सर्वेषां प्राणसन्देहः प्राणिनां जायते ध्रुवम् २०२॥

यदि अस्तंगत अक्षर पापग्रहसे युक्त हो (अर्थात् वह अक्षर नक्षत्रके जिस पादका हो उसी पादपर पाप-ग्रह भी स्थित हो) और उस अक्षरको किसी दूसरे पापी ग्रहका वेध हो तो उन सब प्राणियोंको निश्चय प्राण रहने में सन्देह होता है ॥ २०२ ॥

कवौ कोटे तथा द्वन्द्वे चतुरंगे महाहवे ।
उद्यमोऽस्तगतैर्योधैर्वर्जनीयो जयार्थिभिः ॥२०३॥

कवियुद्ध (अचानक धावा करना), कोटयुद्ध (किले में लड़ना),द्वन्द्वयुद्ध (कुश्ती आदि), चतुरंगसेना (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल)के युद्ध; और महान् संग्राममें

विजयकी इच्छा करनेवाले अस्तगत योद्धाओंको उद्यम न करना चाहिये ॥ २०३ ॥

उदयास्तमनं तस्माच्चिन्तयेद्दैवविन्नरः ।
येन राजा स्वकीयैस्तु शत्रुभिर्नाभिभूयते ॥२०४

इस वास्ते राजाके ज्योतिर्विदको चाहिये कि स्वराजाके अक्षरादि वर्गके उदय और अस्तको यत्नसे चिन्तवनकरे, जिससे राजा अपने शत्रुओंसे पराजयको प्राप्त न हो ॥ २०४ ॥

स्वराष्ट्राभ्युदयं ज्ञात्वा शत्रुराष्ट्रस्य संक्षयम् ।
ज्ञात्वा स्वलाभमत्यन्तं लभते चोन्नतिं नृपः २०५

अपने राज्यका वर्ग उदय तथा शत्रुके राज्यका वर्ग क्षय (अस्त) और अपनेको अत्यन्त लाभ जानके युद्ध करनेवाला राजाही वृद्धिको प्राप्त होता है ॥ २०५ ॥

दृष्ट्वा नामोदयं चक्रे जन्मराश्युदयं तथा ।
ग्रहानुकूलतां स्वस्य ज्ञात्वा दिग्विजयीभवेत् २०६

सर्वतोभद्रचक्रमें अपने नामके अक्षरका उदय तथा जन्म राशिका उदय और दूसरे ग्रहोंकी अनुकूलताको जाननेवाला (अर्थात् दैवज्ञकी आज्ञामें वर्तनेवाला)

अस्त हो तथा वेध भी शुभाशुभ ग्रहोंका समान ही हो तो फिर जो राजा प्रथम चढ़कर जावेगा उसकी जय होगी ॥ २०९ ॥

नक्षत्रेऽभ्युदिते पुष्टिर्वर्णे लाभः स्वरे सुखम् ।
राशौ जयस्तिथौ तेजः पदाप्तिः पंचकोदये२१०

नक्षत्रके उदयसे पुष्टि, वर्णसे लाभ, स्वरसे सुख, राशिसे जय, तिथिसे तेज और पांचोंहीके उदयसे अपूर्व पदकी प्राप्ति होती है ॥ २१० ॥

उदिते मित्रलाभः स्याद्गृहवृद्ध्यर्थसंपदः ।
योधमुख्या प्रवर्तन्ते यान्ति नाशं तदारयः२११

वर्णादिके उदयसे मित्रका लाभ, घरकी वृद्धि तथा अर्थसंपत्ति होती है और मुख्य शूरवीर योद्धा युद्धमें जाके शत्रुओंका नाश करते हैं ॥ २११ ॥

प्रश्नलग्नप्रकरणम् ।

प्रश्नाक्षराद्यवर्णस्य वेधं पूर्वं विचारयेत् ।
पापे स्यात्पापमुद्दिष्टं मुख्यबाध्यं तथा वदेत्२१२

राजाही दिग्विजयी (अर्थात् सब दिशाओंके शत्रुओं को जीतनेवाला) होता है ॥ २०६ ॥

यद्दिशोऽस्तमितो वर्गस्तस्यां यात्रां नियोजयेत् ।
तत्र शत्रुबलं जित्वा क्षिप्रं राजा प्रवर्तते ॥२०७॥

जिस दिशाका वर्ग (नक्षत्रादि) अस्त हो गया हो उस दिशापर राजा युद्धके वास्ते यात्रा करे तो वहां शत्रुके बलको जीतके शीघ्रही उस राज्यको अपने स्वाधीन कर लेता है ॥ २०७ ॥

नृपवर्गेषु ये वर्णाः समानास्तमनोदयाः ।
मध्ये चान्ते भवेद्वेधो घातश्चापि भवेद्ध्रुवम्२०८

यदि युद्ध करनेवाले दोनों राजाओंके वर्णादि वर्ग एकही समय अस्त वा उदय हों तो अस्त समयको मध्यमें वा अन्तमें जिसके वर्णादिको क्रूर ग्रहका वेध होगा उसका निश्चय घात होता है ॥ २०८ ॥

येषां वर्गोऽस्तमायाति तस्य यात्रा मता दिशि ।
शुभाशुभसमत्वे तु पूर्वयायी जयी भवेत् ॥२०९॥

यदि दोनों राजाओंका नक्षत्रादि वर्ग एकही समय

अस्त हो तथा वेध भी शुभाशुभ ग्रहोंका समान ही हो तो फिर जो राजा प्रथम चढ़कर जावेगा उसकी जय होगी ॥ २०९ ॥

नक्षत्रेऽभ्युदिते पुष्टिर्वर्णे लाभः स्वरे सुखम् ।
राशौ जयस्तिथौ तेजः पदाप्तिः पंचकोदये२१०

नक्षत्रके उदयसे पुष्टि, वर्णसे लाभ, स्वरसे सुख, राशिसे जय, तिथिसे तेज और पांचोंहीके उदयसे अपूर्व पदकी प्राप्ति होती है ॥ २१० ॥

उदिते मित्रलाभः स्याद्गृहवृद्ध्यर्थसंपदः ।
योधमुख्या प्रवर्तन्ते यान्ति नाशं तदारयः२११

वर्णादिके उदयसे मित्रका लाभ, घरकी वृद्धि तथा अर्थसंपत्ति होती है और मुख्य शूरवीर योद्धा युद्धमें जाके शत्रुओंका नाश करते हैं ॥ २११ ॥

प्रश्नलग्नप्रकरणम् ।

प्रश्नाक्षराद्यवर्णस्य वेधं पूर्वं विचारयेत् ।
पापे स्यात्पापमुद्दिष्टं मुख्यबाध्यं तथा वदेत्२१२

प्रश्नकर्ताके मुखसे जो शब्द उच्चारण हों उनमें जो अक्षर प्रथम हो उसको किसी ग्रहका वेध है या नहीं इसका पहिले विचार करे; क्योंकि वेध होनेमें उस प्रश्नका शुभाशुभ फल वेधकर्ता ग्रहके अनुसार होता है और जो वेध किसीका भी नहीं हो तो फिर उसका फल केरलके मतानुसार वा प्रश्नलग्नानुसार होता है ॥ २१२ ॥

प्रश्नकाले भवेद्विद्धं यल्लग्नं क्रूरखेचरैः ।
तद्दुष्टं शोभनं सौम्यैर्मिश्रैर्मिश्रफलं मतम्॥२१३॥

प्रश्नकालमें जो लग्न क्रूर ग्रहोंसे विधा हो उसका फल दुष्ट, सौम्य ग्रहोंसे शुभ और क्रूर तथा सौम्य दोनों प्रकारके ग्रहोंसे मिश्र फल होता है ॥ २१३ ॥

ग्रहाऽभिन्नं तु यल्लग्नं फलं लग्नस्वभावतः ।
ज्ञातव्यं देशिकेन्द्रेण भाषितं यच्चरादिकम् २१४॥

प्रश्नकालमें जो लग्न ग्रहोंसे विधा न हो तो उस लग्नका फल चरादि स्वभावके अनुकूल जैसा ज्योतिर्विदोंने कहा है वैसा जानना चाहिये ॥ २१४ ॥

चरलग्नोदये नष्टं दुर्लभं रोगिणो मृतिः ।
जातस्यापि च तत्रैव स्वल्पमायुर्विनिर्दिशेत् २१५

चर लग्नके समयमें गई वस्तु मिलनी दुर्लभ, रोगीकी मृत्यु और जन्मनेवालेकी आयु थोड़ी होवे ॥ २१५ ॥

स्थिरलग्नोदये नष्टं स्वल्पकालेन लभ्यते ।
तत्र रोगी चिराढ्यो दीर्घायुर्लब्धजन्मवान् २१६

स्थिर लग्नके समयमें गई वस्तु थोड़े कालसे मिले, रोगी बहुत मुद्दतमें सुखी होवे और जन्मनेवालेकी आयु बहुत होवे ॥ २१६ ॥

नष्टस्य शीघ्रं लाभः स्याद्रोगी शीघ्रेण शोभनः।
मध्यायुर्लब्धजन्मात्र द्विस्वभावोदयो ध्रुवम् २१७

द्विस्वभाव लग्नके समयमें गई वस्तु जल्दीसे मिले, रोगी जल्दी अच्छा होवे, और जन्मनेवालेकी निश्चय मध्य आयु होवे ॥ २१७ ॥

एवं सर्वेषु कार्येषु प्रश्नकाले चरादिकम् ।
लग्नं विज्ञाय धीमद्भिर्निर्देष्टव्यं शुभाशुभम्।२१८।

बुद्धिमानोंको सब कामोंमें इस प्रकार प्रश्नकालमें लग्नके चरादि स्वभावको जान कर शुभाशुभ फल कहना चाहिये ॥ २१८ ॥

चरलग्नाश्च चत्वारो मेषकर्कतुलामृगाः ।
वृषसिंहाऽलिकलशाःस्थिराःशेषाद्विसंज्ञकाः २१९

मेष, कर्क, तुला तथा मकर ये ४ लग्न चर; वृष, सिंह, वृश्चिक तथा कुंभ ये ४ लग्न स्थिर और मिथुन, कन्या, धन, मीन ये ४ लग्न द्विस्वभाव हैं २१९

उभयतोवेधप्रकरणम् ।

क्रूरैरुभयतो विद्धा यस्याऽक्षरतिथिस्वराः ।
राशिर्धिष्ण्यं च पंचापि तस्य मृत्युर्न संशयः२२०

जिसके अक्षर, तिथि, स्वर, राशि और नक्षत्र इन पांचों को एकही समयमें दोनों ओरसे दो क्रूर ग्रह वेधें (अर्थात् एक दक्षिणदृष्टिसे, और दूसरा वामदृष्टिसे, अथवा एक दक्षिणसे और दूसरा संमुखसे, अथवा एक वामसे और दूसरा संमुखसे वेधें) तो उसकी निश्चय मृत्यु होती है ॥ २२० ॥

एकवेधेऽर्थनाशः स्यात्स्थानभ्रंशोऽथवा भवेत् ।
नाम्ना चोभयविद्धेन पापाभ्यांनिर्दिशेन्मृतिम् २२१

नामको एक क्रूर ग्रहका वेध हो तो अर्थका नाश, अथवा स्थानसे भ्रष्ट, और दो क्रूर ग्रहोंका दोनों ओर से वेध हो तो मृत्यु होती है ॥ २२१ ॥

कलहश्चार्थनाशश्च स्थानभ्रंशोऽथवा मृतिः ।
पापयोरुभयोर्वेधे पापयुक्तो भवेद्बुधः ॥ २२२ ॥

दो पापग्रहोंके वेधसे कलह, अर्थका नाश, स्थानका भ्रंश अथवा मृत्यु होती है, और यही फल पापग्रह- युक्त बुधके वेधसे भी होता है ॥ २२२ ॥

मंडलं नगरं ग्रामो दुर्गं देवालयं पुरम् ।
क्रूरैरुभयतो विद्धं विनश्यति न संशयः ॥२२३॥

जिस मंडल (प्रान्त, जिला), नगर, पुर, ग्राम, दुर्ग (किला), और देवालय (मंदिर आदि) को दोनों ओरसे दो क्रूर ग्रह वेधे तो उसका निश्चय नाश होता है ॥ २२३ ॥

कूर्मचक्रोक्तदेशवेधप्रकरणम् ।

कृत्तिकादित्रिकाद्ये भे क्रूरविद्धे च कूर्मतः ।
देशा नाभिस्थदेशाद्याविनश्यन्तियथाक्रमम् २२४

कूर्मचक्रमें कृत्तिकादि तीन तीन नक्षत्रोंको क्रमसे नाभि आदि नव अंगोंमें विभाग किया गया है। उनमें से जिस अंगके नक्षत्र क्रूर ग्रहसे विधें उस अंगके देश विनाशको प्राप्त होते हैं ॥ २२४ ॥

नक्षत्रवशाद्देशज्ञानम् ।

कृत्तिका रोहिणी सौम्यं कूर्मनाभिगतं त्रयम् ।
साकेतोमिथिलाचंपाकौशांबिःकौशिकीतथा२२५
अहिच्छत्रं गया विंध्यमन्तर्वेदिश्च मेखला ।
कान्यकुब्जःप्रयागश्च मध्यदेशो विनश्यति२२६॥

कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिर ये तीन नक्षत्र कूर्मचक्र के मध्यमें हैं । इनको क्रूर ग्रहका वेध हो तो साकेत देश, मिथिला, चंपा, कौशांबी, कौशिकी, अहि-च्छत्र, गया, विंध्य, अन्तर्वेदि, मेखला, कान्यकुब्ज

और प्रयाग इत्यादि मध्यदेशोंका नाश होता है ॥ २२५ ॥ २२६ ॥

रौद्रं पुनर्वसुः पुष्यः कूर्मस्य शिरसि स्थितम् ।
सगौडो हस्तिबन्धश्च पञ्चराष्ट्रं च कामरुः२२७॥
ऐन्द्रं चैव तथा ज्ञेयं मगधश्च तथैव च ।
रेवातटं च मेवासः पूर्वदेशो विनश्यति ॥२२८॥

आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य ये तीन नक्षत्र कूर्म चक्र के शिर (पूर्व) में हैं। इनको क्रूरग्रहका वेध हो तो गौड़देश, हस्तिबन्ध, पंचराष्ट्र, कामरु, ऐन्द्र, मगध, रेवातट (नर्मदाका किनारा) और मेवास इत्यादि पूर्वके देशोंका नाश होता है ॥ २२७ ॥ २२८ ॥

आश्लेषा च मघा पूर्वा पादे वाग्नेयगोचरे ।
अंगो वंगः कलिंगश्च कुर्वजाश्चैव कोशलः२२९॥
डहलाश्च जयन्द्राश्च तथा चैव स्तुलंजिका ।
उड्डियाणं वराटं च अग्निदेशो विनश्यति२३०॥

आश्लेषा, मघा और पूर्वाफाल्गुनी ये तीन नक्षत्र कूर्मचक्रके अग्निकोणके पादमें हैं। इनको क्रूर ग्रहका

वेध हो तो अंगदेश, बंग, कलिंग, कुबज, कोशल, डहल, जयन्द्र, तुलंजिक, उडीसा और बराट इत्यादि अग्निकोणके देशोंका नाश होता है ॥ २२९ ॥ २३० ॥

उत्तराहस्तचित्राश्च दक्षिणाकुक्षिमाश्रिताः ।
दर्दुरं च महेन्द्रं च वनवासं च सिंहलम् ॥२३१॥
तापीर्भीमरथा लंका त्रिकूटं मलयस्तथा ।
श्रीपर्वतश्च किष्किधा इति नश्यन्ति दक्षिणे २३२

उत्तराफाल्गुनी, हस्त और चित्रा ये तीन नक्षत्र कूर्मचक्रके दक्षिणकी कुक्षिमें हैं । इनको क्रूर ग्रहका वेध हो तो दर्दुरदेश, महेन्द्र, वनवास, सिंहल, तापीनदी, भीमरथानदी, लंका, त्रिकूटपर्वत, मलयपर्वत, श्रीपर्वत और किष्किधापर्वत इत्यादि दक्षिणके देशोंका नाश होता है ॥ २३१ ॥ २३२ ॥

स्वाती विशाखा मैत्रं च कूर्मे नैर्ऋतिगोचरे ।
नासिकं च सुराष्ट्रं च धूर्तं मालवकं तथा २३३॥
वह्निस्तथा प्रकाशश्च भृगुः कच्छं च कोकणम् ।
खेडापुरं च मोढेरं देशा नश्यन्ति तादृशाः२३४॥

स्वाती, विशाखा और अनुराधा ये तीन नक्षत्र कूर्मचक्रके नैर्ऋत्यकोणके पादमें हैं । इनको क्रूर ग्रहका वेध हो तो नासिकदेश, सोरठ, धूत, मालव, बाह्लि (बस ही), प्रकाश, भृगु, कच्छ, कोंकण (मुंबई), खेड़ापूर, और मोढेर (मरहटादेश), इत्यादि नैर्ऋत्यकोणके देशोंका नाश होता है ॥ २३३ ॥ २३४ ॥

ज्येष्ठा मूलं तथाषाढा पुच्छे कूर्मस्य संस्थिताः ।
पारेतमर्बुदं कच्छमवन्ति पूर्वमालवम् ॥ २३५ ॥
पारावतं बर्बरं च द्वीपं सौराष्ट्रसैन्धवम् ।
जलस्थाश्च विनश्यन्ति स्त्रीराज्यंपुच्छपीडने२३६

ज्येष्ठा, मूल और पूर्वाषाढा ये तीन नक्षत्र कूर्मचक्रके पुच्छ (पश्चिम) में हैं । इनको क्रूर ग्रहका वेध हो तो पारेतदेश, अर्बुद (आबू), कच्छ, उज्जयिनी, पूर्वमालव, पारावत, बर्बर, सौराष्ट्रद्वीप, सिन्धुद्वीप, जलस्थ देश (टापू) और स्त्रीराज्य इत्यादि पश्चिमके देशोंका नाश होता है ॥ २३५ ॥ २३६ ॥

उत्तराषाढभात्रीणि पादे वायव्यगोचरे ।
गुर्जराह्वं यामुनं च मरुदेशं सरस्वतीम् ॥२३७॥

जालंधरं वराटं च वालुकोदधिसंयुतम् ।
मेरुशृंगं विनश्यन्ति ये चान्यकोणसंस्थिताः २३८

उत्तराषाढा, श्रवण और धनिष्ठा ये तीन नक्षत्र कूर्मचक्रके वायव्यकोणके पादमें हैं। इनको क्रूर ग्रहका वेध हो तो गुर्जरदेश, यमुन, मरुदेश (मारवाड़), सरस्वती, जालंधर, वराट, वालुका समुद्र और मेरुशृंग इत्यादि वायव्यकोणके देशोंका नाश होता है ॥ २३७ ॥ २३८ ॥

शतभादित्रयं चैव उत्तरां कुक्षिमाश्रितम् ।
नेपालं कीरकाश्मीरं गज्जनं खुरसानकम् ॥२३९
माथुरं म्लेच्छदेशश्च खशं केदारमण्डले ।
हिमाश्रयाश्च नश्यन्ति देशा ये चोत्तराश्रिताः ॥

शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा ये तीन नक्षत्र कूर्मचक्रके उत्तरके कुक्षिमें हैं। इनको क्रूर ग्रहका वेध हो तो नेपालदेश, कीर, काश्मीर, गजनी, खुरासान, माथुर, म्लेच्छदेश, खश, केदारमंडल और हिमालयके आश्रित इत्यादि उत्तरके देशोंका नाश होता है ॥ २३९ ॥ २४० ॥

रेवती अश्विनी याम्यं पादे ईशानगोचरे ।
गंगाद्वारं कुरुक्षेत्रं श्रीकंठं हस्तिनापुरम् ॥२४१॥
अश्वचक्रैकपादाश्च गजकर्णास्तथैव च ।
विनश्यन्ति च ते सर्वे देशास्त्वीशानगोचरे२४२

रेवती, अश्विनी और भरणी ये तीन नक्षत्र कूर्म-चक्रके ईशानके पादमें हैं । इनको क्रूर ग्रहका वेध हो तो गंगाद्वार देश, कुरुक्षेत्र, श्रीकंठ, हस्तिनापुर, अश्व-चक्र, एकपाद और गजकर्ण इत्यादि ईशानके देशोंका नाश होता है ॥ २४१ ॥ २४२ ॥

यस्मिन् भागे संस्थिताः पापखेटा-
स्तद्भागस्था नाशमायान्ति देशाः ।
वेधस्थानं पीडयन्तीह नूनं
तत्रस्था वै सत्फलं दद्युरिष्टाः ॥ २४३ ॥

जिस अंगके नक्षत्रों पर क्रूर ग्रह स्थित हों उस अंगके देशोंका अनेक प्रकारसे नाश होता है । तथा जिस अंगके नक्षत्रोंको क्रूर ग्रहोंका वेध हो उस अंगके देशोंमें निश्चय किसी प्रकारसे पीड़ा होती है । और जिस

अंगके नक्षत्रोंपर शुभ ग्रह स्थित हों वा शुभ ग्रहोंका वेध हो उस अंगके देशोंमें सर्व प्रकारसे शुभ फल होता है।(यदि मिश्रयोग हो तो मिश्रफल जानना)॥ २४३॥

पृथ्वीकूर्मे समाख्याताः कृत्तिकादियमान्तकाः ।
देशादौः स्वस्वऋक्षादेरेष एव क्रमः स्मृतः२४४॥

पूर्वोक्त पृथ्वीकूर्ममें कृत्तिकाको आदि लेके ३ । ३ नक्षत्रोंसे भरणी तक ९ विभाग किये । ऐसे ही देश, नगर, ग्राम और क्षेत्रादिके कूर्ममें भी उस उसके नामके नक्षत्रको आदि लेके ३ । ३ नक्षत्रोंसे पूर्वोक्त क्रमसे ९ विभाग करे । फिर इनका वेध फल भी पूर्वोक्त विधि से जाने ॥ २४४ ॥

तौल्यं भाण्डं रसो धान्यं गजाऽश्वादिचतुष्पदम्।
सर्वं महर्घतां याति यत्र क्रूरो व्यवस्थितः२४५॥

जहां क्रूरग्रहकी वेधव्यवस्था हो वहां तौल्य (तौलसे बिकनेके पदार्थ), भांड (रत्न), रस (मधुरादि), धान्य (गोधूमादि) और हाथी घोडे आदि चौपाये, ये सब महर्घताको प्राप्त होते हैं, अर्थात् बहुत धनसे भी दुर्लभ हो जाते हैं ॥ २४५ ॥

देशद्रव्याक्षरा ये च विद्धाः खेटैः शुभाशुभैः ।
सर्वतोभद्रचक्रे च विशेषात्तच्छुभाशुभम् ॥२४६॥

देश और वस्तु इन दोनोंके नामके अक्षरको एक ही समय शुभ ग्रहका वेध हो तो उस देशमें वह वस्तु अधिक सस्ती और अशुभ ग्रहका वेध हो तो अधिक महँगी हो जाती है । यदि दोनों प्रकारके ग्रहोंका वेध हो तो बलाधिक ग्रहका फल होता है । इसका विस्तारसे निर्णय आगे अर्घप्रकरणमें लिखेंगे ॥ २४६ ॥

जातिवेधप्रकरणम् ।

कृत्तिकायां तथा पुष्ये रेवत्यां च पुनर्वसौ ।
विद्धे सति क्रमाद्वेधो वर्णेषु ब्राह्मणादिषु ॥२४७॥

कृत्तिकाको वेध हो तो ब्राह्मणोंकी जातिको, पुष्यको वेध हो तो क्षत्रियोंकी जातिको, रेवतीको वेध हो तो वैश्योंकी जातिको और पुनर्वसुको वेध हो तो शूद्रोंकी जातिको वेध जानना ॥ २४७ ॥

ग्रन्थान्तरे जातिनक्षत्रम् ।

पूर्वात्रयं तथाग्नेयं ब्राह्मणानां प्रकीर्तितम् ।

उत्तरात्रितयं पुष्यं क्षत्रियाणां विनिर्दिशेत्॥२४८
पौष्णं मैत्रं मघा चैव प्राजापत्यं विशां स्मृतम् ।
आदित्यमाश्विनं हस्तं शूद्राणामभिजित्तथा ॥
विद्धैरेभिर्द्विजातीनां कारुकाणां च शेषके२४९॥

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा तथा कृत्तिका ये ४ नक्षत्र ब्राह्मणोंके; उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा तथा पुष्य ये ४ नक्षत्र क्षत्रियोंके; रेवती, अनुराधा, मघा तथा रोहिणी ये ४ नक्षत्र वैश्योंके; पुनर्वसु, अश्विनी, हस्त तथा अभिजित् ये ४ नक्षत्र शूद्रोंके कहे हैं; और शेष (बाकी रहे) नक्षत्र कारुक (शिल्पी) आदि नीच जातियोंके माने हैं । अतः जिस नक्षत्रको वेध हो उस नक्षत्रकी जातिको वेध जानना । परन्तु वेध शुभ ग्रहका हो तो शुभ और अशुभ ग्रहका हो तो अशुभ फल होता है ॥ २४८ ॥ २४९ ॥

उपग्रहप्रकरणम् ।

सूर्यभात्पञ्चमं धिष्ण्यं ज्ञेयंविद्युन्मुखाभिधम्२५०
शूलं चाष्टमभं प्रोक्तं सन्निपातं चतुर्दशम् ।

केतुरष्टादशे प्रोक्तं उल्का स्यादेकविंशतौ॥२५१॥
द्वाविंशतितमे कंपस्त्रयोविंशे च वज्रकम् ।
निर्घातश्च चतुर्विंशे उक्ताश्चाष्टावुपग्रहाः ॥२५२॥

अश्विनीसे रेवती पर्यन्त २७ नक्षत्रोंमेंसे जिस नक्षत्र पर सूर्य स्थित हो उससे ५ वें नक्षत्र पर विद्युन्मुख, ८ वें पर शूल, १४ वें पर सन्निपात, १८ वें पर केतु, २१ वें पर उल्का, २२ वें पर कंप, २३ वें पर वज्र और २४ वें पर निर्घात ये आठ उपग्रह हैं। इसमें अभिजित् की गणना नहीं करनी॥ २५०—२५२॥

स्वस्थाने विघ्नदाः प्रोक्ताः सर्वकार्येषु सर्वदा ।
वर्जयेत्सर्वदर्क्षं तु यत्रोपग्रहसंभवम् ॥ २५३ ॥

स्वस्थान पर ये सब कामोंमें सर्वदा विघ्न देनेवाले होते हैं। अतः जिस नक्षत्रपर उपग्रह हो उस नक्षत्रको सब कामोंमें वर्ज देना चाहिये, क्योंकि—॥ २५३ ॥

विद्युन्मुखे च पतनं शूले स्याद्रक्तपातनम् ।
सन्निपाते ज्वरप्राप्तिः केतौ स्याद्देहपीडनम् २५४
उल्कायां तु भयं चैव कम्पे स्याच्छीततो भयम् ॥
निर्घाते च विषप्राप्तिर्वज्रे शस्त्रभयं भवेत् २५५॥

विद्युन्मुख उपग्रहसे ऊपरसे गिरना, शूल उपग्रहसे रुधिरका पात, सन्निपात उपग्रहसे ज्वरकी प्राप्ति, केतु उपग्रहसे देहमें पीडा, उल्का उपग्रहसे किसी प्रकारका भय, कंप उपग्रहसे शीतका भय, निर्घात उपग्रहसे विष प्राप्ति और वज्र उपग्रहसे शस्त्रका भय होता है ॥ २५४ ॥ २५५ ॥

विद्युत्पुत्रविनाशं निवेदयति पतिवधं झटितिशूलः।
दशमदिने सन्निपातःपत्युपघातं तुदेवरं केतुः२५६
द्रव्यविनाशं चोल्का परपुरुषरतां करोति वज्राख्यः
कंपःस्थानविनाशं कुलसंहारं तु निर्घातः २५७॥

यदि उपग्रह युक्त नक्षत्रमें कन्याका विवाह करे तो यह फल होता है—विद्युन्मुखसे पुत्रका नाश, शूलसे पतिका तत्काल वध, सन्निपातसे दसवें दिनमें पतिका घात, केतुसे देवरका घात, उल्कासे द्रव्यका नाश; वज्रसे पर पुरुषका भोग, कंपसे स्थानका नाश और निर्घातसे कुलका संहार जानना ॥ २५६ ॥ २५७ ॥

क्रूरवेधसमायोगे यस्योपग्रहसंभवः ।
तस्य मृत्युर्न सन्देहो रोगाद्वाथ रणेऽपिवा २५८॥

जिसके नक्षत्रादिको क्रूरग्रहका वेध हो और जन्म नक्षत्रपर उपग्रहका भी संभव हो तो उस समय उस मनुष्यकी चाहे संग्रामसे, चाहे रोगसे निश्चय मृत्यु होती है ॥ २५८ ॥

उपग्रहशान्तिः।

विद्युन्मुखो रविर्ज्ञेयः शूलश्चन्द्रः प्रकीर्तितः ॥
सन्निपातः कुजो ज्ञेयो बुधः केतुः प्रकीर्तितः॥२५९
उल्का ज्ञेया सुराचार्यो वज्रं भार्गव उच्यते।
कंपः शनैश्चरो ज्ञेयो राहुर्निर्घात एव च।
यद्येन वर्तते विद्धं पूजां तस्य तु कारयेत्॥२६०॥

विद्युन्मुखको सूर्य, शूलको चन्द्रमा, सन्निपातको मंगल, केतुको बुध, उल्काको बृहस्पति, वज्रको शुक्र, कंपको शनि और निर्घातको राहु कहा है । अतः क्रूरवेधके समय जिस उपग्रहका संभव हो उसके शान्तिके लिये उसके उक्त ग्रहकी पूजा आदि करे ॥ २५९ ॥ २६० ॥

ग्रहलत्ताप्रकरणम् ।

द्वादशं च तृतीयं च षष्ठं चाष्टमकं क्रमात् ।
लत्तयन्ति पुरोधिष्ण्यं रविभौमार्यसूर्यजाः २६१॥

अश्विनीसे रेवती पर्यन्त २७ नक्षत्रोंमेंसे जिस नक्षत्रपर ग्रह हो उस नक्षत्रसे आगेके १२वें नक्षत्रको सूर्य, तीसरेको मंगल, छठेको बृहस्पति और ८ वें को शनि लातसे ताड़न करते हैं ॥ २६१ ॥

सप्तमे पञ्चमे धिष्ण्ये नवमे पृष्ठतः क्रमात् ।
बुधशुक्रस्तमो लत्तां द्वाविंशे पूर्णचंद्रमाः ॥ २६२॥

ऐसेही अपने वर्तमान नक्षत्र स्थानसे पीछेके ७ वें नक्षत्रको बुध, ५ वें को शुक्र, ९ वें को राहु तथा केतु और २२ वें को पूर्णचन्द्रमा लातसे ताड़न करते हैं। इसमें अभिजित्की गणना नहीं करनी ॥२६२॥

रणे मृत्युस्तथा भंगं यात्रायामनिवर्तनम् ।
विवाहे विधवा नारी भानि कुर्वन्ति लत्तया २६३॥

जिस नक्षत्रपर ग्रहकी लात हो, उस नक्षत्रमें युद्ध करने को जाय तो मृत्यु अथवा भंग हो, यात्रा

करे तो पीछे नहीं आवे और विवाह करे तो स्त्री विधवा होवे ॥ २६३ ॥

सूर्ये तु वित्तहानिः स्यात्कुजराहुशनैश्चरैः ।
मरणं जीवलत्ताया बन्धुनाशो भवेत्ततः॥ २६४ ॥
शुक्रेण कार्यविभ्रंशो ह्यनर्थः शशिसूनुना ।
चन्द्रेण च महात्रासो ज्ञेयः केतुस्तु राहुवत्॥२६५॥

सूर्यकी लातसे वित्तकी हानि; मंगल, राहु तथा शनिकी लातसे मृत्यु; बृहस्पतिकी लातसे बंधुका नाश; शुक्रकी लातसे कार्यका नाश; बुधकी लातसे अर्थकी हानि; चन्द्रमाकी लातसे मोटा भय और केतुकी लातका फल राहुवत् जाने ॥२६४ ॥ २६५ ॥

रविलत्ता युते भौमे स्थाननाशो धनक्षयः ।
जन्मर्क्षे कुक्षिरोगश्च चन्द्रयोगे महद्भयम्॥२६६॥

मंगलसे युक्त जन्म नक्षत्रपर सूर्यकी लात हो तो स्थानका नाश, धनहानि तथा कुक्षिमें रोग होता है, और मंगलके साथ यदि चन्द्रमा भी हो तो महान् भय होता है ॥ २६६ ॥

कुजलत्ता युते सूर्यै गृहभंगो धनक्षयः ।
व्याधिशस्त्रादिपीडा च चन्द्रयोगे महद्भम् २६७॥

सूर्यसे युक्त जन्म नक्षत्र पर मंगलकी लात हो तो गृहका भंग, धनका नाश, रोग तथा शस्त्रादिसे पीड़ा होती है; और सूर्यके साथ यदि चन्द्रमा भी हो तो महान् भय होता है ॥ २६७ ॥

शनिलत्ता युते सूर्यै रोगपीडा महद्भयम् ।
जन्मर्क्षे चौरबाधा च चन्द्रयोगे विशेषतः॥२६८॥

सूर्यसे युक्त जन्म नक्षत्रपर शनिकी लात हो तो रोगसे पीड़ा, महान् भय तथा चौरोंसे कष्ट होता है; और सूर्यके साथ यदि चन्द्रमा भी हो तो यह फल विशेष होता है ॥ २६८ ॥

तथैव राहुकेत्वोश्च शनिवद्योजयेद् बुधः ।

जैसा शनिकी लातका फल है, वैसा ही राहु तथा केतुकी लातका फल पंडितोंको जानना चाहिये ।

बुधलत्ता युते सूर्यै बुद्धिहानिर्न संशयः ॥ २६९॥
गुरुलत्ता युते सूर्यै रोगपीडा प्रजायते ।
शुक्रलत्ता युते सूर्यै स्त्रीहानिर्मूत्रकृच्छ्रकृत्॥२७०॥

सूर्यसे युक्त जन्मनक्षत्रपर बुधकी लात हो तो निश्चय बुद्धिकी हानि, गुरुकी लातसे रोग पीड़ा और शुक्रकी लातसे स्त्रीकी हानि तथा मूत्रकृच्छ्र रोग होता है ॥ २६९ ॥ २७० ॥

वक्ष्यामि रविलत्तायां स्थितचन्द्रादितः फलम् ।
पित्तप्रकोपयात्रादिव्रणानि कुरुते शशी ॥२७१॥
भूपुत्रश्चौरबाधां च वस्तुहेमादिनाशकृत् ।
बंधुवियोगमाप्नोति चन्द्रपुत्रफलं त्विदम्॥२७२॥
करोति नृपभीतिं च पशुहानिं गुरुस्तदा ।
स्वस्त्रीवियोगमाप्नोति वस्त्रहानिश्च भार्गवे॥२७३॥
हेमरत्नमहिष्यादिधनधान्यहरोऽर्कजः ।
सर्वस्य नाशको राहुः केतुः शस्त्रभयप्रदः॥२७४॥

सूर्यकी लात जन्म नक्षत्रपर हो और वहां चन्द्रमा हो तो पित्तका रोग, परदेश जाना आदि तथा व्रण रोग (फोडा फुनसी आदि); मंगल हो तो चौरोंसे कष्ट तथा सुवर्ण आदि वस्तुओंका नाश; बुध हो तो स्वजनोंसे वियोग; बृहस्पति हो तो राजासे भय, तथा पशुओंकी हानि; शुक्र हो तो अपनी स्त्रीसे

वियोग तथा वस्त्रोंकी हानि; शनि हो तो सुवर्ण, रत्न, भैंसें, गायें आदि पशुओंका नाश तथा धनधान्यका हरण; राहु हो तो सर्वस्वका नाश और केतु हो तो शस्त्रका भय होता है ॥ २७१–२७४ ॥

उपग्रहाश्च लत्ताश्च क्रूरखेटेन संयुताः ।
ऋजुगत्या व्याधिकरा वक्रगत्या मृतिप्रदाः२७५॥

जिस नक्षत्रपर उपग्रह हो तथा ग्रहकी लात हो उस नक्षत्रपर क्रूर ग्रह भी हो वह क्रूर ग्रह जो मार्गी हो तो रोग और वक्री हो तो मृत्यु करता है ॥२७५॥

जन्मकर्मादिनक्षत्रप्रकरणम् ।

जन्मभं कर्म आधानं विनाशं सामुदायिकम् ।
संघातिकमिदं धिष्ण्यं षट्कं सर्वजनीनकम् २७६
ज्ञातिदेशाभिषेकैश्च नव धिष्ण्यानि भूपतेः ।
वेधं ज्ञात्वा फलं ब्रूहि क्रूरे हानिं शुभे शुभम्२७७॥

जन्म, कर्म, आधान, विनाश, सामुदायिक और संघातिक ये छह नक्षत्र मनुष्यमात्रके हैं । और भूपतिके ज्ञाति, देश तथा अभिषेक ये तीन नक्षत्र अधिक अर्थात्

राजाओंके नव नक्षत्र हैं । इनको ग्रहोंका वेध जानके क्रूर ग्रहोंसे हानि और शुभग्रहोंसे शुभफल कहे ॥ २७६ ॥ २७७ ॥

विवादो वा विवाहो वा दूरदेशान्तरं तथा ।
अन्यानि शुभकार्याणि वर्जनीयानि यत्नतः२७८

जिसके जन्मकर्मादि नक्षत्रोंको क्रूर ग्रहका वेध हो उसे चाहिये कि—वह वाद-विवाद, विवाह, दूर देशकी यात्रा तथा अन्य भी कोई शुभ कार्य न करे ॥२७८॥

जन्मकर्मादिनक्षत्रज्ञानम् ।

जन्मभं जन्मनक्षत्रं दशमं कर्मसंज्ञकम् ।
एकोनविंशमाधानं त्रयोविंशं विनाशभम्॥२७९॥
अष्टादशं च नक्षत्रं सामुदायिकसंज्ञकम् ।
संघातिकं च विज्ञेयमृक्षं षोडशमत्र हि ॥२८० ॥

जिस नक्षत्रमें जन्म हो वह जन्मनक्षत्र, उस जन्म-नक्षत्रसे १० वां कर्म, १९ वां आधान, २३ वां विनाश, १८ वां सामुदायिक और १६ वां संघातिक नक्षत्र

जानना। यदि जन्मकालज्ञान न हो तो फिर नामके नक्षत्रसे ही जन्मकर्मादि नक्षत्र जाने ॥२७९॥२८०॥

षड्विंशं राज्यजात्यं च जातिनाम स्वजातिभम् ।
देशभं देशनामर्क्षं राज्यर्क्षमभिषेकभम् ॥ २८१ ॥

जन्मनक्षत्रसे २६वां नक्षत्र राज्यजातिनक्षत्र, अथवा अपनी जातिके नामका नक्षत्र हो वह जातिनक्षत्र है; देशके नामका नक्षत्र हो वह देशनक्षत्र है; और जिस नक्षत्रमें राजाका राज्याभिषेक हुआ हो वह राज्य-नक्षत्र है ॥ २८१ ॥

ग्रन्थान्तरे जात्यादिनक्षत्रम् ।

पञ्चविंशतिजातिश्च सप्तविंशाऽभिषेकभम्।
षड्विंशतितमं देशं जन्मर्क्षादि शोधयेत् २८२

कोई ग्रन्थमें जन्मनक्षत्रसे २५ वें नक्षत्रको जाति, २७ वेंको अभिषेक और २६ वेंको देशनक्षत्र माना है ॥ २८२ ॥

इत्येवं नव धिष्ण्यानां वेधं दृष्टिं विचिन्तयेत् ।

इस प्रकारसे ये ९ नक्षत्र कहे; इनको ग्रहोंका वेध तथा ग्रहोंकी दृष्टिका विचार करे ॥

मृत्युः स्याज्जन्मभे विद्धे कर्मभे क्लेश एव च २८३
आधानर्क्षे प्रवासः स्याद्विनाशे बन्धुविग्रहः ।
सामुदायिकभेऽनिष्टं हानिः संघातिके तथा२८४॥
जातिभे कुलनाशश्च बन्धनं चाभिषेकभे ।
देशर्क्षे देशभङ्गश्च क्रूरैरेवं शुभैः शुभम् ॥२८५॥

जन्मनक्षत्र विंधे तो मृत्यु, कर्मनक्षत्र विंधे तो क्लेश, आधाननक्षत्र विंधे तो प्रवास, विनाशनक्षत्र विंधे तो बन्धुसे विग्रह, सामुदायिक नक्षत्र विंधे तो अशुभफल, संघातिक नक्षत्र विंधे तो हानि, जातिनक्षत्र विंधे तो कुलका नाश, अभिषेकनक्षत्र विंधे तो राजाको बंधन और देशनक्षत्र विंधे तो देशका भंग होता है। जैसे यह क्रूर ग्रहोंके वेधका फल कहा वैसे ही शुभ ग्रहोंके वेधसे शुभफल कहना चाहिये ॥ २८३॥२८४॥२८५ ॥

देशनक्षत्रपीडायां विरक्तं भातृमण्डलम् ।
आत्मदोषाद्विरोधश्च राष्ट्रमत्र च पीड्यते ॥ २८६॥

देशका नक्षत्र विधे तो मातृमण्डल (कुलदेव्यादि) विरक्त हो (रक्षा त्याग देवे), राजाको स्वदोषसे विरोध उत्पन्न हो, और प्रजामें पीड़ा भी हो ॥२८६॥

पीडिते पुरनक्षत्रे भृत्यमंत्रिपुरोहिताः ।
पौराः श्रेण्यश्च नगरे वाहनं चोपतप्यते ॥२८७॥

राजाके नगरके नामका नक्षत्र विधे तो भृत्य (ओहदेदार वा नौकर), मंत्री (प्रधान), पुरोहित (कुलगुरु), पौर (नगरवासी लोग), श्रेणी (व्यापारी लोग) और वाहन (हाथी घोड़े) आदि पीड़ित होते हैं ॥ २८७ ॥

अथाभिषेकनक्षत्रे पीडिते वधबन्धनम् ।
राज्यभ्रंशं पुरीनाशं देशत्यागं विनिर्दिशेत् ॥२८८

अभिषेकनक्षत्र विधे तो वध, बन्धन, राज्यभ्रंश तथा राज्यनगरीका नाश और देशका त्याग होगा ऐसा कहे ॥ २८८ ॥

उपग्रहसमायुक्ते मृत्युर्भवति नान्यथा ।

जन्मकर्मादि नक्षत्रोंमेंसे जिस नक्षत्रको क्रूर ग्रहका

वेध हो और उसी नक्षत्रपर उपग्रह भी हो तो निश्चय मृत्यु होती है ॥

शुभग्रहेण युक्तं चेद्विपरीतफलं भवेत् ॥ २८९ ॥

परन्तु जन्मकर्मादि नक्षत्र शुभग्रहसे युक्त हो तो पूर्वोक्त अशुभफलका विपरीत फल अर्थात् शुभ फल होता है ॥ २८९ ॥

सौम्यपापग्रहो हन्याज्जन्मनो व्याधिधनक्षयः ।
वेधे वैनाशिकाद्यर्क्षत्रिवेधे चायुषो भयम् २९०॥

जन्मनक्षत्रको शुभग्रहका वेध हो तो व्याधिका नाश तथा क्रूर ग्रहका वेध हो तो धनका नाश होता है। और विनाश, सामुदायिक तथा संघातिक इन तीनों नक्षत्रोंको क्रूर ग्रहका वेध हो तो आयुष्यका भय (अकालमृत्यु) होता है ॥ २९० ॥

प्रकारान्तरेण जन्मकर्मादिनक्षत्रस्थितग्रहफलम् ।

जन्मर्क्षमाद्यं दशमं च कर्म
संघातिकं षोडशभं प्रदिष्टम् ।
अष्टादशं चोदयभं विनाशं
त्रिविंशभं मानसपञ्चविंशतिः ॥ २९१ ॥

प्रथम जन्म नक्षत्र, उस जन्म नक्षत्रसे १० वां कर्म, १६ वां संघातिक, १८ वां उदय, २३ वां विनाश और २५ वां मानस है ॥ २९१ ॥

जन्मर्क्षगो यस्य खगो ग्रहेण
विहन्यते पञ्चविधोक्तया वा ।
मासेन मृत्युं प्रवदन्ति तस्य
गर्गादिमुख्या मुनयो नरस्य ॥ २९२ ॥

जिसके जन्मनक्षत्रपर ग्रह स्थित हो और वह ग्रह उक्त पांच प्रकारसे हनन हो (अर्थात् क्रूरविद्ध, क्रूर-युक्त; उपग्रह युक्त, ग्रहलत्तायुक्त और क्रूरदृष्ट हो) तो तिस मनुष्यका १ मासमें मृत्यु होती है ऐसा गर्ग आदि श्रेष्ठ मुनि कहते हैं ॥ २९२ ॥

कर्मर्क्षगे वा प्रवदन्ति मृत्युं
मासद्वयेन त्रिदशाधिकेन ।
चतुष्पदाद्वाथ सरीसृपाद्वा
मार्गप्रपन्नस्य नरस्य तस्य ॥ २९३ ॥

कर्मनक्षत्रपर जो पूर्वोक्त योग हो तो चौपाये पशुसे

वा जलमें के सर्पसे, वा मार्गमें गिरनेसे २ मास और १३ दिनोंमें मृत्यु होती है ॥ २९३ ॥

संघातिकस्थस्त्रिभिरेव मासै-
र्दिनैर्यथा पञ्चभिरेव दत्ते ।
मृत्युं गतेन स्वगृहस्थितस्य
नरस्य मासं मुनिवाक्यमेतत् ॥ २९४॥

संघातिकनक्षत्रपर पूर्वोक्त योग हो तो अपने ही घरमें ३ मास और ५ दिनोंमें अथवा १ ही मासमें मृत्यु होती है ॥ २९४ ॥

मासैश्चतुर्भिश्च तथोदयर्क्षे
शस्त्रेण मृत्युं प्रददाति पुंसाम् ।
विषेण वा बन्धनकेन वापि
स्वयं विनश्येदपि देवराजः ॥ २९८ ॥

उदयनक्षत्रपर पूर्वोक्त योग हो तो शस्त्रसे, वा विषसे, बन्धनसे, वा अपनेही निमित्तसे ४ मासोंमें मृत्यु होती है, चाहे इन्द्र भी क्यों न हो ॥ २९५ ॥

वैनाशिकस्थः प्रददाति मृत्युम्
क्षतेन रोगेण बुभुक्षया वा ।

दिनैस्त्रिभिः पञ्चभिरेव दत्ते
विदेशसंस्थस्य नरस्य नूनम् ॥ २९६ ॥

विनाशनक्षत्रपर पूर्वोक्त योग हो तो घाव लगनेसे; वा रोगसे, वा भूखे मरनेसे ३ दिनोंमें वा ५ दिनोंमें विदेशमें मृत्यु होती है ॥ २९६ ॥

मृत्युं तदा मानसगो नराणां
मासैश्चतुर्भिर्विदधाति खेटः ।
नानाविधै रोगगणैर्नितान्तं
विनाशयत्येव न संशयोऽत्र ॥२९७॥

मानसनक्षत्रपर पूर्वोक्त योग हो तो अनेक प्रकारके रोगोंसे ४ मासोंमें निश्चय मृत्यु होती है॥ २९७ ॥

जन्मर्क्षगो वा दिवसाधिनाथः
कर्मर्क्षगौ भूमिजरात्रिनाथौ ।
मृत्युस्तदा शत्रुकृतान्निरोधात्
संपद्यते द्वादशरात्रिमध्ये ॥ २९८ ॥

जन्मनक्षत्रपर सूर्य तथा कर्मनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो शत्रुके बन्धनसे १२ रात्रिमें मृत्यु होती है ॥ २९८ ॥

कर्मर्क्षगो वा दिवसाधिनाथः
संघातिकस्थौ शशिभूमिपुत्रौ ।
मृत्युस्तदा तस्य भवेन्नरस्य
मासस्य मध्ये कथितो मुनीन्द्रैः २९९॥

कर्मनक्षत्रपर सूर्य हो तथा संघातिक नक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो मुनियोंने १ मासमें मृत्यु कही है ॥ २९९ ॥

संघातिकस्थेन दिवाकरेण
मिथोदयस्थौ शशिभूमिपुत्रौ ।
मासत्रयेणैव भवेन्नरस्य
तस्यान्तरे वायुविकारजातः ॥३००॥

संघातिकनक्षत्रपर सूर्य हो तथा उदयनक्षत्र पर मंगल और चन्द्रमा हो तो वायुके विकारसे ३ मासोंमें मृत्यु होती है ॥ ३०० ॥

यदोदयर्क्षे दिवसाधिनाथो
वैनाशिकस्थौ शशिभूमिपुत्रौ ।
गुदस्य रोगेण तदा विनाशः
संपद्यते रक्तविकारजो वा ॥ ३०१ ॥

उदयनक्षत्रपर सूर्य हो तथा वैनाशिकनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो गुदाके रोगसे वा रक्तके विकारसे मृत्यु होती है ॥ ३०१ ॥

वैनाशिकस्थो यदि वासरेशो
मनःस्थितौ भूमिजरात्रिनाथौ ।
मृत्युस्तदा स्याद्दिवसत्रयेण
षण्मासयुक्तेन ध्रुवं नरस्य ॥ ३०२ ॥

वैनाशिकनक्षत्रपर सूर्य हो तथा मानसनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो ६ महीने और ३ दिनमें मृत्यु होती है ॥ ३०२ ॥

मानर्क्षकस्थो यदि वासरेशो
जन्मर्क्षगौ भूमिजरात्रिनाथौ ।
तदा विनाशो मनुजस्य भावी
वर्षेण मासत्रयसंयुतेन ॥ ३०३ ॥

मानसनक्षत्रपर सूर्य हो तथा जन्मनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो एक वर्ष और ३ मासाम मृत्यु होती है ॥ ३०३ ॥

जन्मर्क्षगः स्याद्यदि भूमिपुत्रः
कर्मर्क्षगौ सूर्यनिशाधिनाथौ ।
चतुर्दिनैः स्यान्मरणं नरस्य
जलेन वा मासचतुष्टयेन ॥ २०४ ॥

जन्मनक्षत्रपर मंगल हो तथा कर्मनक्षत्रपर सूर्य और चन्द्रमा हो तो ४ दिनोंमें वा ४ मासोंमें जलके योगसे मृत्यु होती है ॥ २०४ ॥

कर्मर्क्षगः स्याद्यदि भूमिपुत्रः
संघातिके रात्रिपवासरेशौ ।
भल्लूसकाशान्मरणं नरस्य
तथा भवेन्मासचतुष्टयेन ॥ २०५ ॥

कर्मनक्षत्रपर मंगल हो तथा संघातिकनक्षत्र पर सूर्य और चन्द्रमा हो तो ४ मासोंमें रीछसे मृत्यु होती है ॥ २०५ ॥

संघातिकस्थो यदि भूमिपुत्रः
सूर्यः शशिश्चोदयऋक्षयातौ ।
व्याधेः सकाशान्मरणं नरस्य
संवत्सराद्ये च भवेच्च नूनम् ॥२०६॥

संघातिकनक्षत्रपर मंगल हो तथा उदयनक्षत्रपर सूर्य और चन्द्रमा हो तो संवत्सरके आदिमें निश्चय रोगसे मृत्यु होती है ॥ ३०६ ॥

उदयर्क्षसंस्थो यदि भूमिपुत्रो
वैनाशिकस्थौ रविरात्रिनाथौ ।
अजीर्णतः स्यान्मरणं नरस्य
क्षुधाक्षयारोचकतः क्रमेण ॥ ३०७॥

उदयनक्षत्रपर मंगल हो तथा वैनाशिकनक्षत्रपर सूर्य और चन्द्रमा हो तो अजीर्ण वा मन्दाग्नि वा अरुचिसे मृत्यु होती है ॥ ३०७ ॥

वैनाशिकस्थो यदि भूमिपुत्रः
सूर्यर्क्षपेशौ तु मनःप्रयातौ ।
व्याधेः सकाशान्मरणं नरस्य
संवत्सरान्ते भवतीह नूनम् ॥३०८ ॥

वैनाशिकनक्षत्रपर मंगल तथा मानसनक्षत्रपर सूर्य और चन्द्रमा हो तो रोगके होनेसे १ वर्षमें निश्चय मृत्यु होती है ॥ ३०८ ॥

मनःस्थितः स्याद्यदि भूमिपुत्रो
जन्मर्क्षगौ भास्कररात्रिनाथौ ।
प्राणादिघातश्च भवेन्नरस्य
षण्मासमध्ये कथितो मुनीन्द्रैः॥३०९॥

मानसनक्षत्रपर यदि मंगल हो तथा जन्मनक्षत्रपर सूर्य और चन्द्रमा हो तो प्राणादिका घात ६ महीनोंके भीतर मुनिजनोंने कहा है ॥ ३०९ ॥

जन्मर्क्षगः स्याद्यदि सूर्यसूनुः
कर्मर्क्षगौ भूमिजरात्रिनाथौ ।
मासैस्त्रिभिः स्यान्मरणं नरस्य
शस्त्रप्रहारैरथवाऽऽत्मघातैः ॥ ३१० ॥

जन्मनक्षत्रपर शनि हो तथा कर्मनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो शस्त्रके लगनेसे वा आत्मघात करनेसे ३ मास में मृत्यु होती है ॥ ३१० ॥

कर्मर्क्षगः स्याद्यदि सूर्यसूनुः
संघातिकस्थौ कुजरात्रिनाथौ ।
संवत्सरेण प्रवदन्ति मृत्युं
तथा नरस्या नसमुद्भवं च ॥३११॥

कर्मनक्षत्रपर शनि हो तथा संघातिकनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो १ वर्षमें अग्निसे मृत्यु होती है ॥ ३११ ॥

संघातिकस्थो यदि सूर्यसूनु-
स्तथोदयस्थौ कुजरात्रिनाथौ ।
मासैश्चतुर्भिर्दिवसैश्चतुर्भि-
स्तदा नरः स्यान्मरणे प्रसिद्धः॥३१२॥

संघातिकनक्षत्रपर शनि हो तथा उदयनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो ४ मास और ४ दिनोंमें मृत्यु होती है ॥ ३१२ ॥

उदयर्क्षसंस्थो यदि सूर्यजः स्या-
द्वैनाशिकस्थौ कुजरात्रिनाथौ ।
तथाष्टमासप्रभवो हि मृत्यु-
र्भवेन्नरस्य प्रमदासकाशात् ॥ ३१२ ॥

उदयनक्षत्रपर शनि हो तथा वैनाशिकनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो स्त्रीके कारणसे ८ मासोंमें मृत्यु होती है ॥ ३१३ ॥

वैनाशिकस्थो यदि सूर्यपुत्रो
मनःस्थितौ भूमिजरात्रिनाथौ ।
तदाष्टमासावधिरेव मृत्यु-
र्वदेन्नरस्य क्षुधिताप्रकोपात् ॥ २१४॥

वैनाशिकनक्षत्रपर शनि हो तथा मानसनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो क्षुधाके कोपसे ८ मासमें मृत्यु होती है ॥ ३१४ ॥

मनःस्थितः स्याद्यदि सूर्यपुत्रो
जन्मर्क्षसंस्थौ कुजरात्रिनाथौ ।
मासैश्च षड्भिर्मरणं नरस्य
तदा भवेद्रोगकृतं नरस्य ॥ २१५ ॥

मानसनक्षत्रपर शनि हो तथा जन्मनक्षत्रपर मंगल और चन्द्रमा हो तो ६ मासमें रोगसे मृत्यु होती है ॥ ३१५ ॥

नक्षत्रवशाद् ग्रहदृष्टिप्रकरणम् ।

अतः परं प्रवक्ष्यामि ग्रहदृष्टिफलं क्रमात् ।

जन्मकर्मादिनक्षत्रोंके वेध तथा ग्रहयोगसे फल

कहनेके उपरान्त अब नक्षत्रोंपर ग्रहोंको दृष्टिका विधान तथा दृष्टिका फल क्रमसे कहता हूं ।

सर्वे पञ्चदशर्क्षं तु वसुसप्तदशे कुजः ।
शराग्निमूर्च्छासार्कीज्योदशभैकोनविंशतिः ॥ ३१६ ॥
कविज्ञौ नवमर्कं तु राहुर्नव च वीक्षते ।
पञ्चर्क्षं वीक्ष्यते भानुरेवं दृष्टेर्विनिर्णयः ॥ ३१७ ॥

जिस नक्षत्रपर ग्रह हो उस नक्षत्रसे १५ वें नक्षत्रको तो सूर्यादि सब ग्रह देखते हैं । तथा मंगल ७ वें, ८ वें और १० वें को; शनि ३ रे, ५ वें और १९ वें को; बृहस्पति १० वें और १९ वें को; शुक्र तथा बुध ९ वें और १२ वें को; राहु ९ वें को; और सूर्य ५ वें नक्षत्रको देखता है ॥ ३१६ ॥ ३१७ ॥

कालविशेषेण दृष्टिभेदज्ञानम् ।

शुभग्रहः शुक्लपक्षे ह्यग्रदृष्टिः सदा भवेत् ।
पश्चाद्दृष्टिः कृष्णपक्षे व्यत्ययं पापखेचराः ॥ ३१८ ॥

शुभग्रह शुक्लपक्षमें आगेकी ओरके; तथा कृष्णपक्षमें पीछेकी ओरके और क्रूरग्रह शुक्लपक्षमें पीछेकी ओरके

तथा कृष्णपक्षमें आगेकी ओरके उक्त नक्षत्रोंको देखते हैं ॥ ३१८ ॥

पृष्ठदृष्टिर्दिवा क्रूरश्चाग्रदृष्टिस्तु रात्रिषु ।
विपरीतफलाःसौम्याःप्रचरन्ति खचारिणः३१९॥

क्रूरग्रह दिनमें पीछेकी ओरके तथा रात्रिमें आगेकी ओरके और शुभग्रह दिनमें आगेकी ओरके तथा रात्रि में पीछेकी ओरके उक्त नक्षत्रोंको देखते हैं ॥ ३१९ ॥

पूर्वाह्णे सद्ग्रहाश्चाग्रे त्वपराह्णे तु पृष्ठतः ।
शुभाश्चैवं प्रपश्यन्ति विपरीतमसद्ग्रहाः ॥३२०॥

शुभग्रह मध्याह्नके पहिले आगेकी ओरके तथा मध्याह्नके पश्चात् पीछेकी ओरके और क्रूरग्रह मध्याह्न-के पहिले पीछेकी ओरके तथा मध्याह्नके पीछे आगे-की ओरके नक्षत्रोंको पूर्वोक्त क्रमसे देखते हैं ॥३२०॥

यस्यर्क्षं भानुना दृष्टं तस्य भंगं विनिर्दिशेत् ।
चन्द्रदृष्टिश्च तारायां तस्य हानिर्न संशयः॥३२१॥
कुजेन दृश्यते यस्य तस्य भंगो भवेद्ध्रुवम् ।
बुधेन दृश्यते यस्य तस्यलाभो भवेद्ध्रुवम्॥३२२॥

गुरुदृष्टिर्गता यस्य तस्य लाभः शुभं भवेत् ।
भृगुदृष्टिर्यस्य तारा जयन्तत्र विनिर्दिशेत्॥३२३॥
सौरिणा दृश्यते यस्य तस्य भंगं मृतिं वदेत् ।
राहुणा दृश्यते यस्य तस्य विघ्नं विनिर्दिशेत्।३२४।

सूर्यकी दृष्टिसे युद्धादिसे भंग, चन्द्रमाकी दृष्टिसे निश्चय हानि, मंगलकी दृष्टिसे निश्चय भंग, बुधकी दृष्टिसे निश्चय लाभ, बृहस्पतिकी दृष्टिसे लाभ तथा शुभफल, शुक्रकी दृष्टिसे युद्धादिमें जय, शनिकी दृष्टिसे भंग अथवा मृत्यु और राहुकी दृष्टिसे विघ्न होता है ॥ ३२१-३२४ ॥

रविचन्द्रदृशौ यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः ।
रविभौमदृशौ यस्य मृत्युन्तस्य विनिर्दिशेत्।३२५।
रविसौम्यदृशौ यस्य तस्य भंगं पलायनम् ।
रविजीवदृशौ यस्य जयलाभसुखानि च ॥३२६॥
रविशुक्रदृशौ यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः ।
रविः सौरिश्च जन्मर्क्षं पश्यते चैव मृत्युदः॥३२७॥

सूर्यकी दृष्टिके साथ चन्द्रमाकी दृष्टिसे निश्चय मृत्यु, मंगलकी दृष्टिसे भी मृत्यु, बुधकी दृष्टिसे युद्धा-

दिसे भंग तथा भागना, बृहस्पतिकी दृष्टिसे जय लाभ तथा सुख, शुक्रकी दृष्टिसे निश्चय मृत्यु, और शनिकी दृष्टिसे भी मृत्यु होती है ॥ ३२५-३२७ ॥

चन्द्रभौमदृशौ यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः ।
चन्द्रसौम्यदृशौ यस्य तस्य भंगं विनिर्दिशेत् ३२८
चन्द्रजीवदृशौ यस्य तस्य लाभो जयो भवेत् ।
चंद्रशुक्रदृशौ यस्य तस्य लाभो जयः शुभम् ३२९
चन्द्रसौरिदृशौ यस्य तस्य भंगं मृतिं वदेत् ।

चन्द्रकी दृष्टिके साथ मंगलकी दृष्टिसे निश्चय मृत्यु, बुधकी दृष्टिसे भंग, बृहस्पतिकी दृष्टिसे निश्चय जय तथा लाभ, शुक्रकी दृष्टिसे लाभ, जय तथा शुभफल और शनिकी दृष्टिसे भंग अथवा मृत्यु होती है ॥ ३२८ । ३२९ ॥

कुजसौम्यदृशौ यस्य तस्य लाभंविनिर्दिशेत्३२०
कुजजीवदृशौ यस्य युद्धे भंगं विनिर्दिशेत ।
कुजशुक्रदृशौ यस्य तस्य सर्वार्थसिद्धयः ३२१
कुजसौरिदृशौ यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः ।

मंगलकी दृष्टिके साथ बुधकी दृष्टिसे लाभ, बृहस्पति-

की दृष्टिसे युद्धमें भंग, शुक्रकी दृष्टिसे सब अर्थोंकी सिद्धि और शनिकी दृष्टिसे निश्चय मृत्यु होती है ॥ ३३० । ३३१ ॥

सौम्यजीवदृशौ यस्य तस्य भंगं मृतिं वदेत् ३३२॥
सौम्यशुक्रदृशौ यस्य तस्य लाभो जयो भवेत् ।
सौम्यसौरिदृशौ यस्य तस्य भंगं मृतिं वदेत् ३३३

बुधकी दृष्टिके साथ बृहस्पतिकी दृष्टिसे भंग तथा मृत्यु, शुक्रकी दृष्टिसे लाभ तथा जय और शनिकी दृष्टिसे भंग अथवा मृत्यु होती है ॥ ३३२।३३३ ॥

गुरुशुक्रदृशौ यस्य तस्य लाभो जयो भवेत् ।
गुरुसौरिदृशौ यस्य तस्य भंगः पराजयः ३३४॥

बृहस्पतिकी दृष्टिके साथ शुक्रकी दृष्टिसे लाभ तथा जय और शनिकी दृष्टिसे युद्धादिमें भंग तथा जय होता है ॥ ३३४ ॥

शुक्रसौरिदृशौ यस्य प्राणघातश्च जायते ॥

शुक्र और शनिकी दृष्टिसे प्राणोंका घात होता है।

क्रूरग्रहचतुष्कं तु यस्य जन्मनि दृश्यते ।
सर्वभंगमवाप्नोति मरणं च प्रजायते ॥ ३३५ ॥

सूर्य, मंगल, शनि और राहु इन चारोंही क्रूर ग्रहोंकी दृष्टिसे सर्व कामोंमें भंग अथवा मृत्यु होती है ॥ ३३५ ॥

शशिसौम्येज्यशुक्राश्च पश्यंति यस्य जन्मभम् ।
तस्य लाभो जयःसौख्यं धनधान्यविवर्धनम् ३३६

चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र इन चारों ही सौम्यग्रहोंकी दृष्टिसे लाभ, जय, सुख और धनधान्यकी वृद्धि होती है ॥ ३३६ ॥

शुभग्रहाणां या दृष्टिर्वक्रगत्याऽतिशोभना ।
समगत्या तु शुभदा दृष्टिः क्रूरखचारिणाम् ३३७

शुभग्रह वक्रगतिमें हो तो दृष्टिफल अति शुभ और क्रूरग्रह मध्यगतिमें हो तो दृष्टिफल शुभ होता है॥ ३३७॥

दृष्टिर्या सौम्यखेटानां शीघ्रगत्या न शोभना ।
समगत्यामध्यफलानिष्फलाचास्तगामिनाम् ३३८

शुभ ग्रह शीघ्र गतिमें हो तो दृष्टिफल अशुभ, मध्यगतिमें हो तो दृष्टि फल मध्यम और अस्त हो तो दृष्टिफल नहीं होता ॥ ३३८ ॥

पापग्रहाणां दृष्टिर्या वक्रगत्या न शोभना ।
शीघ्रगत्यामध्यफलानिष्फलाचास्तगामिनाम् ॥

क्रूरग्रह वक्रगतिमें हो तो दृष्टिफल अति अशुभ, शीघ्रगतिमें हो तो दृष्टिफल मध्यम और अस्त हो तो दृष्टिफल नहीं होता ॥ ३३९ ॥

युद्धप्रकरणम् ।

भयं भङ्गश्च घातश्च बन्धो मृत्युः पुरःस्थितैः ।
क्रूरैरेकादिपञ्चान्तैर्युधि वेधे फलं भवेत् ॥ ३४० ॥

युद्धके समय एक क्रूरग्रहके वेधसे भय, दोसे भंग, तीनसे घात, चारसे बंधन और पांचों क्रूरग्रहोंके वेधसे मृत्यु होती है ॥ ३४० ॥

शनेर्घाते हि त्वङ्मांसं रोमाणि च वपुष्मताम् ।
भौमघाते च रक्तौघो रविघातेऽस्थिभञ्जनम् ३४१
राहुघाते च सप्तापि नश्यन्ति धातवः समम् ।
सौम्यग्रहैर्न घातोऽस्ति जीव्यतेप्रत्युतस्वयम् ३४२

घातकर्ता शनि हो तो योद्धाके अंगमें मांस तथा रोमोंका छेदन, मंगल हो तो रक्तका स्राव, सूर्य हो

तो हड्डीका टूटना, और राहु हो तो सातों धातुओंका नाश होता है । तथा सौम्यग्रहके योगसे घाव नहीं लगता; किन्तु स्वयं बचके आजाता है ३४१–३४२॥

वेधफलपाककालज्ञानम् ।

तिथिमृक्षं स्वरं राशिं वर्णं चैव तु पञ्चकम् ।
यद्दिने विध्यते चन्द्रस्तद्दिने स्याच्छुभाशुभम् ३४३

तिथि, नक्षत्र, स्वर, राशि और अक्षर, इन पांचोंमें से जिस किसीको ग्रहका वेध हो और पीछेसे उसीको जिस दिन चन्द्रमा वेधे तब उसी दिन पूर्वोक्त शुभ वा अशुभ वेध फल होता है ॥ ३४३ ॥

एतत्सर्वं मया चोक्तं बहुशास्त्रस्य संग्रहात् ।
सर्वत्रैतद्योजयित्वा देशकालकुलादितः ॥ ३४४ ॥

ये पूर्वोक्त शुभाशुभ फलका विधान मैंने बहुत शास्त्रोंसे संग्रह करके इस ग्रन्थमें कहा, सो फल सर्वत्र ज्योतिर्विदोंको स्वबुद्धिसे देश, काल और कुलादिका विचार करके कहना चाहिये ॥ ३४५ ॥

अर्घप्रकरणम् ।

अथार्घ्यं संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले ।
एकाशीतिपदे चक्रे ग्रहवेधाच्छुभाशुभम् ॥३४५॥

मनुष्यादिको वेध फल कहनेके अनन्तर इसी चक्रमें क्रयविक्रय पदार्थोंके अर्घके शुभाशुभ (खरीदने बेचनेकी वस्तुओंके भावके सस्ते महँगेपन) का निर्णय जैसा ब्रह्मयामल ग्रन्थमें कहा है वैसा ग्रहोंके वेधसे शास्त्र-कारोंने कहा है सो मैं इस ग्रन्थमें कहता हूँ ॥३४५॥

देशः कालस्ततः पण्यमिति त्रीण्यर्घनिर्णये ।
चिन्तनीयानि वेध्यानि सर्वकाले विचक्षणैः ३४६॥

विचक्षण पुरुषोंको अर्घनिर्णयके निमित्त वेध पाने योग्य देश, काल और पण्य ये तीनों सर्वदा विचारने योग्य हैं । अर्थात् किस वस्तुका किस देशमें और किस कालमें क्या भाव होगा ॥ ३४६ ॥

देशकालपण्यनिर्णयः ।

देशोऽथ मण्डलं स्थानमिति देशस्त्रिधोच्यते ।
वर्षं मासो दिनं चेति त्रिधा कालोऽपि कथ्यते३४७
धातुर्मूलं च जीवश्च इति पण्यं त्रिधा मतम् ।

देश, मंडल और स्थानके भेदसे देश तीन प्रकारका है। वर्ष, मास और दिनके भेदसे काल तीन प्रकारका कहा है। तथा धातु, मूल और जीवके भेदसे पण्य भी तीन प्रकारका माना है ॥ ३४७ ॥

देशास्तु कूर्मचक्रोक्ता मण्डलं तदवान्तरम् ।
पुरादिस्थानमिति यत्त्रिधा देशविनिर्णयः॥३४८॥

कूर्मचक्रमें कहे हुए वह देश, प्रत्येक देशके अन्तर्गत जो प्रदेश (प्रान्त वा जिला) हो वह मंडल और प्रत्येक मंडलमें जो ग्राम हो वह स्थान ; ये तीन प्रकारका देशका भेद जानना ॥ ३४८ ॥

गुरुसंक्रान्तितो वर्षो मासो भास्करसंक्रमात् ।
दिनो वारोदयादेव त्रिधा कालविनिर्णयः ॥ ३४९॥

बृहस्पतिकी संक्रान्ति (राशिचार—एक राशिको भोगकर दूसरी राशिपर जाने) से वर्ष, सूर्यकी संक्रान्तिसे मास और सूर्योदयसे दिन; ये तीन प्रकारका कालका भेद जानना ॥ ३४९ ॥

धातवो हेमभूम्यन्ता मूला वृक्षतृणान्तकाः ।
जीवा नरादिकीटान्तास्तद्विकारास्त एव च।३५०।

सोनेसे आदि लेके मृत्तिका पर्यन्त–पृथ्वीमेंसे निकलनेवाले संपूर्ण खनिज पदार्थोंकी धातु संज्ञा है। वृक्षसे आदि लेके तृण पर्यन्त–पृथ्वीमेंसे उत्पन्न होनेवाले संपूर्ण उद्भिज पदार्थोंकी मूलसंज्ञा है। मनुष्यसे आदि लेके कीटपर्यन्त–स्थल, जल तथा अन्तरिक्षमें विचरनेवाले संपूर्ण प्राणियोंकी जीवसंज्ञा है। और इन तीनोंमेंसे जो जिसका विकार हो उसकी भी वही संज्ञा होती है। ये तीन प्रकारका पण्य अर्थात् खरीदने बेचनेकी संपूर्ण वस्तुओंका भेद जानना ॥ ३५० ॥

देशादीनां स्वामिज्ञानम् ।

अथ त्रिकत्रिकस्यास्य वक्ष्यामि स्वामिखेचरान् ॥

तीन प्रकारका देश, तीन प्रकारका काल और तीन प्रकारका पण्य कहे। अब उन प्रत्येकके स्वामी-ग्रहोंको कहते हैं ॥ ३५१ ॥

देशेशा राहुमन्देज्या मंडलस्वामिनः पुनः ।
केतुसूर्यसिताः स्थाननाथाश्चन्द्रारचन्द्रजाः ३५२

देशका स्वामी राहु, शनि, बृहस्पतिमें से; मंडलका

स्वामी केतु, सूर्य, शुक्रमेंसे; और स्थानका स्वामी चन्द्र, मंगल, बुधमेंसे जो बली हो वह होता है॥ ३५२॥

वर्षेशा राहुकेत्वार्किजीवा मासाधिपाः पुनः ।
भौमार्कज्ञसिता ज्ञेयाश्चन्द्रः स्याद्दिवसाधिपः ३५३

वर्षका स्वामी राहु, केतु, शनि, बृहस्पतिमेंसे; मासका स्वामी मंगल, सूर्य, बुध, शुक्रमेंसे; जो बली हो वह और दिनका स्वामी तो सदैवही चन्द्रमा होता है ॥ ३५३ ॥

धात्वीशाः सौरिपातारा जीवेशा ज्ञेन्दुसूरयः ।
मूलेशाः केतुशुक्रार्का इति पण्याधिपा ग्रहाः ३५४

धातुका स्वामी शनि, राहु, मंगलमें से; जीवका स्वामी बुध, चन्द्र बृहस्पतिमें से; और मूलका स्वामी केतु, शुक्र, सूर्यमें से जो बली हो वह होता है ३५४

पुंग्रहा राहुकेत्वर्कजीवभूमिसुता मताः ।
स्त्रीग्रहौ शुक्रशशिनौ सौरिसौम्यौ नपुंसकौ ३५५

पुरुषसंज्ञावाले ग्रह राहु, केतु, सूर्य, बृहस्पति, मंगल; स्त्रीसंज्ञावाले ग्रह शुक्र, चन्द्रमा; और नपुंसकसंज्ञावाले ग्रह शनि, बुधको माने हैं ॥ ३५५ ॥

सितेन्दू सितवर्णेशौ रक्तेशौ भौमभास्करौ ।
पीतौ सौम्यगुरू कृष्णा राहुकेत्वर्कजा मताः ३५६

श्वेतवर्णके स्वामी शुक्र, चन्द्रमा; लाल वर्णके स्वामी मंगल, सूर्य; पीले वर्णके स्वामी बुध, बृहस्पति; और काले वर्णके स्वामी राहु, केतु, शनिको माने हैं।

अतः उपरोक्त पुरुषादि तथा श्वेतादि संज्ञामेंसे जिस संज्ञाकी वस्तु हो उस संज्ञाके ग्रहका उस पर अधिकार रहता है । अर्थात् उस ग्रहकी हानि-वृद्धिसे उस वस्तुकी भी हानि-वृद्धि होती है ॥ ३५६ ॥

बलवशात्स्वामिनिर्णयः ।

ग्रहे वक्रोदयोच्चर्क्षै यो यदा स्याद्बलाधिकः ।
देशादीनां स एवैकः स्वामी खेटस्तदामतः॥३५७

देशादिकोंके अपने अपने स्वामी ग्रहोंमें से जो ग्रह जिस समय क्षेत्र, वक्र उदय और उच्च इन चारों प्रकारके बलोंमेंसे अधिक बलवाला हो वही एक एक ग्रह उस समय देशादिकका स्वामी होता है। तात्पर्य इसका यह है कि जैसे वर्षपत्रिकामें पंचाधिकारियों

में से बलाधिक्यको वर्षेश माना है वैसे ही यहां ४ प्रकारके बलाधिक्योंको अपने अपने देश, काल पण्यादिकके स्वामी जानना ॥ ३५७ ॥

क्षेत्रादिचतुष्प्रकारेण बलनिर्णयः ।

(क्षेत्रबलम् ।)

स्वक्षेत्रस्थे बलं पूर्णं पादोनं मित्रभे गृहे ।
अर्धं समगृहे ज्ञेयं पादं शत्रुगृहे स्थिते ॥ ३५८ ॥

ग्रहोंका स्थानबल ग्रह अपनी राशिपर हो तो पूर्ण-चार पाद, मित्रकी राशिपर हो तो तीन पाद, समकी राशिपर हो तो दो पाद और शत्रुकी राशि-पर हो तो एक पाद बल होता है । किंतु यह बल उक्त राशियोंके ठीक मध्यमें हो तब यथोक्त पूर्ण होता है, और मध्यसे जितना आगे वा पीछे रहे उतना बल त्रैराशिकके गणितसे न्यून होजाता है ॥ ३५८ ॥

(वक्रस्तथा उदयबलम् ।)

वक्रोदयस्वमानार्धे पूर्णवीर्यो ग्रहो भवेत् ।
तदग्रपृष्ठगे खेटे बलं त्रैराशिकान्मतम् ॥ ३५९ ॥

जितने दिन वक्री वा उदय रहै उसका आधा समय बीत जानेपर वक्रीका वा उदयका मध्यकाल जानना, उस समय ग्रह पूर्ण बलवान् होता है। और उस मध्यकालसे जितना आगे वा पीछे रहे उतना बल त्रैराशिकके गणितसे न्यून जानना; क्योंकि वक्री वा उदय होनेके आदि और अन्तमें वक्रका वा उदयका बल ०।० अर्थात् कुछ भी नहीं होता ॥ ३५९ ॥

(उच्चबलम् ।)

उच्चांशस्थे बलं पूर्णं नीचांशस्थे बलं दलम् ।
त्रैराशिकवशाज्ज्ञेयमन्तरे तु बलं बुधैः ॥३६०॥

ग्रहका उच्च राशिमें परम उच्च अंशपर पूर्ण बल, तथा नीच राशिमें परम नीच अंश पर आधा बल होता है। और इन दोनोंके अन्तरमें (बीच में) कहीं भी ग्रह हो तो उसका बल विद्वानोंको त्रैराशिकके गणितसे जानना चाहिये; जैसा कि ज्योतिषी लोग जन्मपत्रिका आदिमें ग्रहोंका बल निकाला करते हैं ३६०

त्रैराशिकज्ञानम् ।

इच्छाफलसंगुणितं व्यवहृत्या भाजयेत्समस्ते च ।
व्यवहृतिगुणितं चेच्छाभक्तंत्रैराशिके भवेद्व्यस्ते ॥

त्रैराशिकके दो भेद हैं-एक समस्त और दूसरा व्यस्त, पर इन दोनोंका तात्पर्य एकही है । समस्त त्रैराशिकमें जो कोई संख्यांक हो उसको इच्छित फलसे गुणा करे और उसको व्यवहारकी संख्यासे भाग दे । तथा व्यस्त त्रैराशिकमें व्यवहारकी संख्यासे गुणा करे और उसको इच्छा फलसे भाग देना, इस तरह इष्ट अंक (फल) आता है उसको त्रैराशिकका गणित फल जाने । यह गणितका विषय है सो गणितज्ञोंसे जानना चाहिये ॥ ३६१ ॥

स्वामिवशाद्वेधफलनिर्णयः ।

एवं देशादिनाथा ये ते वेधकग्रहं प्रति ।
सुहृदः शत्रवो मध्याश्चिन्तनीयाः प्रयत्नतः ३६२॥

इस प्रकारसे जो देश मंडलादिकोंके पृथक् २ स्वामी निश्चय किये वे ग्रह अपने देशादिके वर्णादिकोंको वेध

करनेवाले ग्रहके प्रति मित्र, शत्रु वा सम में से क्या है इसका यत्नसे चिन्तवन करै ॥ ३६२ ॥

स्वमित्रसमशत्रूणां वेधे देशादिषु क्रमात् ।
शुभग्रहः शुभं धत्ते चतुस्त्रिद्व्येकपादकैः ॥३६३॥

देशमडलादिकोंका वेध कर्ता ग्रह शुभ हो तो इस क्रमसे शुभ फल देता है। स्वामी स्वयं ही वेधकर्ता हो तो पूर्ण, वेधकर्ताका मित्र हो तो पौन, सम हो तो आधा और शत्रु हो तो चौथाई फल देता है॥३६३॥

स्वमित्रसमशत्रूणां वेधे देशादिषु क्रमात् ।
दुष्टं दुष्टग्रहः कुर्यादेकद्वित्रिचतुष्पदैः ॥ ३६४ ॥

देशमंडलादिकोंका वेधकर्ता ग्रह अशुभ हो तो इस क्रमसे अशुभ फल देता है। स्वामी स्वयंही वेधकर्ता हो तो चौथाई, वेधकर्ताका मित्र हो तो आधा, सम हो तो पौन और शत्रु हो तो पूर्ण फल देता है ३६४

दृष्टिवशाद्वेधफलनिर्णयः ।

विद्धं पूर्णदृशा पश्यंस्तत्पादेन फलं ग्रहः ।
विदधात्यन्यथा ज्ञेयं फलं दृष्ट्यनुमानतः ३६५॥

वेधकर्ता ग्रह जिस वर्णस्वरादिको वेधै उस विधे हुएको (उसकी राशिको) पूर्णदृष्टिसे देखे तो स्वामित्रादिका पूर्वोक्त पाद क्रमसे जितना वेधफल कहा उतना पूरा देता है। और जो पूर्ण दृष्टिसे न देखे, किंतु न्यून दृष्टिसे देखे तो दृष्टिके तीन दो एक पादके अनुसार फल कम देता है। जैसा आगे चक्रमें लिखा है ॥ ३६५ ॥

स्वाम्यादिवेधकदृष्टिवशाद्वेधफलज्ञानचक्रम् ।

	सौम्यग्रहः				क्रूरग्रहः			
दृष्टिः	स्वामी	मित्रं	समः	शत्रुः	स्वामी	मित्रं	समः	शत्रुः
पूर्ण	२० ०	१५ ०	१० ०	५ ०	५ ०	१० ०	१५ ०	२० ०
तीनपाद	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५	३ ४५	७ ३०	११ ४५	१५ ०
दोपाद	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०	२ ३०	५ ०	७ ३०	१० ०
एकपाद	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५	१ १५	२ ३०	३ ४५	५ ०

राशिवशाद्ग्रहदृष्टिज्ञानम् ।

कमाग्नी पंचनन्दौ च गजाब्धी सप्तमं तथा ।
पादवृद्ध्या निरीक्षन्ते ग्रहा लग्नानि सर्वदा२६६

स्वतृतीये तु कोणस्थे चतुरस्रं यथाक्रमम् ।
सर्वदृष्ट्या प्रपश्यन्ति ग्रहा मन्दार्यभूसुताः३६७॥

मेषादि द्वादश राशिचक्रमें सूर्यादि ग्रह स्थित राशि स्थान से ३ । १० मी राशिको एक पादसे, ५। ९ मी-को दो पादसे , ४ । ८ मी राशिको तीन पादसे और ७ मीको पूर्ण दृष्टिसे सर्वदा देखते हैं। और शनि ३ । १० मीको, बृहस्पति ५ । ९ मीको तथा मंगल ४ । ८ मीको भी पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं । इसका चक्र आगे लिखा है॥ ३६६ ॥ ३६७ ॥

राशिचक्रे ग्रहदृष्टिपादचक्रम् ।

दृष्टि	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
एकपाद	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०
दोपाद	५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९
३ पाद	४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
पूर्ण	७	७	४।८।७	७	५।९।७	७	३।१०।७	७	७

वर्णस्वरतिथ्युपरि दृष्टिज्ञानम् ।

वर्णादिस्वरराशीनां मेषाद्ये राशिमण्डले ।
ग्रहदृष्टिवशात्सोऽपि वेधो वर्णादिके मतः॥३६८॥

विधे हुए वर्ण स्वरादिकोंकी जो राशि हो उस राशिपर मेषादि द्वादश राशि चक्रमें वेधकर्ता ग्रहकी जो दृष्टि हो वह दृष्टि उन विधे हुए वर्ण स्वरादिकोंपर मानी है ॥ ३६८ ॥

स्वरवर्णाः स्वचक्रोक्तास्तिथिवेधे च पीडिताः।
तिथिवर्णेषुयोराशिस्तद्दृष्टौस्यात्तिथीक्षणम्३६९

स्वरवर्ण चक्रमें कहे स्वर और वर्णकी तिथिको वेध होनेसे वे स्वर और वर्ण भी वेधे जाते हैं। और उन तिथिवर्णोंकी राशिपर वेधकर्ता ग्रहकी दृष्टि होनेसे उन वर्ण स्वर तिथि पर भी दृष्टि हो जाती है ॥ ३६९ ॥

अशुभो वा शुभो वापि शुक्ले विध्येत्तिथिं ग्रहः ।
सर्वं निजफलं दत्ते कृष्णपक्षे तु तद्दलम् ॥३७० ॥

वेधकर्ता ग्रह अशुभ हो चाहे शुभ हो परन्तु तिथिको शुक्लपक्षमें वेधे तो अपना पूर्वोक्त वेधफल जितना हो उतना पूर्ण देता है और कृष्णपक्षमें वेधे तो उसका आधा देता है ॥ ३७० ॥

खेटस्य स्वांशके ज्ञेया पूर्णा दृष्टिः सदा बुधैः ।

ग्रहकी अपने नवांशपर सदैव पूर्णदृष्टि होती है अर्थात् जैसे राशि चक्रमें मेषादि राशियोंपर पादक्र-मसे न्यूनाधिक दृष्टि होती है। वैसे ही नवांशकी राशि-योंपरभी पादक्रमसे न्यूनाधिक दृष्टि होती है। परन्तु जिस नवांशकी राशिका स्वामी दृष्टि देखनेवाला ग्रह ही होता हो फिर उसकी दृष्टि पाद क्रमसे न्यून हो तो भी पूर्ण दृष्टि मानी है।

दृष्टिहीने पुनर्वेधे न स्यात्किंचिच्छुभाशुभम् २७१

और वेधकर्ता ग्रहकी दृष्टिके विना केवल वेधसे कुछ भी शुभाशुभ फल नहीं होता। अर्थात् वेध तो वर्णादिकोंपर हो और दृष्टि मेषादि राशि चक्रमें उन विधे हुए वर्णादिकोंकी राशिपर हो तभी वेध फल होता है। किन्तु जितने पाद दृष्टि होगी उतने पाद ही वेध फल होगा ॥ २७१ ॥

इत्येवं दृष्टिभेदेन निर्दिष्टं सकलं फलम् ।
वर्णादिपंचके विद्धे ग्रहो दत्ते शुभाशुभम्॥२७२॥

इस प्रकार दृष्टिके भेदसे सर्वफल कहा। वह फल

वर्णादिकोंको वेधकर्ता ग्रह शुभ हो तो शुभ और अशुभ हो तो अशुभ देता है ॥ ३७२ ॥

वेधफलविश्वानिर्णयः ।

सौम्यः पूर्णदृशा पश्यन् विध्यन् वर्णादिपंचकम् ।
फलं विंशोपकाः पंच क्रूरस्तु चतुरो दिशेत् ३७३

वेधकर्ता ग्रह वर्णादि पांचोंहीको वेधे और उनकी राशिको पूर्णदृष्टिसे देखे तो सौम्यग्रह ५ विश्वा और क्रूरग्रह ४ विश्वा फल देता है । क्योंकि विश्वे २० ही माने हैं और सौम्यग्रह ४ हैं । अतः एकएक ग्रह ५।५ विश्वे देनेसे तथा क्रूरग्रह ५ हैं । अतः एकएक ग्रह ४।४ विश्वे देनेसे २० विश्वे पूर्ण होते हैं ॥ ३७३ ॥

वेधो वर्णादिके यावत्स्थानवेधे च यावती ।
दृष्टिस्तदनुमानेन वाच्या विंशोपका बुधैः॥३७४॥

वर्ण, स्वर, तिथि, नक्षत्र और राशि इन पांचोंमेंसे जितनोंको वेध हो और उनकी राशिपर वेधकर्ता ग्रहकी जितने पाद दृष्टि हो तदनुमानसे विद्वानोंको वेधफलके विश्वे कहने चाहिये । जैसे आगेके चक्रमें लिखे हैं ॥ ३७४ ॥

वर्णादिवेधे दृष्टिवशाद्विश्वाज्ञानचक्रम् ।

	वर्णादि पांच में से									
	सौम्यग्रहः					क्रूरग्रहः				
दृष्टि	१ को	२ को	३ को	४ को	५ को	१ को	२ को	३ को	४ को	५ को
पूर्ण	१ ०	२ ०	३ ०	४ ०	५ ०	० ४८	१ ३६	२ २४	३ १२	४ ०
तीनपाद	० ४५	१ ३०	२ १५	३ ०	३ ४५	० ३६	१ १२	१ ४८	२ १८	३ ०
दोपाद	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०
एकपाद	० १५	० ३०	० ४५	१ ०	१ १५	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०

एवं विंशोपका यत्र संभवन्ति शुभाशुभाः ।
अन्योन्यं शोधयेत्तेषां शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् २७८

इस प्रकारसे जहां शुभ और अशुभ दोनों प्रकारके ग्रहोंके पृथक् पृथक् विश्वे प्राप्त हों तो उनको परस्पर अन्तर करे । उस अन्तरसे शेष विश्वे शुभ ग्रहोंके हों तो शुभ और क्रूर ग्रहोंके हों तो अशुभ जाने।२७५।

विंशोपकावशात्समर्घमहर्घनिर्णयः ।

वर्तमानार्घविंशांशाः कल्पनास्तेषु च क्रमात् ।
वर्तमानार्घके देयाः पात्याश्चैव शुभाशुभे॥२७६॥

जिस वस्तुका वेधसे अर्घनिर्णय करे उस वस्तुका वर्तमानमें (अर्थात् वर्ष मास तथा दिनमेंसे जिस समयका निर्णय करना हो उसके प्रवेश समयमें) जो अर्घ (भाव) हो उसके २० विश्वे अर्थात् २० भाग कल्पना करे। उस १ भागके तुल्य पूर्वोक्त १ विश्वको माने फिर पूर्वोक्त क्रमसे प्राप्त शेष विश्वे जो शुभ ग्रहोंके हों तो वर्तमान अर्घके २० भागोंमें मिलावे और अशुभ ग्रहोंके हों तो उनमेंसे निकाले। ऐसा करनेसे २० से जितने अधिक हों उतने विश्वे वस्तु समर्घ (मन्दी) और निकालनेसे २० से जितने न्यून हों उतने विश्वे वस्तु महर्घ (तेजी) वर्तमानके भावसे अर्घनिर्णयके अखीर समय तक में जाने। क्योंकि वस्तुके विश्वे बढें तो वस्तुकी वृद्धि और मूल्यकी हानि और जो वस्तुके विश्वे घटें तो वस्तुकी हानि और मूल्यकी वृद्धि होती है ॥ ३७६ ॥

अर्घभेदज्ञानम् ।

त्रिविधानां तु पण्यानां ह्यर्घभेदाश्चतुर्विधाः ।
सेतिकामानपल्लीभिः संख्यया च तथैव हि ३७७

तीन प्रकारके भेदसे माने पण्यों (अर्थात् खरीदने

बेचने की सम्पूर्ण वस्तुओं) के अर्घ (भाव) सर्वत्र चारही प्रकारसे होते हैं । किसीका मापसे, किसीका तोलसे, किसीका पायलीसे और किसीका गिनतीसे;पर इन प्रत्येकके दो भेद हैं । एक भाव; दूसरा मूल्य अर्थात् अमुक द्रव्यसे इतनी वस्तु मिले इसको भाव और अमुक वस्तुका इतना द्रव्य लगे इसको मूल्य कहते हैं । अतः जिस वस्तुका भाव वा मूल्य पूर्वोक्त चार प्रकारमेंसे जिस प्रकारसे हो उस वस्तुके सस्ते महँगेपनका उसी प्रकारसे निर्णय करे ॥ २७७ ॥

प्रकारान्तरेणार्घनिर्णयः ।

अब अन्य प्रकारसे अर्थात् नक्षत्र मासके वेधसे ही वस्तु विशेषका अर्घ निर्णय कहते हैं ।

सौम्यवेधे समर्घत्वं क्रूरवेधे महर्घता ।
देशः कालश्च वस्तूनि ग्रहवेधाद्विचारयेत्॥२७८॥

सौम्यग्रहके वेधसे समर्घ और क्रूरग्रहके वेधसे महर्घ होता है । अतः देश, काल और वस्तु इन

तीनोंका विचार ग्रहोंके वेधसे प्रत्येक नक्षत्रवशसे करे ॥ ३७८ ॥

व्रीहियवाश्च मणयो हीरका धातवस्तिलाः ।
कृत्तिकावेधतो मासानष्ट याम्यदिशेऽसुखम् ॥ ३७९

कृत्तिका नक्षत्रको वेध हो तो चावल, जव, मणि, हीरा, धातु और तिल इनको दक्षिण दिशामें ८ महीनेमें फल होता है ॥ ३७९ ॥

रोहिण्याः सर्वधान्यानि सर्वे रसाश्च धातवः ।
जीर्णा कंबलकाः प्राच्यामसुखं दिनसप्तकम् ३८०

रोहिणीको वेध हो तो सब धान्य, सब रस, सब धातु और पुराने ऊनके वस्त्रको पूर्वदिशामें ७ दिन फल होता है ॥ ३८० ॥

मृगशीर्षेऽश्वमहिषी गावो लाक्षादिकोद्रवाः ।
खरा रत्नानि तूरिश्चोदक्पीडा षष्टिवासरान् ॥ ३८१

मृगशिरको वेध हो तो घोडे, भैंसे, गायें, लाख आदि, कोदों धान्य, गर्दभ, रत्न और तुवरको उत्तर दिशामें २ महीने फल होता है ॥ ३८१ ॥

तीनोंका विचार ग्रहोंके वेधसे प्रत्येक नक्षत्रवशसे करे ॥ ३७८ ॥

व्रीहियवाश्च मणयो हीरका धातवस्तिलाः ।
कृत्तिकावेधतो मासानष्ट याम्यदिशेऽसुखम्॥३७९

कृत्तिका नक्षत्रको वेध हो तो चावल, जव, मणि, हीरा, धातु और तिल इनको दक्षिण दिशामें ८ महीनेमें फल होता है ॥ ३७९ ॥

रोहिण्याः सर्वधान्यानि सर्वे रसाश्च धातवः ।
जीर्णा कंबलकाः प्राच्यामसुखं दिनसप्तकम्३८०

रोहिणीको वेध हो तो सब धान्य, सब रस, सब धातु और पुराने ऊनके वस्त्रको पूर्वदिशामें ७ दिन फल होता है ॥ ३८० ॥

मृगशीर्षेऽश्वमहिषी गावो लाक्षादिकोद्रवाः ।
खरा रत्नानि तूरिश्चोदक्पीडा षष्टिवासरान्॥३८१

मृगशिरको वेध हो तो घोड़े, भैंसें, गायें, लाख आदि, कोदों धान्य, गर्दभ, रत्न और तुवरको उत्तर दिशामें २ महीने फल होता है ॥ ३८१ ॥

आर्द्रायां तैललवणसर्वक्षाररसादयः ।
श्रीखंडादिसुगंधीनि मासं स्यात्पश्चिमेऽसुखम् ॥

आर्द्राको वेध हो तो तेल, लवण, सब क्षार, रसादिक और चंदन आदि सुगंधी वस्तुको पश्चिममें १ मास फल होता है ॥ ३८२ ॥

पुनर्वसोः स्वर्णरूप्ये कर्पासश्च युगंधरी ।
कुसुंभं श्यामकौशेयं मासयुग्मोत्तरे सुखम् ॥ ३८३ ॥

पुनर्वसुको वेध हो तो सोना, रूपा, कपास, युगंधरी (जुवार वा बाजरी), कुसुंभ और श्याम रेशमी वस्त्रको उत्तरमें २ मास फल होता है ॥ ३८३ ॥

पुष्ये स्वर्णं घृतं रूप्यं शालिशोचलसर्षपाः ।
सर्जिकातैलहिंग्वादि याम्ये पीडाष्टमासिकी ३८४

पुष्यको वेध हो तो सोना, घृत, रूपा, चावल, सौंचरनमक, सरसों, सज्जी, तैल और हींग आदिको दक्षिणमें ८ महीने फल होता है ॥ ३८४ ॥

आश्लेषायां च मंजिष्ठा इक्षुगोधूमशुंठिकाः ।
मरिचं कोद्रवाः शाली मासिकं पश्चिमे सुखम् ३८५

आश्लेषाको वेध हो तो मजीठ, सेलडी (गुड़खाँड),

गेहूं, सुंठी, मिर्च, कोदों, धान्य और चावलको पश्चिममें १ मास फल होता है ॥ ३८५ ॥

मघायां तिलतैलाज्यप्रवालचणकाऽतसी ।
गुडः कंगुर्दक्षिणस्यां विग्रहश्चाष्टमासिकी ॥३८६॥

मघाको वेध हो तो तिल, तेल, घृत, प्रवाल, चणा, अलसी, गुड़ और कांगुनीको दक्षिणमें ८ महीने फल होता है ॥ ३८६ ॥

पूफायां कंबलोर्णादि युगंधरीतिलास्तथा ।
रजतं वस्तु कल्याणं याम्यां पीडाष्टमासिकी ३८७

पूर्वाफाल्गुनीको वेध हो तो ऊन आदि, कंबल, युगंधरी, तिल, रूपेकी वस्तु और कल्याण इनका दक्षिणमें ८ महीने फल होता है ॥ ३८७ ॥

उफायां माषमुद्गाद्यं तंदुलाः कोद्रवाः पुनः ।
सैंधवं लशुनं सर्जि मासे युग्मोत्तरे यथा ॥३८८॥

उत्तराफल्गुनीको वेध हो तो उड़द, मूंग आदि, चावल, कोदों, सैंधव, लहसन और सज्जीको, उत्तरमें २ मास फल होता है ॥ ३८८ ॥

हस्ते श्रीखण्डकर्पूरदेवकाष्ठागरुस्तथा ।
रक्तचन्दनकंदादि मासयुग्मोत्तरे सुखम् ॥ ३८९ ॥

हस्तको वेध हो तो चंदन, कपूर, देवदारु, अगर, लालचंदन और कंद आदिको उत्तरमें २ मास फल होता है ॥ ३८९ ॥

चित्रायां स्वर्णरत्नानि मुद्गमाषप्रवालकम् ।
अश्वादिवाहनं मासद्वयपीडोत्तरां दिशि ॥३९०॥

चित्राको वेध हो तो सोना, रत्न, मूंग, उड़द, प्रवाल और घोड़ा आदि वाहनको उत्तरमें २ मास फल होता है ॥ ३९० ॥

स्वातौ पूगं मरिचं सर्षपतैलादि राजिका हिंगुः ।
खर्जूरादिकपीडा सप्तदिनान्युत्तरे देशे ॥३९१॥

स्वातीको वेध हो तो सुपारी, मिर्च, सरसों, तेल आदि, राई, हींग और खर्जूरादिको उत्तरमें ७ दिन फल होता है ॥ ३९१ ॥

विशाखायां यवाः शालिगोधूमा मुद्गराजिका ।
मसूरान्नमकुष्ठा च याम्यपीडाष्टमासिकी ॥३९२॥

विशाखाको वेध हो तो यव, चावल, गेहूं, मूंग,

राई, मसूर, धान्य और मोठको दक्षिणमें ८ महीने फल होता है ॥ ३९२ ॥

राधायां तुवरी सर्वविदलान्नं च तण्डुलाः ।
मकुष्ठाश्चैव चणकाः प्राक्पीडा दिनसप्तकम् ३९३

अनुराधाको वेध हो तो तुवर, विना दलके सब अन्न, चावल, मोठ और चनोंको पूर्वमें ७ दिन फल होता है ॥ ३९३ ॥

ज्येष्ठायां गुग्गुलगुडलाक्षाकर्पूरपारदाः ।
हिंगुहिंगुलुकांस्यानि प्राक्पीडा दिनसप्तकम् ३९४

ज्येष्ठाको वेध हो तो गुग्गुल, गुड, लाख, कपूर, पारा, हींग, हिंगुलु और कांसीको पूर्वमें ७ दिन फल होता है ॥ ३९४ ॥

मूले श्वेतानि वस्तूनि रसा धान्यानि सैंधवम् ।
कार्पासलवणाद्यं च मासिकं पश्चिमे सुखम् ३९५

मूलको वेध हो तो सब श्वेत वस्तु, रस, धान्य, सेंधालोन, कपास और लवण आदिको पश्चिममें १ मास फल होता है ॥ ३९५ ॥

पूषायामं जनतुषधान्यघृतं कंदमूलजूर्णादि ।
वेद्यं सशालिपश्चिमदिशिमासिकमशुभमन्यद्वा ॥

पूर्वाषाढ़ाका वेध हो तो सुरमा, तुषधान्य, घृत, कंद, मूल, जूर्ण (तृण) आदि और चावलको पश्चिममें १ मास फल होता है ॥ ३१६ ॥

उषायामश्ववृषभगजलोहादिधातवः ।
सर्वं च सारवस्त्वाज्यं प्राग्व्यथा दिनसप्तकम् ३१७

उत्तराषाढ़ाको वेध हो तो घोड़ा, बैल, हाथी, लोह आदि धातु, सब सारवस्तु और घृतको पूर्वमें ७ दिन फल होता है ॥ ३१७ ॥

द्राक्षाखर्जूरपूगैला मुद्गा जातिफलं हयाः ।
अभिजिद्वेधतः पूर्वो व्यथा वा दिनसप्तकम् ३१८

अभिजित्को वेध हो तो दाख, खजूर, सुपारी, इलायची, मूंग, जायफल और घोड़ोंको पूर्वमें ७ दिन फल होता है ॥ ३१८ ॥

श्रवणेऽखोडचारोलिपिप्पलीपूगमालिका ।
तुषधान्यानि वेध्यानि प्राक् शुभं सप्तवासरान् ॥

श्रवणको वेध हो तो अखरोट, चिरोंजी, पिप्पली, सुपारीका बगीचा और तुषधान्यको पूर्वमें ७ दिन फल होता है ॥ ३१९ ॥

धनिष्ठायां स्वर्णरूप्यधातवः सर्वनाणकम् ।
मणिमौक्तिकरत्नानि सप्ताहं पूर्वतोऽशुभम्॥४००॥

धनिष्ठाको वेध हो तो सोना, रूपा, धातु तथा सर्वप्रकारका नाणा (रुपये पैसे आदि), मणि, मोती और रत्नको पूर्वमें ७ दिन फल होता है ॥ ४०० ॥

तैलकोद्रवमद्यादि धातकीपत्रमूलकम् ।
छल्लीशतभिषग्वेधं वारुण्यां मासिकं शुभम् ४०१

शतभिषाको वेध हो तो तेल, कोदों, मद्य आदि अर्क, आंवला, पत्र, मूल और छालको पश्चिममें १ मास फल होता है ॥ ४०१ ॥

प्रियंगुमूलजात्यादि सर्वधान्यानि धातवः ।
सर्वौषधं देवदारु याम्यां पीडाष्टमासिकी॥४०२॥
पूर्वाभाद्रपदे वेध्यम्——

पूर्वाभाद्रपदाको वेध हो तो प्रियंगु, मूल, जावित्री आदि सब धान्य, सब धातु, सब औषधि और देवदारुको दक्षिणमें ८ महीने फल होता है ॥ ४०२ ॥

——अथोभावेधउच्यते ।

गुडः खंडा शर्करा च खलं तिलाश्च शालयः ।
घृतं मणिमौक्तिकानि वारुण्यांमासिकेऽशुभम् ४०३

उत्तराभाद्रपदाका वेध हो तो गुड़, खांड़, शक्कर, खली, चावल, घृत, मणि और मोतीको पश्चिममें १ मास फल होता है ॥ ४०३ ॥

पौष्णे श्रीफलपूगादि मौक्तिकं मणयोऽपि च ।
छेडाक्रियाणकं सर्वं वारुण्यां मासिके शुभम् ४०४

रेवतीको वेध हो तो नारियल, सुपारी आदि; मोती, मणि, छेडा और सब किराणाको पश्चिममें १ मास फल होता है ॥ ४०४ ॥

अश्विन्यां व्रीहयो जूर्णा वेसरोष्ट्रघृतादिकम् ।
सर्वाणि धान्यवस्त्राणि मासद्वयोत्तरं व्यथा ४०५

अश्विनीको वेध हो तो चावल, जूर्ण (तृण), खच्चर, ऊंट, घृत आदि, सर्वप्रकारके धान्य और सर्वप्रकारके वस्त्रको उत्तरमें २ मास फल होता है ॥ ४०५ ॥

भरण्यां तुषधान्यानि युगन्धरी च वेध्यते ।
मरिचाद्यौषधं सर्वं याम्यां पीडाष्टमासिकी ४०६

भरणीनक्षत्रको वेध हो तो तुषधान्य, युगंधरी और मिर्च आदि सब औषधिको दक्षिणमें ८ महीने फल होता है ॥ ४०६ ॥

देशोत्पातप्रकरणम् ।

देवध्वंसः प्रजापीडा नृपविप्रवधस्तथा ।
यत्रावृष्टिश्च तत्र स्याद्दुर्भिक्षं मण्डले स्फुटम् ४०७

जिस मण्डलमें देवताकी प्रतिमाका नाश, प्रजामें पीडा, राजाका अथवा ब्राह्मणका वध और वृष्टिका अभाव हो उस मण्डलमें दुर्भिक्ष होता है ॥ ४०७ ॥

अकालेऽपि फलं पुष्पं वृक्षाणां यत्र जायते ।
स्वजातिमांसभुक्तिश्च दुर्भिक्षं तत्र रौरवम् ॥ ४०८ ॥

विना समय वृक्षोंमें फल तथा फूल लगे और बिल्ली, उन्दर, श्वान, सर्प तथा मच्छी इन पांचोंके सिवाय कोई भी जन्तु अपनी स्वजातिके जीवोंका मांस भक्षण करे तो उस मण्डलमें दुर्भिक्ष होता है ॥ ४०८ ॥

परचक्रागमस्तत्र विग्रहश्च स्वराज्यके ।
ऋतोर्विपर्ययो यत्र दुर्भिक्षं मण्डलेभवेत् ॥ ४०९ ॥

किसी शत्रुकी सेना युद्ध करनेको आवे, अथवा अपने राज्यमें ही विग्रह हो और ऋतुकी विपरीतता (अर्थात् शीतकालमें उष्णता वा उष्णकालमें शीतता इत्यादि) हो उस मण्डलमें दुर्भिक्ष होता है ॥ ४०९ ॥

भूमिकंपो रजःपातो रक्तवृष्टिश्च जायते ।
देशे सर्वसुखोपेते वेधादेवं वदेद्बुधः ॥ ४१० ॥

भूमिकंप, धूलिवर्षा और रुधिरादिकी वर्षा हो तो उस मण्डलमें भी दुर्भिक्ष होता है । यह पूर्वोक्त फल पण्डितोंको क्रूर ग्रहोंके वेधको देखके सुखयुक्त देशमें प्रथमसे कहना चाहिये ॥ ४१० ॥

वृक्षाणां जायते वृद्धिः स्वकाले फलपुष्पयोः ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं प्रजानां तत्र जायते॥४११॥

जिस मण्डलमें वृक्षोंके फल तथा फूलोंकी वृद्धि अपने नियमसे हो उस मण्डलमें सुभिक्ष और प्रजामें क्षेम तथा आरोग्य होता है ॥ ४११ ॥

स्वचक्रे परचक्रं च न कदाचित्प्रजायते ।
बान्धवाः सुहृदस्तत्र शुभानां वेधसंभवे ॥४१२॥

अपने राज्यमें किसी शत्रुकी सेना कदापि नहीं आवे और बांधव भी परस्पर मित्र मित्र होके रहें, ऐसा फल शुभग्रहोंके वेधसे होता है सो भी पण्डितोंको प्रथमसे कहना चाहिये ॥ ४१२ ॥

चक्रावलोकप्रकरणम् ।

हिरण्यं नालिकेरं च पुष्पाक्षतमथो दलम् ।

दैवज्ञाय प्रदायादौ पश्चात्पृच्छेच्छुभाशुभम् ॥ ४१२ ॥

सुवर्णादि धन; वा नारियलआदि फल, वा गुलाबादि पुष्प, वा तन्दुलादि अक्षत, वा तुलसी आदि पत्र इत्यादिमेंसे अपनी सामर्थ्यके अनुसार समयपर जो वस्तु प्राप्त हो वह वस्तु गुप्त ज्योतिषाचार्यजीके भेट धरके फिर अपने कार्यका शुभाशुभ पूछे। किन्तु शुभकी इच्छा करनेवाला खाली हाथसे न पूछे॥४१२॥

विना बलिं विना होमं कुमारीपूजनं विना ।
शुभग्रहं विना देवि चक्रराजं न वीक्षयेत् ॥४१४॥

पार्वतीको श्रीशिवजी कहते हैं कि हे देवि ! दिक्पालादि देवताओंको विना बलि दिये, इष्ट देवताके मंत्रसे विना हवन किये, कुमारी कन्याकी विना पूजा किये और गोचरमें विना शुभग्रहोंके इस चक्रराजको (अर्थात् अंश, तुम्बरु तथा शतपदादि सम्पूर्ण चक्रोंका राजा जो यह सर्वतोभद्र है इसको) न देखे। क्योंकि—॥४१४॥

अधिवासनविधिः ।

इन्द्रादीन् पूजयेद्भक्त्या पूर्वाद्याशाष्टके क्रमात् ।
प्रणवाद्यैर्नमोऽन्तैश्च नाममंत्रैर्बलिं हरेत् ॥४१५॥

इन्द्रादि ८ दिक्पालोंकी उनके नामके मंत्रमे अपनी अपनी दिशामें पंचोपचारसे पूजा करके बलि देवे। यथा पूर्वे ॐ इन्द्राय नमः, आग्नेय्यां ॐ अग्नये नमः; दक्षिणे ॐ यमाय नमः, नैर्ऋत्ये ॐ राक्षसाय नमः, पश्चिमे ॐ वरुणाय नमः; वायव्ये ॐ पवनाय नमः, उत्तरे ॐ कुबेराय नमः, ईशान्ये ॐ महेश्वराय नमः ॥ ४१५ ॥

अयुतं वा सहस्रं वा शतं चैकप्रमाणतः ।
कार्यमानेन जपः स्यात्तद्दशांशं च होमयेत् ४१६॥

प्रश्न करनेवालेके कार्यके अनुमानसे ज्योतिषीको गुरुदर्शित इष्टके नामके मंत्रका १० सहस्र वा १ सहस्र वा १ सौ जप करना फिर उस जपका दशांश अग्निमें घृतादि पदार्थोंका हवन भी करना चाहिये ४१६॥

द्विरब्दादिदशाब्दान्तां कुमारीं परिपूजयेत् ।
स्वशक्त्याभोजयेत्पश्चात्क्षीराज्यगुडपायसैः ४१७

२ वर्षोंके उपरान्तकी और १० वर्षोंके भीतरकी अवस्थावाली कुमारिकाओंकी अपनी सामर्थ्यके अनुसार पूजा करे, फिर दूध, घृत तथा गुड (शर्करा) युक्त क्षीरका भोजन करावे ॥ ४१७ ॥

गोचरशुद्धिः ।

सर्वे लाभगता भव्या दिनेशस्त्रिषडभ्रगः ।
भौमार्किविक्रमारिस्थाद्विनन्दाक्षाद्रिगो गुरुः४१८।
जन्मे त्रिषष्ठद्युनभूसंस्थितः शुभदः शशी ।
द्युनपंचांत्यधर्मेषु बुधवर्ज्योऽन्यथा शुभः॥४१९॥
षट्कर्मसप्तगः शुक्रस्त्याज्योऽन्यत्रगतः शुभः ।
राहुस्त्रिषष्ठगो भव्यो ज्ञेयः केतुश्च राहुवत्॥४२०॥

जन्मराशिसे ११ वीं राशिमें सूर्यादि सर्व ग्रह; तथा ३।६।१०में सूर्य; ३।६ में मंगल; ३।६में शनि, २।९।५।७ में बृहस्पति, ३।६।७।१ में चन्द्र, ७।५। १२।९ इनको छोडके शेष १।२।३।४।६।८।१०।११ में बुध, ६।१०।७ इनको छोडके शेष १।२।३।४।५। ८।९।१२ में शुक्र, ३।६ में राहु और ३।६ में केतु गोचरमें शुभ फलदायक होते हैं। गोचरमें नाम राशिकी अपेक्षा जन्मराशिकी प्रधानता है ४१८–४२०

अविचार्यतया पृच्छेत् पृच्छकः कथकस्तथा ।
द्वाविमौ विघ्नदौ प्रोक्तावत्र देवि! न संशयः४२१॥

हे पार्वति! पूर्वोक्त विधिके विना जो कोई इस चक्रमें वेध फल देखनेका प्रश्न करे तो प्रश्न करनेवालेको

और वेधफल कहे तो कहनेवालेको इन दोनोंहीको निश्चय विघ्न होता है ॥ ४२१ ॥

चक्रप्रशंसाप्रकरणम् ।

त्रिकालेषुत्रिलोकेषु यस्माद्बुद्धिः प्रकाशते ।
तत्त्रैलोक्यप्रदीपाख्यं चक्रमत्र प्रकाश्यते॥४२२॥

तीन काल (भूत, भविष्य और वर्तमान) में तथा तीन लोक (स्वर्ग, मृत्यु और पाताल) में जिससे बुद्धि प्रकाशित होती है ऐसे त्रैलोक्य प्रदीप नामक चक्रको प्रकाशित करता हूं । क्योंकि-॥ ४२२ ॥

दीपो यथा गृहस्यान्तरुद्योतयति सर्वतः ।
तथेदं सर्वतोभद्रचक्रं ज्ञानप्रकाशकम् ॥ ४२३ ॥

जैसे घरके भीतर दीपक प्रकाश करता है वैसेही यह सर्वतोभद्रचक्र त्रिकालमें त्रैलोक्यके ज्ञानका प्रकाश करता है ॥ ४२३ ॥

एकाशीतिपदं चक्रं ज्योतिषं सारसंग्रहम् ।
येजानन्तिजनादक्षास्ते स्तोकाःसंतिभूतले ४२४॥

परमदयालु श्रीशिवजीने समुद्रको घडेमें भर देनेकी भाँति सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्रका सार इस ८१ कोठोंके अखंड चक्रमें भरा है; जिसको यथावत् गुरुमुखसे

जाननेवाले विचक्षण पुरुष इस पृथ्वीपर दुर्लभ हैं अर्थात् खोज करनेसे भी बहुत थोडे मिलते हैं। अतः मुझको अधिक परिश्रम करना पड़ा ॥ ४२४ ॥

विभ्रान्ता बहवो देशा गुरवो बहवः कृताः ।
ज्योतिषस्तत्त्वज्ञानाय जीर्णशास्त्रे श्रमः कृतः ४२५

अतः उस ज्ञानके तत्त्वको जाननेके वास्ते मैं बहुतसे देशोंमें फिरा तथा इस विद्याके जाननेवाले बहुतसे गुरु किये और ज्योतिषके प्राचीन शास्त्रोंमें भी बहुतसा श्रम किया तब गुरुकृपासे इसका अणुमात्र ज्ञान प्राप्त हुआ है ॥ ४२५ ॥

विस्तरेण मयाख्यातं यथोक्तं ब्रह्मयामले ।
न देयं यस्यकस्यापि चक्रमेतत्सुनिश्चितम्४२६॥

सर्वतोभद्रचक्रका विधान जैसा ब्रह्मयामल ग्रन्थमें कहा है, वैसा मैंने (पं० नरपति ने) विस्तारसे कहा। परंतु ये श्रेष्ठचक्र निश्चय करके ऐसे वैसे मनुष्यको (कुपात्र शिष्यको) देना योग्य नहीं। क्योंकि—॥ ४२६ ॥

कुपात्रदानतो पापं पुण्यं सत्पात्रदानतः ।
तस्मात् परीक्ष्य दातव्यं नोपहासस्तथाभवेत् ४२७

कुपात्र शिष्यको देनेसे पाप और सुपात्र शिष्यको

देनेसे पुण्य होता है। अतः भलीप्रकारसे शिष्यकी परीक्षा करके तत्त्वका दान करे। ऐसा विचार न करनेसे उलटा गुरुका उपहास(ठट्ठा) होता है ॥४२७॥

भारद्वाजकुलारविन्दतरणिर्माध्यन्दिनीयो द्विजो नानाशास्त्रविचारमग्नहृदयो व्यासावटंकांकितः । वास्तव्यो मरुमंडले सुविदिते पालीपुरे धार्मिको जात्यापोष्करणो महीधरसुतः श्रीमिष्टलालाभिधः ।

इति श्रीमारवाड़देशस्थ-जोधपुरराज्यान्तर्गत-पाली-नगरनिवासि-पुष्करणज्ञातीयभारद्वाजगोत्रीय-माध्यन्दिनीयशाखाध्यायिशुक्लयजुर्वेदि-टंकशलावटंकव्यासपदाधिकारि-श्रीमन्महीधरशर्मपुत्र-ज्योतिषादि-नानाशास्त्र-तत्त्वविचारकरणामग्नहृदय-प्राचीनज्योतिःशास्त्रश्रमि-दैवज्ञभूषण-ज्योतीरत्नाद्युपाधिविभूषित पण्डित मीठालालव्यास-संगृहीत-बृहदर्घमार्तंडनाम्नो महतो ग्रंथादुद्धृतः सर्वतोभद्रचक्रनामा ग्रन्थः (त्रैलोक्यदीपकम्) स्वकृताऽर्घ्य-भाषाविवृतिव्याख्यासहितस्य बृहदर्घमार्तण्डस्यप्रथमोऽङ्कः समाप्तः ॥ ४२८ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.